जनवरी - मार्च 2015 भाग XXV संख्या : 4 ISSN 0971 - 1856

स्वास्थ्य के लिए नारियल

भारतीय नारियल पत्रिका

माननीय केंद्रीय कृषि मंत्री श्री राधा मोहन सिंह के साथ साक्षात्कार

51 वाँ एपीसीसी सत्र/ मंत्रिस्तरीय बैठक

2-5 फरवरी 2015, होटल क्राउन प्लाज़ा, कोची, केरल, भारत

एशियन पसफिक कोकोनट कम्यूनिटी
जकार्ता, इंडोनेशिया

नारियल विकास बोर्ड
कृषि मंत्रालय, भारत सरकार

भारतीय नारियल पत्रिका

भाग XXV संख्या : 4

जनवरी-मार्च 2015 कोची-11

परामर्श मंडल :

अध्यक्ष

टी. के. जोस भाप्रसे

सदस्य

डॉ.एस.के.मल्होत्रा

ओम प्रकाश

संपादक मंडल

सदस्य

सुगत घोष

डॉ.ए.के.नंदी

डॉ.जी.आर.सिंह

डॉ.अल्का गुप्ता

मुख्य संपादक

सुगत घोष

संपादक

एस. बीना

उप संपादक

संगीता टी.एस.

संपादन सहयोगी

विन्दु राणी एन.

प्रकाशक :

नारियल विकास बोर्ड

(कृषि मंत्रालय, कृषि एवं सहकारिता विभाग, भारत सरकार)

केरा भवन, कोची - 682 011, भारत

दू. भा. : 0484-2376265, 2377266, 2377267, 2376553.

फैक्स : 91-484-2377902 ग्राम्स : KERABOARD

ई-मेइल : kochi.cdb@gov.in

वेबसाइट : www.coconutboard.gov.in

नारियल कृषि एवं उद्योग के विभिन्न पहलुओं पर आधारित लेख, शोध निबन्ध और पत्र इस पत्रिका में प्रकाशन हेतु आमंत्रित किये जाते हैं। सभी स्वीकृत सामग्रियों को मानदेय दिया जाएगा। इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में प्रकट किए गए विचार लेखकों के अपने हैं और बोर्ड उनके लिए उत्तरदायी नहीं है। शुल्क और पत्र - व्यवहार अध्यक्ष, नारियल विकास बोर्ड, केरा भवन, कोची - 682 011 के नाम पर हों।

नारियल विकास बोर्ड

भारत सरकार ने देश में नारियल खेती एवं उद्योग के समन्वित विकास के लिए स्वायत्त निकाय के रूप में नारियल विकास बोर्ड की स्थापना की। बोर्ड, जो 1981 जनवरी 12 को अस्तित्व में आया, भारत सरकार के कृषि मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण में कार्यरत है। इसका मुख्यालय केरल के कोची में है और क्षेत्रीय कार्यालय कर्नाटक के बैंगलूर, तमिलनाडु के चेन्नई एवं असम के गुवाहटी में हैं। बोर्ड के छः राज्य केन्द्र भी हैं और ये ओड़िशा के भुबनेश्वर, पश्चिम बंगाल के कोलकात्ता, बिहार के पटना, आंध्र प्रदेश के हैदराबाद, महाराष्ट्र के ठाणे एवं संघशासित क्षेत्र अंडमान व निकोबार द्वीप समूह के पोर्ट ब्लेयर में स्थित हैं। बोर्ड के प्रदर्शन सह बीज उत्पादन फार्म नेर्यमंगलम (केरल), वेगिवाड़ा (आँध्र प्रदेश), कोंडागाँव (छत्तीसगढ़), मधेपुरा (बिहार), अभयपुरी (असम), पित्तापल्ली (ओड़िशा), मांड्या (कर्नाटक), पालघर (महाराष्ट्र) तथा धली (तमिलनाडु) में हैं। केरल के आलुवा के पास वाष़क्कुलम में बोर्ड ने प्रौद्योगिकी विकास केन्द्र की स्थापना की है।

बोर्ड के मुख्य प्रकार्य

❑ नारियल उद्योग के विकास हेतु उपाय अपनाना। ❑ नारियल एवं उसके उत्पादों का विपणन सुधारने हेतु उपायों की सिफारिश करना। ❑ नारियल खेती एवं उद्योग में लगे लोगों को तकनीकी सलाह देना। ❑ नारियल खेती के अधीन क्षेत्र विस्तार के लिए वित्तीय एवं अन्य सहायता देना। ❑ नारियल एवं उसके उत्पादों के संसाधन के लिए आधुनिक प्रौद्योगिकियाँ अपनाने को प्रोत्साहित करना। ❑ नारियल एवं उसके उत्पादों को प्रोत्साहन मूलक भाव मिलने हेतु उपाय अपनाना। ❑ नारियल एवं उसके उत्पादों के आयात और निर्यात नियंत्रित करने हेतु उपायों की सिफारिश करना। ❑ नारियल एवं उसके उत्पादों के लिए श्रेणी, विनिर्देश एवं मानक निर्धारित करना। ❑ नारियल का उत्पादन बढ़ाने के लिए उपयुक्त योजनाओं को आर्थिक सहायता देना। ❑ नारियल एवं उसके उत्पादों के कृषि, प्रौद्योगिकीय, औद्योगिक या आर्थिक अनुसंधानों को सहायता देना, प्रोत्साहन देना, बढ़ावा देना एवं आर्थिक सहायता देना। ❑ केन्द्रीय सरकार तथा बड़े पैमाने में नारियल की खेती वाले राज्यों की सरकारों से विचार विमर्श करके नारियल का उत्पादन बढ़ाने, प्रजातीय गुणवत्ता और उपज सुधारने के लिए उपयुक्त योजनाओं को वित्तीय सहायता देना तथा इसी उद्देश्य के लिए नारियल कृषकों और नारियल उत्पादों के विनिर्माताओं को पुरस्कार और प्रोत्साहन राशि प्रदान करने के लिए योजनाएं बनाना और नारियल एवं नारियल उत्पादों के विपणन के लिए सुविधाएं उपलब्ध कराना। ❑ नारियल एवं उसके उत्पादों के उत्पादन, प्रसंस्करण और विपणन संबंधी आँकड़े एकत्रित करना एवं उन्हें प्रकाशित करना। ❑ नारियल एवं उसके उत्पादों से संबंधित प्रचार कार्य करना एवं पुस्तकें व पत्रिकाएं प्रकाशित करना।

बोर्ड द्वारा 'भारत में नारियल उद्योग के एकीकृत विकास' परियोजना के अधीन कार्यान्वित विकास कार्यक्रम हैं: रोपण सामग्रियों का उत्पादन व विपणन, नारियल के अधीन क्षेत्र विस्तार, उत्पादकता सुधारने के लिए एकीकृत खेती, प्रौद्योगिकी निदर्शन, बाज़ार संवर्धन और सूचना व सूचना प्रौद्योगिकी।

नारियल प्रौद्योगिकी मिशन के अधीन बोर्ड द्वारा कार्यान्वित कार्यक्रम हैं प्राणी कीटों व रोगों से ग्रस्त नारियल बागानों के प्रबंधन के लिए प्रौद्योगिकियों का विकास, निदर्शन तथा अंगीकरण, प्रसंस्करण, उत्पाद विविधीकरण, बाज़ार अनुसंधान व संवर्धन के लिए प्रौद्योगिकियों का विकास और अंगीकरण।

शुल्क

वार्षिक	40 रु.
एक प्रति	10 रु.
आजीवन (30 वर्ष)	1000 रु.

नारियल विकास बोर्ड द्वारा प्रकाशित तथा सर्वश्री के.बी.पी.एस, काक्कनाड, कोची-30 में मुद्रित

51 वाँ एपीसीसी सत्र/मंत्रिस्तरीय बैठक

(समाचार - पृष्ठ सं. 40 पर)

इस अंक में

अध्यक्ष की कलम से 2

माननीय केंद्रीय कृषि मंत्री श्री राधा मोहन सिंह के साथ साक्षात्कार 4

51 वें एपीसीसी सत्र / मंत्रिस्तरीय बैठक में माननीय केन्द्रीय कृषि राज्य मंत्री श्री मोहनभाई कल्याणजीभाई कुंदरिया के उद्‍घाटन भाषण के मुख्यांश 10

51 वें एपीसीसी सत्र / मंत्रिस्तरीय बैठक में एपीसीसी अध्यक्ष श्री संजीव चोपड़ा भाप्रसे, संयुक्त निदेशक (एमआईडीएच) के स्वागत भाषण के मुख्यांश 11

नारियल क्षेत्र के उज्वल भविष्य के लिए लाभकारी मिश्रित खेती 12
आर ज्ञानदेवन

अहमदनगर जिले में नारियल की खेती से रचा नया इतिहास 16
शरद एस.आगलावे

अशांत क्षेत्रों में नारियल की खेती से उत्पन्न रोज़गार के अवसर 18
आर.एस.सेंगर और समीक्षा अवस्थी

नारियल तेल के स्वास्थ्य लाभ 22
के.बी.हेब्बार और एम.अरिवलगन

गर्मियों में पत्ताभक्षी इल्ली से सावधान रहें 28
आर ज्ञानदेवन

प्रश्नोत्तरी 30

सहजीवियों से 32

नारियल कृषकों को क्या करना चाहिए? 34

समाचार 40

बाज़ार समीक्षा 54

बाज़ार भाव 59

51वें एपीसीसी सत्र/मंत्रिस्तरीय बैठक से भारतीय नारियल क्षेत्र के लिए जानकारियों का आदान-प्रदान

प्रिय नारियल किसानों,

भारत को 2 से 5 फरवरी 2015 तक एपीसीसी के 51वें सत्र/मंत्रिस्तरीय बैठक की मेज़बानी करने का मौका प्राप्त हुआ था। भारत सरकार ने कोची शहर में बैठक आयोजित करने का फैसला किया था। सदस्य देशों और एपीसीसी के सचिवालय ने बैठक की तारीफ करते हुए ज़ाहिर किया कि यह एपीसीसी बैठक, हाल में संपन्न एक सबसे बेहतरीन बैठक थी। एपीसीसी सचिवालय ने कहा कि सर्वाधिक भागीदारी, नूतन कार्यसूची मदों, गुणवत्तापूर्ण संवादों और समुचित क्षेत्र दौरों से भरी बैठक अत्यधिक सफल रही। बैठक में श्रीलंका को छोड़कर, अन्य सभी 17 सदस्य देशों ने भाग लिया। निरीक्षक देशों के रूप में बंगलादेश और रिपब्लिक ऑफ ओमान ने भी इस सत्र में भाग लिया और उन्होंने एपीसीसी के सदस्य बनने के लिए अपनी रज़ामंदी व्यक्त की। एपीसीसी का लक्ष्य है नारियल उद्योग की सभी गतिविधियों को बढ़ावा देना, इसका समन्वयन करना और इसमें सामंजस्य लाना ताकि सदस्य देशों के किसानों और नारियल आधारित उद्यमियों के लिए नए नए अवसर प्रदान किए जा सके। एपीसीसी सदस्य देशों के बीच प्रभावी संवादों और प्रौद्योगिकी अंतरण की पहल कर रहा है। युनेस्को की पहल से वर्ष 1968 में इस संगठन की स्थापना हुई थी और भारत इस संगठन के संस्थापक सदस्यों में से एक है। तब से लेकर हमारा देश एपीसीसी के ज़रिए नारियल विकास कार्यक्रमों से संबंधित अपनी नूतन विचारधाराओं का आदान-प्रदान कर रहा है। हाल में भारत, एपीसीसी की गतिविधियों में मुख्य भूमिका निभा रहा है। वर्ष 2014 में एपीसीसी की अध्यक्षता से भारत को सम्मानित किया गया और श्री संजीव चोपड़ा भाप्रसे, संयुक्त सचिव, एमआईडीएच, कृषि मंत्रालय, भारत सरकार एपीसीसी के अध्यक्ष का पद संभाल रहे थे। इस बैठक के दौरान इंडोनेशिया ने अगले एक साल के लिए एपीसीसी की अध्यक्षता ग्रहण की है।

सभी सहभागी सदस्य देशों ने नारियल खेती के अधीन क्षेत्र, उत्पादन, उत्पादकता, प्रसंस्करण और नारियल के देशी एवं अंतर्राष्ट्रीय व्यापार संबंधी ब्यौरे सहित अपने देश की मौजूदा स्थिति पर आलेख प्रस्तुत किए। भले ही भारत नारियल के अधीन क्षेत्र में तीसरे स्थान पर है, किंतु वर्ष 2011 से नारियल के उत्पादन और उत्पादकता में हम विश्व की अगुवाई कर रहे हैं। हमारे कुछ राज्यों ने राष्ट्रीय औसत से ढाई से तीन गुना अधिक उत्पादकता हासिल की है। यह इस बात का सूचक है कि राष्ट्रीय स्तर पर हमारी उत्पादकता में और सुधार लाने की संभावनाएं हैं। सदस्य देशों की सबसे बड़ी चिंता का विषय यह रहा कि इस फसल की सही कीमत वसूल करने के लिए बेहतर उत्पादकता और बेहतर प्रौद्योगिकियाँ कैसे प्राप्त की जाए। नारियल की कम उत्पादकता वाले देश भारत की ओर उन प्रौद्योगिकियों और रणनीतियों के लिए ताक रहे थे जिनके ज़रिए हमने उच्चतम उत्पादकता हासिल की है। बैठक में बेहतर उत्पादकता हासिल करने में आ रही अड़चनों और रुकावटों के बारे में भी विस्तृत चर्चा हुई।

बैठक में सभी सदस्य देशों ने एकमत से यह स्वीकार किया कि बढ़िया, उच्च पैदावार देने वाले और शीघ्र फलदायी संकर बीजपौधों का अभाव बेहतर उत्पादकता हासिल करने में बाधा डालने वाले प्रमुख घटकों में एक है। भारत में उच्च पैदावार देने वाली बढ़िया किस्म के बीजपौधों की प्रति वर्षीय मांग तकरीबन एक करोड़ है, फिर भी हम साल में मुश्किल से 35 लाख बीजपौधों का ही उत्पादन कर पा रहे हैं। इसप्रकार मौजूदा उत्पादन के हिसाब से मांग और आपूर्ति के बीच का फासला दुगुने से भी अधिक है। मात्र प्रचलित कार्यक्रमों और गतिविधियों से यह फासला मिटाना संभव नहीं है। उत्पादकता में वृद्धि लाने के लिए हमें बड़े पैमाने पर पुनर्रोपण कार्यक्रम चलाना होगा जिसके लिए बड़ी संख्या में नारियल की बढ़िया रोपण सामग्रियों की ज़रूरत पड़ती है।

खेती के क्षेत्र में दिल खोल कर स्वीकारा गया शीघ्र प्रवर्धन तकनीक नारियल के क्षेत्र में भी बहुत जल्द विकसित करने की ज़रूरत है। बढ़िया रोपण सामग्रियों के अभाव की समस्या सुलझाने के लिए यह ज़रूरी है कि ऊतक संवर्धन सहित शीघ्र प्रवर्धन तकनीकों से मातृवृक्षों की समान गुणवत्ता वाले लाखों बीजपौध उत्पादित किए जाएं। खजूर के पेड़, तेल ताड़ और सुपारी के पेड़ के लिए यह विधि वाणिज्यिक तौर पर विकसित की गई है। एपीसीसी सत्र में नारियल के लिए ऊतक संवर्धन प्रौद्योगिकी का प्रयोग करने की संभावनाओं के बारे में चर्चा हुई, जिसमें अधिकांश सदस्य देशों के प्रतिनिधियों ने सूचित किया कि उनके देश में यह प्रौद्योगिकी उपलब्ध नहीं है। यहाँ तक कि फिलिप्पाइन्स, इंडोनेशिया और श्रीलंका जैसे प्रमुख नारियल उत्पादक देशों ने भी इस क्षेत्र में बहुत कम अनुसंधान चलाए हैं और उन्हें भी ज्यादा सफलता हासिल नहीं हुई है। प्रौद्योगिकी क्षेत्र का नेतृत्व करने के लिए सारे देश भारत की ओर ताक रहे हैं। एपीसीसी सदस्य देशों के बीच सबसे अधिक कृषि वैज्ञानिक हमारे पास हैं। हमारे देश में उत्पादन और उत्पादकता में उच्च गति लाने के लिए ऊतक संवर्धन प्रौद्योगिकी के ज़रिए बड़े पैमाने पर नारियल बीजपौधों के उत्पादन हेतु प्रौद्योगिकियाँ विकसित करने का अहम समय आ गया है। यह, एपीसीसी बैठक का मुख्य कार्यसूची मद बन गया और इस क्षेत्र में आगे बढ़ने हेतु एकजुट होकर परिश्रम करने के लिए सभी सदस्य देश एकमत से सहमत हुए। भारत के इस आशय को सभी 19 सहभागी देशों ने प्रसन्नता से स्वीकार किया और उन्होंने भारत से इस उद्यम में अगुवाई करने का अनुरोध किया।

भारत ने एपीसीसी सत्र में चर्चा करने के लिए चार कार्यसूची मदें रखीं। इसमें पहली थी भारत में, जहाँ नारियल का सबसे अधिक उत्पादन हो रहा है, एपीसीसी की मान्यता और अनुमोदन प्राप्त एक अंतर्राष्ट्रीय नारियल व्यापार केन्द्र स्थापित करना। यह केन्द्र कोची में स्थापित करने के लिए सरकार की तरफ से सभी बुनियादी सुविधाएं प्रदान की जाएंगी। फिलहाल, फिलिप्पाइन्स के अलावा दूसरा अंतर्राष्ट्रीय बाज़ार केन्द्र रोटरडाम, यूरोप में है। यह बाज़ार सिर्फ ग्राहकों का है जहाँ खोपड़ा, नारियल तेल और खोपड़ा खली

का भाव विश्वभर के ग्राहकों द्वारा तय किया जाता है। इतने दूर स्थित इस ग्राहक बाज़ार में अपने उत्पादों का भाव निर्धारित करने का हक उत्पादक देशों को बिलकुल ही नहीं मिलता है। इसलिए एपीसीसी की पहल से भारत का पत्तन नगर कोची में, जो सूचना प्रौद्योगिकी का अड्डा भी है, एक अंतर्राष्ट्रीय बाज़ार केन्द्र की स्थापना करना सर्वथा उचित होगा। दूसरा मुद्दा था एपीसीसी सदस्य देशों के बीच नारियल का व्यापार सुगम बनाना। नारियल उत्पादन और उत्पादकता में विश्व का अगुआ देश होने के नाते यह भारत के लिए सोने पे सुहागा होगा।

भारत द्वारा आगे रखा गया तीसरा मुद्दा था इंटरनेशनल कोकोनट कम्यूनिटी के रूप में एशियन और पसफिक कोकोनट कम्यूनिटी का कायापलट। इससे लैटिन अमरीकी एवं अफ्रीकी देशों को एशियन और पसफिक कोकोनट कम्यूनिटी के सदस्य बनने का मौका प्राप्त होगा। वस्तुतः इस फोरम में लैटिन अमरीकी, करीबियाई और अफ्रीकी देशों से और अधिक सदस्य जुड़ने की ज़रूरत है। एशिया से बंगलादेश, म्यानमर, मालदीव, और ओमान ने एपीसीसी में शामिल होने के लिए पहले से ही अपनी रज़ामंदी व्यक्त की है। इसप्रकार एपीसीसी से जुड़ा क्षेत्रीय प्रतिबोध की भावना खत्म की जा सकती है और यह सही मायने में अंतर्राष्ट्रीय फोरम में बदलाया जा सकता है।

चौथा और सबसे अहम मुद्दा था नारियल के लिए एक इंटरनेशनल सेंटर ऑफ एक्सलेंस स्थापित करना जो नारियल क्षेत्र की समावेशी वृद्धि और सुस्थिर विकास के लिए प्रभावी नेटवर्क के रूप में कार्य करेगा। भारत सरकार ने इस केन्द्र के अवसंरचनात्मक विकास हेतु आने वाली प्रारंभिक खर्च का अधिकांश हिस्सा वहन करने में सहमति व्यक्त की है। हम एपीसीसी सचिवालय और अन्य सदस्य देशों के सहयोग के साथ आगे बढ़ सकते हैं। भारत हरेक सदस्य देश में सेंटर ऑफ एक्सलेंस का अंदाज़ा लगा ले रहा है जिनका इंटरनेशनल सेंटर ऑफ एक्सलेंस के साथ समन्वयन होगा। यद्यपि भारत द्वारा रखी गई कार्यसूची मदों पर मौके पर निर्णय लेना मुम्किन नहीं है, तो भी एपीसीसी के भावी विकास के लिए इसे मार्गदर्शी सिद्धांत के रूप में अपनाया जा सकता है। सदस्य देशों के प्रतिनिधियों ने सैद्धांतिक तौर पर इसके लिए सहमति व्यक्त की और सूचित किया कि इन मुद्दों पर निर्णय लेने के लिए वे इन्हें संबंधित सरकारों के सम्मुख प्रस्तुत करेंगे। एपीसीसी का तकनीकी कार्यकारी ग्रूप भी अनुवर्ती कार्रवाई करेगा और इन प्रस्तावों पर निर्णय लेने संबंधी कार्य की प्रगति की समीक्षा करेगा।

कोची में एपीसीसी का 51वाँ सत्र/मंत्रिस्तरीय बैठक सफलतापूर्वक आयोजित करने के लिए एपीसीसी ने भारत सरकार की सराहना करते हुए अपना आभार व्यक्त किया। सहभागी देशों ने भारत में कृषक समूहों को मज़बूत बनाने के लिए तीन स्तरीय कृषक उत्पादक संगठनों के ज़रिए नाविबो द्वारा जो पहल की जा रही है उसकी सराहना की और अन्य सदस्य देशों में भी अपनाए जाने लायक सफल नमूने के रूप में इसे स्वीकार किया। आलप्पुझ़ा के कराप्पुरम नारियल उत्पादक कंपनी लिमिटेड में सहभागियों के लिए एक क्षेत्र दौरे की व्यवस्था की गई थी जिससे उन्हें त्रिस्तरीय कृषक उत्पादक संगठनों के बारे में खासतौर पर उत्पादक कंपनियों के बारे में आँखों देखी जानकारी हासिल करने का मौका प्राप्त हुआ। फ्रेंड्स ऑफ कोकोनट ट्री के प्रशिक्षण केन्द्र का भी दौरा कराया गया और जोशीले सहभागियों में से दस प्रतिनिधियों ने अपने देश ले जाने के लिए नारियल पेड़ पर चढ़ने की मशीनें खरीदीं। नीरा उत्पादन से भी आगंतुक काफी आकर्षित हुए। भले ही ये लोग नीरा और नीरा से मूल्यवर्धित उत्पादों का उत्पादन कर रहे हैं फिर भी इनमें से किसी ने भी स्वास्थ्यदायक पेय के रूप में नीरा की विपणन संभावनाओं के बारे में गौर से सोचा नहीं है। फिलिप्पाइन्स और इंडोनेशिया अपने अंतर्राष्ट्रीय और वैश्विक बाज़ारों में नीरा के मूल्यवर्धित उत्पाद, खासतौर पर नारियल शक्कर और गुड़ का विपणन कर रहे हैं। थाइलैंड और श्रीलंका में लघु पेय के रूप में नीरा की खपत हो रही है। किंतु ये देश लघु पेय के रूप में नीरा का उत्पादन बहुत कम मात्रा में ही कर रहे हैं। इस परिप्रेक्ष्य में, सहभागी प्रतिनिधियों के सामने नारियल विकास बोर्ड ने ईश्वर के देश से ईश्वर का अपना स्वास्थ्यदायक पेय के रूप में विविध जायकों में नीरा को पेश किया। सभी प्रतिनिधियों ने नीरा का स्वाद लिया और सहमत हुए कि भविष्य के स्वास्थ्यदायक पेय के रूप में नीरा की असीम गुंजाइश होती हैं।

एपीसीसी सत्र से किसानों को क्या फायदे मिलेंगे? इससे हमें नए नए आशय प्राप्त हुए और नारियल उत्पादक कंपनियों को विदेशी प्रतिनिधियों के साथ आपस में विचार-विमर्श करने का मौका मिला। हमें उम्मीद है कि यह हमारे कृषक समूहों के लिए संयुक्त उद्यम का रास्ता खोलेगा और मूल्यवर्धित नारियल उत्पादों के निर्यात के लिए अवसर प्रदान करेगा।

एपीसीसी की बैठक से हमारे कृषक समूहों के लिए यह संदेश मिला कि वित्तीय संस्थानों के समर्थन और तकनीकी एवं प्रबंधकीय पेशेवरों के मार्गदर्शन से कृषक उत्पादक संगठनों को निचले स्तर पर ही अपने आप को मज़बूत करते हुए आगे बढ़ना चाहिए। राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आगे बढ़कर अवसरों को हड़पने के लिए हमें एकजुट होकर कार्य करना चाहिए। हमें नारियल उत्पादक समितियों के ज़रिए किसानों की नेतृत्वपटुता विकसित करने की ज़रूरत है। हमारे देश में उपलब्ध तकनीकी और प्रबंधकीय कुशलताओं के बलबूते कृषक उत्पादक संगठनों को अपनी गतिविधियाँ और व्यापक बनानी होंगी। नेतृत्वपटुता से तात्पर्य है कार्य की पहचान और सही कार्य करना; जबकि प्रबंधन से तात्पर्य है प्रभावी और सटीक तरीके से सही समय पर कार्य करना। इसप्रकार हमें किसानों की नेतृत्वपटुता और तकनीकी एवं प्रबंधकीय विशेषज्ञों के पेशेवर समर्थन को प्रभावी तरीके से जोड़ते हुए कृषक समुदाय की प्रगति में त्वरित गति लानी चाहिए ताकि नारियल किसानों के सुनहरे भविष्य के लिए एक नई कहानी रच सकें। मुझे आशा है कि 51वाँ एपीसीसी सत्र/मंत्रिस्तरीय बैठक हमारे नारियल क्षेत्र को नई बुलंदियाँ छूने के लिए प्रोत्साहित और प्रेरित करेंगे और इसके लाभ सभी लाभभोगियों को प्राप्त होंगे।

शुभकामनाओं सहित,

टी के जोस

टी.के.जोस
अध्यक्ष

"नारियल पेड़ के अनखुले पुष्पगुच्छ से उपलब्ध पौष्टिक और स्वास्थ्य रस नीरा नारियल किसान के जीवन में खुशियाली भर सकती है।"

माननीय केंद्रीय कृषि मंत्री श्री राधा मोहन सिंह के साथ साक्षात्कार

प्र. हमारे देश में नारियल के मूल्यवर्धन करने के लिए पर्याप्त मात्रा में नारियल प्राप्त नहीं होता है और डाब भी अपेक्षित मात्रा में उपलब्ध नहीं होते हैं। नारियल के उत्पादन में बढ़ोत्तरी लाना समय की माँग है। इसके लिए केन्द्रीय सरकार की ओर से क्या कदम उठाया जा सकता है?

हमारा देश भारत नारियल उत्पादन में विश्व में प्रथम स्थान पर है। उत्पादकता में भारत पहले ही सबसे आगे है। नारियल की खेती के क्षेत्र में भी काफी वृद्धि हुई है। आज भारत में नारियल खेती का क्षेत्र 21.36 लाख हेक्टर तक बढ़ गया है। नारियल का उत्पादन 2439.75 करोड़ है और उत्पादकता प्रति हेक्टर 11419 नारियल है। देश में नारियल की खेती और उद्योग के समन्वित विकास के लिए नारियल विकास बोर्ड कार्यरत है। नारियल खेती के क्षेत्र का विस्तार करने की योजना बोर्ड देश भर कार्यान्वित कर रहे हैं। इसके फलस्वरूप केरल, तमिलनाडु, कर्नाटक,आंध्रप्रदेश, तेलंगाना, महाराष्ट्र, गोवा, ओड़िशा, गुजरात, पुतुच्चेरी, अंडमान व निकोबार, लक्षद्वीप, पश्चिम बंगाल जैसे परंपरागत रूप से नारियल की खेती की जानेवाले प्रदेशों तथा छत्तीसगढ़, बिहार, असम, अरुणाचलप्रदेश, त्रिपुरा, नागालैंड, मिज़ोराम और मेघालय में भी नारियल की खेती काफी फैल गई है। नारियल के उत्पादन और उत्पादकता में भी यह वृद्धि दृश्यमान है।

फिर भी, हमारे देश में नारियल का जो उत्पादन होता है, उसका अधिकतर हिस्सा खाद्य प्रयोजनों के लिए इस्तेमाल किया जाता है। बचे हुए नारियल का सामान्य रूप से खोपड़ा और नारियल तेल बनाने के लिए उपयोग होता है। बहुत कम नारियल ही मूल्यवर्धित उत्पाद जैसे वेर्जिन नारियल तेल, डेसिक्केटेड (शोषित) नारियल, नारियल दूध, नारियल चिप्स, नारियल दूध पाउडर, संसाधित डाब पानी आदि बनाने के लिए उपयोग में लाए जाते हैं। किंतु नारियल किसानों की आय बढ़ाने के लिए मूल्यवर्धन संबंधी क्रियाकलापों में गति लाना अत्यावश्यक है। इसके लिए कच्ची सामग्री के रूप में बहुत अधिक मात्रा में नारियल की आवश्यकता होती है। इसलिए नारियल की खेती का क्षेत्र बढ़ाने पर केन्द्रीय सरकार ज्यादा ज़ोर देती है। नारियल विकास बोर्ड नारियल की खेती के क्षेत्र बढ़ाने की योजना के अंतर्गत किसानों को प्रति हेक्टर 6500 रु. की दर पर सहायिकी दो वार्षिक किस्तों में देते हैं। 1980-81 के दौरान बोर्ड के गठन के समय 10.83 लाख हेक्टर में नारियल की खेती होती थी और उत्पादन 594 करोड़ नारियल था। पिछले वर्ष के दौरान 14 राज्यों एवं एक संघ शासित क्षेत्र में कुल मिलाकर 2558 हेक्टर क्षेत्र नए रोपण के अधीन लाया गया। इस प्रकार नए रोपण करने

के लिए बढ़िया बीजपौधों का उपयोग करना अपेक्षित है। क्योंकि अधिक पैदावार देनेवाली बढ़िया किस्मों के रोपण से नारियल के उत्पादन में काफी वृद्धि हो सकती है।

डाब की उपलब्धता बढ़ाने के लिए डाब के लिए उपयुक्त किस्मों की खेती करनी चाहिए। कुल नारियल पेड़ों के कम से कम 25 प्रतिशत डाब केलिए उपयुक्त किस्मों के पेड़ लगाने चाहिए। नारियल की बौनी और संकर किस्में डाब केलिए अत्यंत उपयुक्त हैं। ये तीन साल के अंदर फलने लगती हैं और छोटे कद के होने के कारण फलों की तुड़ाई भी आसानी से होती है।

इसके अतिरिक्त, नारियल के उत्पादन और उत्पादकता बढ़ाने के लिए एकीकृत खेती का भी कार्यान्वयन हो रहा है। इसके तहत डेमनस्ट्रेशन प्लॉट में वैज्ञानिक खेती प्रणालियाँ अपनाने हेतु प्रति हेक्टर 35000 रु. की वित्तीय सहायता दो वार्षिक किस्तों में दी जाती है। खाद, कीटनाशियाँ, अंतराखेती करने के लिए आवश्यक बीज आदि की सहायता दी जाती है। नारियल बाग में केंचुवा खाद जैसे जैविक खाद बनाने के लिए अधिकतम 60000 रु. की सहायता भी दी जाती है। 15 राज्यों और 3 संघ शासित क्षेत्रों में वहाँ की सरकारों के द्वारा और फिर बोर्ड के कार्यालय कार्यरत केरल, कर्नाटक, तमिलनाडु, आंध्रप्रदेश, तेलंगाना, ओड़िशा, महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल और असम राज्यों में बोर्ड सीधे और कृषक समूहों के ज़रिए योजना कार्यान्वित करते हैं।

प्र. किसानों को आवश्यकता के अनुसार बढ़िया बीजपौधे उपलब्ध नहीं होते हैं। किसानों के बीच जल्दी फूलकर फल देने वाली तथा कम ऊँचाईवाली किस्मों की बड़ी माँग होती है। इस तरह के बीजपौधे किसानों को उपलब्ध कराने के लिए केन्द्रीय सरकार क्या कर सकती है?

नारियल की खेती में बढ़िया बीजपौधों का खास महत्व होता है। नारियल बहुवर्षी फसल होने के कारण पौधा लगाने के पाँच से छः वर्षों के बाद ही उसकी उत्पादकता का पता लग सकता है। इसलिए बीजपौधों का चयन करने में सावधानी बरतनी चाहिए।

केन्द्रीय सरकार बीजपौधों के उत्पादन और वितरण के लिए नारियल विकास बोर्ड के द्वारा योजनाओं का कार्यान्वयन कर रही है। इस उद्देश्य से देश के नारियल उत्पादक क्षेत्रों में नौ प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म कार्यरत हैं। ये फार्म असम के अभयपुरी, आंध्रप्रदेश के वेगिवाडा, ओड़िशा के पित्तापल्ली, कर्नाटक के मण्ड्या, केरल के नेर्यमंगलम, छत्तीसगढ़ के कोंडागांव, तमिलनाडु के धली, बिहार के मधेपुरा और महाराष्ट्र के पालघर में स्थित हैं। इन फार्मों से जुड़ी नर्सरियों में ऊँची, बौनी और संकर किस्मों के बढ़िया बीजपौधों का उत्पादन हो रहा है। इसके अलावा, बोर्ड और केरल, कर्नाटक, तमिलनाडु एवं ओड़िशा की राज्य सरकार 50:50 आधार पर खर्च उठाकर संकर और दूसरी स्थानीय ऊँची किस्मों के बीजपौधे उगाकर किसानों के बीच वितरित करते हैं। केरल, तमिलनाडु, ओड़िशा, गुजरात, असम, तेलंगाना और आंध्रप्रदेश में प्रादेशिक नारियल नर्सरियाँ लगाने के लिए भी राज्य सरकारों को 50:50 आधार पर सहायता दी जाती है। इसके अलावा, नर्सरियाँ शुरू करने के लिए व्यक्तिगत रूप से किसानों और संगठनों को 25000 पौधों के लिए दो लाख रुपए की सहायिकी दो वार्षिक किस्तों पर दी जाती है। बड़े बीज बाग 4 हे. या उससे ज्यादा ज़मीन पर स्थापित करने के लिए 6 लाख रुपए की सहायिकी भी तीन वर्षों की अवधि में दी जाती है।

प्र. हमारे देश में नारियल की खेती बहुत पुराने समय से होती आ रही है। परंपरागत प्रदेशों के अतिरिक्त उत्तर पूर्वी राज्यों, छत्तीसगढ़ और बिहार में भी नारियल की खेती की जाती है। इन्हीं प्रदेशों के अधिकतर पेड़ पुराने और अनुत्पादक हैं। इसलिए किसानों की आमदनी में कमी आ जाती है। किसानों को इस दुविधा से बचाने के लिए केंद्रीय सरकार की कौन सी योजना सहायक है?

गंभीर रूप से रोग प्रकोपित, पुराने और अनुत्पादक पेड़ नारियल खेती के लिए बहुत बड़ी समस्या बन गई है। सामान्य तौर पर एक नारियल पेड़ की आयु 60 से 80 वर्ष होने के नाते कृषक पेड़ों को काटकर निकालने में हिचकते हैं। ऐसे अनुत्पादक पेड़ों को काटकर निकालने, बाकी पेड़ों की देखभाल वैज्ञानिक तरीके से करने तथा बाग में नारियल पेड़ों को काटने के बाद पेड़ों की संख्या उचित मात्रा तक बनाये रखने के लिए बढ़िया पौधों का वितरण करने हेतु केंद्रीय सरकार नारियल बागों के पुनरुज्जीवन और पुनर्रोपण योजना केरल में अमल में ला रही है।

इसके तहत गंभीर रूप से रोगग्रस्त और अनुत्पादक पेड़ों को काटकर निकालने के लिए प्रति हेक्टर 32 पेड़ों को 32000 रु. की सहायिकी दी जाती है। शेष पेड़ों के पुनरुज्जीवन के लिए दो वार्षिक किस्तों में प्रति हेक्टर 17500 रु. और पुनर्रोपण के लिए प्रति पौध 40 रु. की सहायता भी दी जाती है। यह योजना केरल के तीन जिलों तिरुवनंतपुरम, कोल्लम और तृश्शूर तथा अंडमान व निकोबार द्वीपसमूह में प्रायोगिक तौर पर कार्यान्वित की गयी। अब केरल के ग्यारह जिलों में परियोजना का कार्यान्वयन हो रहा है। इस योजना का सारे नारियल उत्पादक राज्यों में कार्यान्वयन करने का प्रस्ताव है।

प्र. नारियल पेड़ की उत्पादकता ही नहीं पेड़ को ही पूरी तरह नष्ट कर देनेवाले कई कीटों और रोगों के आक्रमण का आदी होता है नारियल पेड़। इनके प्रकोप से नारियल की खेती को बचाने के लिए क्या क्या उपाय अपनाए गए हैं?

केंद्रीय सरकार नारियल पेड़ पर आक्रमण करने वाले कीटों एवं रोगों का नियंत्रण करके उत्पादकता में सुधार लाने के लिए नारियल प्रौद्योगिकी मिशन योजना का कार्यान्वयन कर रही है। इसके तहत कीटों एवं रोगों के नियंत्रण हेतु प्रौद्योगिकियाँ विकसित करने के लिए केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कृषि विश्वविद्यालयों, किसी भी राज्य के कृषि/बागवानी विभाग और सहकारी क्षेत्र के किसी भी संस्था को अधिकतम 50 लाख रुपए तक पूरा व्यय और गैर सरकारी संगठनों एवं दूसरे संगठनों को अधिकतम 25 लाख रुपए तक परियोजना व्यय का 50 प्रतिशत दिया जाता है। इसके अलावा कीटों एवं रोगों का नियंत्रण करने में सिद्ध प्रौद्योगिकियों का बागों में प्रदर्शन करके सफलता परखने के लिए केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, प्रत्येक राज्य के कृषि विश्वविद्यालय, कृषि/बागवानी विभाग, दूसरे संबंधित सार्वजनिक क्षेत्र की इकाइयों तथा पंजीकृत सरकार समितियों को अधिकतम 25 लाख रुपए तक पूरा खर्च और व्यक्तियों, कृषक समूहों एवं गैर सरकारी संगठनों को अधिकतम 10 लाख रुपए तक कुल व्यय का 50 प्रतिशत दिया जाता है। विकसित प्रौद्योगिकी अपनाने के लिए कुल व्यय का 25 प्रतिशत तक सहायिकी भी दी जाती है।

इसके अलावा केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान और विविध कृषि विश्वविद्यालयों में कार्यरत अनुसंधान संस्थाएँ नारियल पर आक्रमण करनेवाले कीटों एवं रोगों के बारे में अनुसंधान कार्यों में लगे हुए हैं।

नारियल विकास बोर्ड अपनी पत्रिकाओं के ज़रिए रोगों एवं कीटों के नियंत्रण के लिए समय समय पर विकसित प्रौद्योगिकी संबंधी जानकारियाँ किसानों तक पहुँचाते हैं। विभिन्न अनुसंधान संस्थाएँ भी अपने विस्तार क्रियाकलापों के ज़रिए अद्यतन जानकारियों से किसानों को अवगत कराने के प्रयास में लगी हुई हैं।

प्र. नारियल के भाव में हमेशा भारी घट-बढ़ होती है। इससे बचने का उपाय नारियल से खोपड़ा और नारियल तेल से बढ़कर नए मूल्य वर्धित उत्पाद बनाना ही है। नए उद्यम लगाने के लिए इच्छुक किसानों और उद्यमियों को केंद्रीय सरकार की कौन-कौन सी योजनाएं सहायक हो सकती हैं?

केंद्रीय सरकार नारियल प्रौद्योगिकी मिशन योजना के तहत विविध तरह के नारियल उत्पाद बनाने एवं उनके प्रसंस्करण के लिए प्रौद्योगिकियाँ विकसित करने और उन्हें प्रयोग में लाकर उद्यम शुरू करने के लिए सहायता देती है। प्रौद्योगिकियाँ विकसित करने के लिए सरकारी संस्थाओं एवं सहकारी समितियों को अधिकतम 75 लाख रुपए तक पूरा व्यय और गैर सरकारी संगठनों, उद्यमियों और दूसरे अनुसंधान संस्थानों को अधिकतम 35 लाख रुपए तक कुल व्यय का 50 प्रतिशत दिया जाता है।

विकसित प्रौद्योगिकियों की सफलता परखने हेतु व्यावहारिक तौर पर उनके प्रदर्शन के लिए सरकारी संगठनों और सहकारी समितियों को पूरा व्यय और गैर सरकारी संगठनों, उद्यमियों और दूसरे संस्थानों को कुल व्यय का 50 प्रतिशत दिया जाता है। प्रौद्योगिकियाँ अपनाने के लिए ऋण से जुड़ी पूँजी सहायिकी, गैर सरकारी संगठनों, उद्यमियों और दूसरे संस्थानों को कुल व्यय का 25 प्रतिशत अधिकतम 50 लाख रुपए दी जाती है।

इसके अलावा, विकसित उत्पाद के लिए उपयुक्त बाज़ार और उपभोक्ताओं को पहचानने के लिए बाज़ार अनुसंधान चलाने हेतु सरकारी एजेंसियों और सहकारी समितियों को अधिकतम 25 लाख रुपए का कुल व्यय और उद्यमियों, गैर सरकारी संगठनों और दूसरे संस्थानों को कुल व्यय का 50 प्रतिशत अधिकतम 12.50 लाख रुपए दिया जाता है। उत्पादों का बाज़ार बढ़ाने के लिए सरकारी एजेंसियों और सहकारी समितियों को अधिकतम

25 लाख रुपए का कुल व्यय एवं गैर सरकारी संगठनों और निजी संस्थाओं के लिए कुल व्यय का 50 प्रतिशत अधिकतम 10 लाख रुपए दिया जाता है।

प्र. नारियल बहुवर्षी फसल होने के कारण नारियल पेड़ पर आनेवाली किसी भी हानि का किसानों पर गंभीर असर पड़ता है। किसानों को होनेवाले आर्थिक नुकसान से उनकी रक्षा करने केलिए क्या केंद्रीय सरकार की कोई योजना कार्यान्वित है?

नारियल की खेती में आनेवाले आर्थिक नुकसान से किसानों की रक्षा करने केलिए कार्यान्वित केंद्रीय सरकार की योजना है नारियल पेड़ बीमा योजना। यह प्राकृतिक तथा अन्य आपदाओं और कीट-रोगों के प्रकोप से नारियल पेड़ों को बीमा सुरक्षा प्रदान करके कृषकों का जोखिम कम करता है। यह योजना नारियल की खेती की जानेवाले सारे राज्यों और केंद्र शासित क्षेत्रों में कार्यान्वित की जाती है।

इसके तहत 4-60 वर्ष की आयु की बौनी एवं संकर किस्मों और 7-60 वर्ष की आयु की लंबी किस्मों के नारियल पेड़ों की बीमा की जा सकती है। 4-15 वर्ष के पेड़ों की बीमा राशि 900 रु. एवं प्रीमियम प्रति वर्ष 9 रुपए और 16-60 वर्ष के पेड़ों की बीमा राशि 1750 रु. और प्रीमियम 14 रुपए है। प्रीमियम के 50 प्रतिशत का भुगतान बोर्ड और शेष प्रत्येक 25 प्रतिशत का राज्य सरकार और किसान करेंगे। बीमा करने केलिए इच्छुक किसान भारतीय कृषि बीमा कंपनी या निकटतम कृषि या बागवानी विभाग से संपर्क कर सकते हैं।

प्र. नारियल खेती में पेड़ पर चढ़नेवाले श्रमिकों की कमी बहुत बड़ी समस्या खड़ी करती है। नारियल पेड़ की विशेष प्रकृति के कारण फसल काटने में ही नहीं रोग-कीटों का नियंत्रण करने केलिए पेड़ के शिखर की सफाई करने और कीटनाशियों का छिड़काव करने में भी पेड़ पर चढ़नेवाले लोगों की सेवाएँ अपेक्षित होती हैं। इस समस्या का हल निकालने के लिए क्या क्या उपाय अपनाए गए हैं?

देश में उन सभी इलाकों में जहाँ नारियल की खेती होती है, वहाँ की आम समस्या है पेड़ पर चढ़नेवाले श्रमिकों की अपर्याप्तता। पेड़ पर चढ़नेवालों की कमी के कारण समय पर फसल काटना असंभव हो जाता है और शिखर की सफाई न होने के कारण पेड़ पर जल्दी ही रोग-कीटों का प्रकोप हो जाता है। इस समस्या का हल निकालने के लिए नारियल विकास बोर्ड ने एक नई योजना का प्रारंभ किया है। फ्रेंड्स ऑफ कोकनट ट्री नामक इस योजना में बेरोज़गार युवा-युवतियों को मशीन के ज़रिए नारियल पेड़ पर चढ़ने, रोगों एवं कीटों का नियंत्रण करने, कृत्रिम परागण करने और आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने में प्रशिक्षण दिया जाता है। यह छः दिनों का आवासी प्रशिक्षण कार्यक्रम है।

प्रशिक्षार्थियों को प्रशिक्षण कार्यक्रम के पहले दिन से लेकर एक वर्ष की अवधि तक केरा सुरक्षा बीमा योजना के तहत बीमा सुरक्षा भी प्रदान की जाती है। सारे प्रशिक्षार्थियों को पेड़ पर चढ़ने के लिए मशीन मुफ्त दिया जाता है। इसके अलावा, कृषक समूहों का गठन करके सारे कृषि कार्यकलाप एक साथ कराने से भी श्रमिकों की कमी का काफी हद तक समाधान किया जा सकता है। अभी तक करीब 42,000 युवाओं को फ्रेंड्स ऑफ कोकनट ट्री कार्यक्रम के तहत प्रशिक्षण दिया जा चुका है।

प्र. केरा सुरक्षा बीमा योजना के तहत कौन कौन से लोग शामिल हो सकते हैं?

नारियल ताड़ारोहियों तथा एफओसीटी प्रशिक्षण, नीरा तकनीशियन प्रशिक्षण और संकरण प्रशिक्षण के प्रशिक्षार्थियों के लिए ओरिएंटल इंश्योरेंस कंपनी के सहयोग से कार्यान्वित एक बृहत् समूह व्यक्तिगत दुर्घटना बीमा योजना है केरा सुरक्षा बीमा योजना। बीमा राशि 2.00 लाख रुपए है और वार्षिक प्रीमियम 66 रुपए है। यह बीमा सभी दुर्घटनाओं के लिए 24 घंटे की सुरक्षा पोलिसी है। सफलतापूर्वक प्रशिक्षण पूरा करनेवाले प्रशिक्षार्थियों के लिए पहले वर्ष का प्रीमियम पूरी तरह से बोर्ड की तरफ से अदा किया जाता है। पारंपरिक ताड़ारोहियों को और नियमित रूप से नवीकरण करनेवालों को 17 रुपए का भुगतान करना है और बाकी 49 रुपए का बोर्ड द्वारा भुगतान किया जाता है।

प्र. नारियल कृषक समूहों का उद्देश्य क्या है?

असंगठित नारियल किसानों को एक आम मंच प्रदान करने के उद्देश्य से नारियल विकास बोर्ड तीन स्तरीय नारियल उत्पादक संगठनों का गठन कर रहे हैं। इसके बुनियादी स्तर पर नारियल उत्पादक समितियां आती हैं जिनमें सदस्य नारियल किसान

नारियल की खेती और उद्योग से संबंधित सारे कार्य एक साथ करते हैं। ये समितियाँ एक साथ नारियल का प्रापण, प्रसंस्करण एवं विपणन का काम करती हैं। कम से कम 10 फलते नारियल पेड़ जिसके पास हों वह समिति का सदस्य बन सकता है। आसपास के 40-100 किसान मिलकर समिति बनायी जा सकती हैं। एक समिति में कम से कम 5000 पेड़ होने चाहिए। समितियों को चैरिटबिल सोसाइटीस एक्ट के तहत पंजीकरण करना चाहिए। औसतन 20 समितियाँ मिलकर नारियल उत्पादक फेडरेशन और 10 फेडरेशन मिलकर उत्पादक कंपनियाँ बनायी जाती हैं। समिति के हरेक सदस्य किसान से सालाना 8 नारियल के हिसाब से एक नारियल का अंकित मूल्य 10 रुपए निश्चित करके शेयर इकट्ठा किए जाते हैं। कंपनी की पूँजी 5 करोड़ रुपए होगी। हमारे देश में अब तक 7400 नारियल उत्पादक समितियां, 699 नारियल उत्पादक फेडरेशन और 25 नारियल उत्पादक कंपनियां गठित हुई हैं।

नारियल विकास बोर्ड की योजनाएं इन कृषक समूहों के द्वारा कार्यान्वित की जाती हैं। ये कृषक समूह, अपने कार्यक्षेत्र के अंतर्गत आनेवाले इलाकों में पेड़ पर चढ़ने में प्रशिक्षण दिलवाकर नारियल की तुड़ाई और रोग एवं कीटों का नियंत्रण एकसाथ कर सकते हैं। नीरा तकनीशियन प्रशिक्षण दिलाकर नारियल पेड़ से नीरा उतारकर इकट्ठा करके उसका प्रसंस्करण, विपणन और निर्यात कर सकते हैं। कृषि आदान सामग्री जैसे बीज, उर्वरक, कीटनाशक दवायें, कृषि यंत्र आदि का भण्डारण, जैविक खादों का उत्पादन एवं सदस्यों के बीच वितरण कर सकते हैं। नारियल पौधों की नर्सरियाँ लगाना और अंतराखेती करके उत्पादों का विपणन करना भी कृषक समूह की गतिविधियों में शामिल है।

कृषक समूह सदस्य किसानों से नारियल इकट्ठा करके, नवीन खोपड़ा ड्रायर लगाकर खोपड़ा बना कर विपणन कर सकते हैं। डाब की बिक्री भी आसान हो जाएगी। नारियल के छिलके से रेशा बनाना, नारियल पानी से सिरका, सोड़ा आदि बनाना, नीरा का उत्पादन और प्रसंस्करण, नारियल से डिब्बाबंद डाब पानी, डेसिक्केटड नारियल, नारियल दूध, वेर्जिन तेल जैसे विविध प्रकार के मूल्यवर्धित उत्पादों का निर्माण नारियल और नारियल उत्पादों का निर्यात आदि भी नारियल कृषक समूहों के गठन से कार्यान्वित हो जाएंगे। इन सब क्रियाकलापों से अंततः नारियल किसान की आय बढ़ जाएगी और वे लाभान्वित हो जाएंगे।

प्र. नारियल और नारियल उत्पादों के निर्यात में हमारा देश बहुत पीछे है। भारत को नारियल उत्पादों के निर्यात में आगे बढ़ाने के लिए क्या क्या उपाय अपनाए जाते हैं?

नारियल के उत्पादन में प्रथम स्थान हासिल होने पर भी निर्यात में भारत पीछे रह गया है। फिर भी, वह दिन दूर नहीं है जब नारियल खोपड़ी से जो सक्रियित कार्बन बनाया जाता है उसके निर्यात में भारत सबसे आगे आ जाएगा। सक्रियित कार्बन का निर्यात अब 608 करोड़ रुपए पार कर दिया है।

केंद्रीय वाणिज्य मंत्रालय ने नारियल विकास बोर्ड को एक्स्पोर्ट प्रोमोशन काउन्सिल बनाया है। कयर उत्पादों को छोड़कर सारे नारियल उत्पाद बोर्ड के कार्यक्षेत्र में आते हैं। निर्यात में भारत को आगे बढ़ाने के लिए केन्द्रीय सरकार ने कई उपाय अपनाए हैं। नारियल तेल के निर्यात में लगायी गयी रोक हटा दी गई है। परिमाण और पैकिंग में बिना किसी प्रतिबंध के, भारत के किसी भी बंदरगाह से नारियल तेल का निर्यात करने के लिए अनुमति दी गई है। विविध ब्रैन्डों के नारियल तेल के 5 कि.ग्रा. पैक भी परिमाण में किसी प्रतिबंध के बिना सारे बंदरगाहों से निर्यात किए जा सकते हैं। सरकार ने कच्चे और परिष्कृत वनस्पति तेलों पर आयात शुल्क बढ़ा दिया है। कच्चे वनस्पति तेल का आयात शुल्क जो केवल 2.5 प्रतिशत था, 7.5 प्रतिशत तक बढ़ा दिया गया है और परिष्कृत खाद्य तेल का आयात शुल्क बढ़ा कर 15 प्रतिशत बनाया गया है।

पिछले वर्ष 2013-14 में कयर उत्पादों को छोड़कर कुल 1156.12 करोड़ रुपए के नारियल उत्पादों का निर्यात किया गया। 2012-13 के मुकाबले निर्यात में 13.01 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी हुई है। अभी तक नारियल और नारियल उत्पादों के 1598 निर्यातकों ने नारियल विकास बोर्ड में पंजीकृत किया है।

प्र. नारियल उत्पादों के देशीय विपणन में वृद्धि लाने के लिए कौन से उपाय अपनाए गए हैं?

नारियल के कई मूल्य वर्धित उत्पादों की देश भर बड़ी माँग होती है। डिब्बाबंद डाब पानी, नारियल चिप्स, डेसिक्केटेड नारियल, वेर्जिन नारियल तेल, नारियल दूध, नारियल क्रीम, नारियल दूध पाउडर, गोल खोपड़ा और शुद्ध नारियल तेल को देश के बड़े शहरों में पेश करने के लिए नारियल विकास बोर्ड योजना बना रहे हैं। इन शहरों को जोड़कर एक विपणन तंत्र विकसित करने का उद्देश्य है। हरेक उत्पाद के निर्माताओं का संघ या कनसोर्शियम गठित करना, सार्वजनिक क्षेत्र के सहकारी फेडरेशनों के विपणन केंद्रों का सहयोग लेना, उत्पादों को उपभोक्ताओं के बीच पेश करना, बिसिनस सभाएं आयोजित करना, बाज़ार संवर्धन करने के लिए बहुविध माध्यमों के अभियान चलाना आदि उपाय अपनाकर विविध तरह के उत्पाद देशीय बाज़ार में पेश किए जा सकते हैं। इस आंदोलन में नारियल उत्पादक समितियों, फेडरेशनों और उत्पादक कंपनियों को भागीदार बनाए जाएंगे। केरल में सबसे पहले गठित 14 नारियल उत्पादक कंपनियों ने नारियल किसानों को सहयोग और वित्तीय एवं तकनीकी सहायता देने के उद्देश्य से संयुक्त रूप से कनसोर्शियम का भी गठन किया है।

प्र. नारियल किसानों केलिए नई प्रतीक्षा और नई उमंग है नीरा। इसके बारे में आपकी राय क्या है?

नारियल पेड़ के अनखुले पुष्पगुच्छ से उपलब्ध पौष्टिक और स्वास्थ्य रस नीरा नारियल किसान के जीवन में खुशियाली भर सकती है। अमिनो अम्लों, विटामिनों और खनिजों से भरपूर नीरा की स्वास्थ्य पेय के रूप में असीम संभावनायें होती हैं। कुदरती पेय नीरा बढ़ते बच्चों, युवाओं, गर्भवती महिलाओं तथा दूध पिलाती माताओं, सर्जरी के बाद रोगियों और बुज़ुर्गों के लिए उत्तम पेय है। नीरा का उपयोग पर्यटकों के लिए तथा पार्टियों, शादियों और कार्यालयीन बैठकों आदि में स्वागत पेय के रूप में किया जा सकता है। मधुमेह के रोगी भी बेफिक्र नीरा पी सकते हैं क्योंकि इसका ग्लाइसेमिक इंडेक्स मात्र 35 है। नीरा से नारियल गुड़, नारियल शक्कर, सिरप आदि बनाए जाते हैं जिनकी विदेश में बड़ी मांग होती है। नीरा के उत्पादन से नारियल किसानों की आय में तथा देश की आर्थिकी में अभूतपूर्व वृद्धि होगी। इसके साथ साथ लाखों रोज़गार के अवसरों का सृजन होने की संभावना है।

नारियल विकास बोर्ड में पंजीकृत 173 नारियल उत्पादक फेडरेशनों को नारियल पेड़ से नीरा उतारने की अनुमति मिली है। केरल में गठित 12 नारियल उत्पादक कंपनियों को नारियल विकास बोर्ड नीरा का प्रसंस्करण करने केलिए वित्तीय सहायता देते हैं। नीरा प्लांट लगाने केलिए अपेक्षित व्यय का 25 प्रतिशत वित्तीय सहायता नारियल प्रौद्योगिकी मिशन के तहत बोर्ड देंगे। कंपनी के अधीन आनेवाले 10 लाख पेड़ों से प्रसंस्करण केलिए आवश्यक नीरा उतार सकती है।

नारियल किसानों की उम्मीद है कि नीरा के ज़रिए किसानों के जीवन में खुशियाली आ जाएगी। केरल में पालक्काट जिले के एक किसान को 17 नारियल पेड़ों से नीरा उतारने से डेढ़ माह के लिए 55000 रुपए की आय मिली थी और कोल्लम जिले के एक नारियल किसान को अपने 17 नारियल पेड़ों को नीरा उतारने के लिए देने से पहले महीने में ही 87537 रुपए मिला है।

आज के युग में उपभोक्ता खरीदारी का निर्णय उत्पाद के स्वास्थ्यवर्धक गुण और गुणवत्ता के आधार पर लेते हैं। नीरा और नारियल शर्करा जैसे पौष्टिक गुणों से संपुष्ट स्वास्थ्यपूर्ण उत्पाद घरेलू और निर्यात बाज़ार में अपना स्थान जमा रहे हैं। स्वास्थ्य संबंधी बढ़ती जागरूकता के साथ खाद्य विपणी में कम कैलोरी वाले उत्पादों की वैश्विक माँग दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है। मोटापा, मधुमेह और दाँतों के सड़न से पीड़ित लोगों के लिए नीरा एवं नारियल शर्करा उत्तम हैं। नीरा और इसके उत्पाद खनिज पदार्थों और विटैमिनों से संपुष्ट हैं, इसलिए आज के युग में इस की संभावनाएं असीम हैं। उचित विपणन तकनीकों के द्वारा नीरा और नीरा उत्पादों के संवर्धन के ज़रिए किसानों को अतिरिक्त आय और नारियल खेती को नया जीवन प्रदान किया जा सकता है।

भारतीय नारियल कृषक उत्पादक संगठन सबसे बेहतरीन अंतर्राष्ट्रीय मोडल

51 वें एपीसीसी सत्र / मंत्रिस्तरीय बैठक में माननीय केन्द्रीय कृषि राज्य मंत्री श्री मोहनभाई कल्याणजीभाई कुंदरिया के उद्‌घाटन भाषण के मुख्यांश

विश्व में 1.24 करोड़ हेक्टर क्षेत्र में नारियल की खेती की जाती है तथा विश्व का वार्षिक नारियल उत्पादन 70 से 72 अरब नारियल फल हैं। विश्व में दो करोड़ से अधिक लोग अपने जीवनयापन के लिए नारियल पर निर्भर करते हैं। विश्व के अधिकतम नारियल उत्पादक देशों की तरह भारत में भी नारियल छोटे और सीमांत किसानों की फसल है। अतः जब हम नीति निर्धारक, नारियल पर विचार करते हैं, तब हमारा लक्ष्य इन छोटे किसानों की प्रगति होनी चाहिए। नारियल पर अनुसंधान एवं विकास के लिए हमारे निरंतर प्रयासों के कारण पिछले दो दशकों में खेती तथा उत्पाद प्रसंस्करण की टेक्नालजी में काफी सुधार आया है। परंतु दौर्भाग्यवश, अद्यतन टेक्नालजी के लाभ नारियल किसानों तक नहीं पहुँच रहे हैं। इसलिए मेरे खयाल से हमारे प्रयासों का लक्ष्य किसानों को अधिक आय प्राप्ति होना चाहिए।

विश्व में छः या सात प्रमुख नारियल उत्पादक देश हैं। अब समय आ गया है कि मुख्य नारियल उत्पादक देशों के किसान विकासशील देशों के अल्प विकसित किसानों की मदद करें। जब सभी नारियल उत्पादक देश एक साथ मिलकर कार्य करेंगे तभी प्रगति हासिल की जा सकती है।

मैं यहाँ नारियल विकास बोर्ड की कुछ नई पहलों का उल्लेख करना चाहता हूँ। सबसे महत्वपूर्ण पहल है त्रिस्तरीय किसान उत्पादक संगठनों के ज़रिए छोटे और सीमांत नारियल किसानों का एकत्रीकरण। इसका पहला स्तर नारियल उत्पादक समिति है। यह 60 से 70 किसानों का समूह है

और प्रत्येक समिति के अधीन कुल 5000 नारियल पेड़ होते हैं। ऐसी 20-25 समितियों को मिलाकर नारियल उत्पादक फेडरेशन बनाया जाता है जिसके अधीन एक लाख नारियल पेड़ होते हैं। शीर्ष स्तर पर 10 नारियल उत्पादक फेडरेशन मिलाकर नारियल उत्पादक कंपनी बनाई जाती है। प्रत्येक कंपनी में 15,000 किसान सदस्य होते हैं तथा कुल 10 लाख नारियल पेड़ होते हैं। अब हमारे देश में 6901 सीपीएस, 646 फेडरेशन तथा 21 नारियल उत्पादक कंपनियाँ हैं। इस त्रिस्तरीय प्रणाली में 2.2 करोड़ नारियल पेड़ों के मालिक 4.15 लाख नारियल किसानों को एकत्रित किया गया है। अधिकतम नारियल उत्पादक कंपनियाँ अपने गठन के एक साल के अंदर ही नारियल विनिर्माण इकाई स्थापित कर रही हैं।

मैं सुनिश्चित रूप से कह सकता हूँ कि किसान उत्पादक संगठन नारियल के उत्पादन और उत्पादकता सुधारने, अच्छी रोपण सामग्रियों के उत्पादन में वृद्धि करने, उपोत्पादों की बेहतर उपयोगिता तथा मूल्य वर्धन के ज़रिए विपणन एवं निर्यात में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।

नारियल विकास बोर्ड ने फ्रेंड्स ऑफ कोकोनट ट्री तथा नीरा तकनीश्यन प्रशिक्षण कार्यक्रम के ज़रिए कई बेरोज़गार युवकों को प्रशिक्षण दिया है। नारियल क्षेत्र में बड़े पैमाने पर ग्रीन कॉलर नौकरियों का सृजन संभव है। सरकार का "मेक इन इंडिया" अभियान किसान उत्पादक संगठनों को नारियल उत्पादों से विश्व बाज़ार पर काबू करने के लिए अच्छा अवसर प्रदान करता है। मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि पिछले दशक में भारतीय अर्थव्यवस्था में निर्यात क्षेत्र ने अच्छा विकास हासिल किया है। वैश्विक अर्थव्यवस्था की मंदी में भी भारतीय निर्यात क्षेत्र ने सराहनीय वृद्धि दर्शाई है। देश के जीडीपी में प्रमुख हिस्सा निर्यातों का है। भारत में वर्ष 2013-14 में कयर उत्पादों को छोड़कर नारियल उत्पादों के निर्यात से प्राप्त मूल्य 1156 करोड़ रुपए है। मैं बेहद खुशी के साथ सूचित करता हूँ कि नारियल निर्यात से अर्जित विदेशी मुद्रा 2012-13 के 2138 करोड़ रुपए से बढ़कर 2013-14 में 2632 करोड़ रुपए तक पहुँच गई है।

आशा है कि एपीसीसी के 51 वें सत्र/ मंत्रिस्तरीय बैठक में वैश्विक नारियल परिवेश की समीक्षा की जाएगी तथा नारियल की खेती, प्रसंस्करण तथा व्यापार के खास मुद्दों पर परिचर्चाएँ होंगी ताकि इस क्षेत्र के विकास के लिए उपयुक्त नीति निर्धारण किया जा सके। यह सत्र सुनिश्चित रूप से अनुसंधानकर्ताओं, प्रक्रमण करने वालों, व्यापारियों तथा नीति निर्धारकों के लिए नारियल उद्योग से जुड़ी सूचनाओं के आदान-प्रदान के लिए खुला मंच साबित होगा और भारतीय नारियल उद्योग के लिए सुनहरा भविष्य प्रदान करेगा।

भारत विशेषज्ञता बाँटने के लिए तैयार

51 वें एपीसीसी सत्र / मंत्रिस्तरीय बैठक में एपीसीसी अध्यक्ष श्री संजीव चोपड़ा भाप्रसे, संयुक्त निदेशक (एमआईडीएच) के स्वागत भाषण के मुख्यांश

एपीसीसी एक संयुक्त राष्ट्र संगठन है जो युनाइटड नेशन इकनोमिक एंड सोश्यल कमीशन फोर एशिया पसफिक के अधीन कार्यरत है। यू एन अभिकरण और भारत में कार्यरत अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियाँ जो विकास के लिए सहायता और निधियाँ देते हैं, उन्हें इस कार्यक्रम में भाग लेने केलिए निमंत्रण दिया गया था। हम सब जानते हैं कि नेक कार्य के लिए निधियों की कमी नहीं है लेकिन कार्य महत्वपूर्ण होना चाहिए और निधियों का सही उपयोग होना चाहिए। हमें यकीन दिलाना होगा कि नारियल की खेती कई देशों में जीविका चलाने का उपाय और आर्थिक स्थिति का आधार है। इसलिए उन देशों के नारियल किसानों को मदद की आवश्यकता है।

गत वर्षों में एपीसीसी का कार्य एक दायरे के अंदर सीमित था। परंतु हम अब यह चाहते हैं कि विश्व जान जाएं कि बहुमुखी फसल नारियल स्वास्थ्य वर्धक भी है। हम विश्व भर के 2 करोड़ छोटे और सीमांत किसानों का प्रतिनिधित्व करते हैं। एपीसीसी के कई सदस्य राज्यों में मुख्य या एकमात्र जीविका फसल है नारियल।

हमें एक दूसरे से बहुत कुछ सीखना है। कई देशों में नारियल क्षेत्र में सफलता प्राप्ति की गाथाएं हैं जो उनके देशों के प्रतिनिधि आलेख में उल्लिखित की गई हैं। मैं भारत से हूँ इसलिए मैं नारियल विकास बोर्ड भारत की कुछ पहलों के संबंध में चंद शब्द कहना चाहता हूँ।

केरल के नारियल बागों में उत्पादकता सुधार के लिए पुनर्रोपण एवं पुनरुज्जीवन, बागों में नारियल खेती प्रौद्योगिकी का निदर्शन, सठिया और रोगग्रस्त पेड़ों को काट निकालना, संस्तुत कृषि साधनों के प्रयोग और गुणवत्तायुक्त नारियल पौधे लगाकर नारियल बागों का पुनरुज्जीवन, त्रिस्तरीय नारियल उत्पादक संगठनों का गठन तथा विकासात्मक योजनाओं का कार्यान्वयन, इन संगठनों के द्वारा मूल्य वर्धन को बढ़ावा देना, नारियल प्रसंस्करण प्रौद्योगिकियों के विकास के लिए अनुसंधानों का प्रायोजन करना, नारियल प्रौद्योगिकी मिशन के अधीन नारियल प्रसंस्करण इकाइयाँ स्थापित करने केलिए उद्यमियों को प्रोत्साहन देना, तूफान या अन्य प्राकृतिक आपदाओं की क्षतियों से नारियल पेड़ों को बीमित करना, पेड़ से गिरने या अन्य हादसों के खिलाफ ताड़ारोहकों और फल की तुड़ाई करने वालों को बीमित करना, नारियल प्रबंधन क्षेत्र तथा ताड़ारोहण, नीरा टैप्पिंग, प्रसंस्करण आदि पर कुशलता विकास प्रशिक्षण आदि नाविबो द्वारा शुरू की गई कुछ पहल हैं।

मुझे यकीन है कि अन्य नारियल उत्पादक देशों में भी सफलता के ऐसे ही नमूने होंगे। अन्य देशों में भी इसी तरह सफलता दोहराने के लिए इन नमूनों को स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप बदलना होगा। नीति निर्धारकों की भूमिका की अहमियत यहीं पर है। अनुसंधान महत्वपूर्ण है परंतु उससे आवश्यक है विकसित प्रौद्योगिकियों का लाभ नारियल किसानों तक पहुँचाना। प्रयोगशाला से बागों तक प्रौद्योगिकियों का अंतरण बड़े पैमाने पर होना ज़रूरी है।

हमारा सौभाग्य है कि एपीसीसी का वर्तमान कार्यकारी निदेशक श्री उरोन एन सलूम बड़े क्रियाशील तथा उत्साही हैं। हमारी नई सहायक निदेशक श्रीमती दीप्ति नायर भारत से है। आशा करता हूँ कि इनके कुशल नेतृत्व में एपीसीसी विश्व के सभी नारियल किसानों के करीब पहुँचने का भरपूर प्रयास करेंगे।

अगर कोई भी देश नारियल विकास बोर्ड द्वारा भारत में कार्यान्वित किसी भी सफल विकासात्मक नमूनों का अधिग्रहण करना चाहे तो भारत उन्हें श्रम शक्ति और विशेषज्ञता के रूप में सहायता और समर्थन देने के लिए तैयार है।

नारियल क्षेत्र के उज्ज्वल भविष्य के लिए लाभकारी मिश्रित खेती

आर ज्ञानदेवन

उप निदेशक (विकास), नाविबो, कोची- 11

नारियल छोटे किसानों की फसल है और नारियल बागों का औसतन आकार 0.22 हेक्टर होता है। छोटे और सीमांत नारियल किसानों की नारियल पर आधारित आर्थिक स्थिति में स्थिरता और सुधार लाने हेतु नारियल खेतीगत ज़मीन का उपयुक्त उपयोग करके प्रत्येक इकाई क्षेत्र से अतिरिक्त आय कमाना ज़रूरी है। इसके लिए एक ज़रिया नारियल पेड़ों के बीच उपलब्ध जगह पर अन्य फसलों की मिश्रित खेती है। वार्षिक, द्विवार्षिक और दीर्घकालीन फसलें नारियल बागों में मिश्रित खेती के लिए उपयुक्त हैं। नारियल बागों में पेड़ों के बीच दीर्घकालीन फसलों की खेती करने को नारियल आधारित मिश्रित खेती कही जाती है।

भारत के 50 लाख नारियल बागों में 90 प्रतिशत एक हेक्टर से कम आकार के हैं। पर्याप्त रोज़गार और आय सृजन के लिए किसान पीढ़ियों से नारियल बागों में वार्षिक एवं दीर्घकालीन फसलों की खेती करते आ रहे हैं। भारत में, लंबी किस्म के नारियल पेड़ों के बीच संस्तुत दूरी 7.5 मी x 7.5 मी है। नारियल पेड़ों का जीवन काल तीन अवस्थाओं में बाँटा जा सकता है- आठ साल तक की आयु फलन पूर्व स्थिति, 8- 25 साल तक युवावस्था और 25 साल से ऊपर वयस्क अवस्था मानी जाती है। यह अनुमान लगाया गया है कि दिन में अधिक धूप मिलते समय (10-16 बजे) 25 साल के वयस्क नारियल पेड़ों के शिखर वितानों से गुज़रकर तकरीबन 56 प्रतिशत धूप ज़मीन पर पड़ती है। ऐसी विशेषताओं के कारण नारियल बागों में नारियल पेड़ों की वृद्धि की प्रारंभिक अवस्था में और फिर 25 साल के बाद विभिन्न किस्मों की मिश्रित फसलों की खेती की जा सकती है।

नारियल पेड़ पर काली मिर्च की बेल

काली मिर्च, कोको, जायफल तथा लौंग नारियल पेड़ों की आँशिक छाया तले लगाने लायक अत्यधिक लाभकारी दीर्घकालीन फसलें है। अंतर्राष्ट्रीय और देशी बाज़ारों में इन फसलों की बढ़ती माँग के मद्देनज़र नारियल बागों में इन फसलों की बड़े पैमाने पर खेती की गुंजाइश अधिक होती है।

नारियल के लिए पेड़ों के बीच संस्तुत दूरी 7.5 x 7.5 मीटर है (प्रति हेक्टर 175 पेड़) परंतु ज्यादात्तर बागों में इस पर ध्यान नहीं दिया जाता है। केरल के बागों में जब प्रति हेक्टर ज़मीन में 200 से 250 तक पेड़ पाए जाते हैं तब कर्नाटक में प्रति हेक्टर में तकरीबन 120 पेड़ लगाए गए हैं। परीक्षणों से ज्ञात हुआ है कि 7.5 x 7.5 मीटर की दूरी पर नारियल पेड़ लगाने से किसी भी बाग के संसाधनों का पूरी तरह उपयोग नहीं हो जाता है। नारियल पेड़ का सक्रिय जड़ क्षेत्र उपलब्ध ज़मीन का मात्र 25 प्रतिशत का उपयोग करता है और बाकी की ज़मीन का लाभकारी उपयोग विभिन्न अंतराफसलें लगाने से किया जा सकता है। अन्य एकबीजपत्री पौधों की तरह नारियल पेड़ की भी जड़ें प्रधान जड़ के बजाय तने से या अन्य जड़ों से अनेक संख्या में निकलती हैं। अनुकूल परिस्थितियों में मध्यम वर्षीय नारियल पेड़ों में 4000 से 7000 जड़ें पाई जाती हैं। यह रिपोर्ट की गई है कि अच्छी प्रबंधन स्थिति में नारियल पेड़ की 74 प्रतिशत जड़ें पेड़ की चारों ओर 2 मीटर से कम दूरी तक ही फैल जाती हैं और 82 प्रतिशत जड़ें मिट्टी में 31 से 120 सेंटीमीटर गहराई तक ही जाती हैं और 80 प्रतिशत जड़ें पेड़ के तने से 2 मीटर तक सक्रिय होती हैं। अतः नारियल का सक्रिय जड़ क्षेत्र उपलब्ध ज़मीन का मात्र 25 प्रतिशत में पाया जाता है तथा बाकी की ज़मीन अन्य फसलों की लाभकारी खेती के लिए उपयोग में लाई जा सकती है। नारियल पेड़ के शिखर पर पत्तों का विन्यास आंशिक रूप से सूरज की किरणों को ज़मीन पर पड़ने देता है। ज़मीन पर वितान की छाया और वितान में से गुज़रकर ज़मीन पर पड़ने वाली धूप की मात्रा सिर्फ पेड़ों की आयु पर ही नहीं बल्कि पेड़ों के बीच की दूरी, प्रजातीय विशेषताओं तथा दिन के समय पर निर्भर करती है। बिखरा हुआ सूर्य प्रकाश नारियल बागों में अंतराफसलों के रूप में काली मिर्च, कोको, जायफल तथा लौंग जैसी उच्च मूल्य फसलों की खेती सुविधाजनक बना देता है।

कोको- चोकलेट का पेड़

कोको छाया पसंद करने वाला पेड़ है और नारियल और कोको एक दूजे के लिए लाभकारी है। नारियल बागों में कोको की खेती की लागत कम और आय अधिक होती है। दोनों फसलों के जड़ क्षेत्र बिलकुल अलग होने की वजह से इन दो फसलों के बीच पोषकतत्वों या नमी के लिए प्रतिस्पर्धा नहीं होती है। बेहत्तर कार्यनिष्पादन के लिए दूसरे वर्ष से नियमित रूप से कटाई-छँटाई करनी चाहिए ताकि पर्ण वितान को अच्छी आकृति मिले।

कोको नारियल बागों केलिए उत्तम मिश्रित फसल पाया गया है। चार से छः महीने के एफ -1 संकर किस्म या एक वर्ष की आयु की कोको कलमें एकल कतार प्रणाली में आपस में 3 मीटर की दूरी पर नारियल पेड़ों की दो कतारों के बीच लगाई जाती हैं। कतारें उत्तर-दक्षिण दिशा की ओर लगाएँ। एक हेक्टर में 7.5 x 7.5 मीटर की दूरी पर लगाए गए नारियल पौधों के बाग में 500 कोको पौधे लगाए जा सकते हैं। 45 x 45 x 45 सेंटीमीटर आकार के गड्ढ़े खोदकर 15 किलो अहाता खाद या कंपोस्ट तथा ऊपरी मिट्टी से भरें। 100 ग्राम नाइट्रजन, 40 ग्राम फोस्फेट तथा 140 ग्राम पोटैश वयस्क पेड़ को मई से सितंबर तक दो समान खुराकों में दें। पहले वर्ष में वयस्क पेड़ के लिए संस्तुत उर्वरकों की एक तिहाई , दूसरे वर्ष में दो तिहाई और तीसरे वर्ष से लेकर पूरा खुराक देना चाहिए। पेड़ की चारों ओर नीचे भाग से 75 सें. मीटर के भीतर उर्वरक दें और मिट्टी में अच्छी तरह मिला दें।

नारियल बागान में कोको की अंतरा खेती

कोको की सामान्य ऊँचाई 6-8 मीटर है। परंतु कोको पौधे को काटकर आकृति देनी होगी ताकि पौधा 1.8 मीटर से 2 मीटर तक ही बढ़े। कोको पौधे दूसरे वर्ष से फूलने लगते हैं तथा सातवें वर्ष से स्थाई उपज प्राप्त होती है। पूरे वर्ष फल देने वाले

कोको पौधे जून और दिसंबर में सबसे अधिक फल देते हैं। फूलने से लेकर फल पकने तक छः महीने लगते हैं। जब फलों का रंग पीला होने लगता है तब नुकीले चाकू से फसल कटाई की जानी है। प्रति वर्ष प्रति पेड़ से औसतन 10-15 किलोग्राम फल प्राप्त होते हैं। 10-12 किलोग्राम फलों से एक किलो नम बीज प्राप्त होते हैं तथा तीन किलोग्राम नम बीज सुखाने से एक किलोग्राम सूखा बीज प्राप्त होता है। प्रतिवर्ष प्रति पेड़ से औसतन 60 ताज़ा फल प्राप्त होते हैं। तीस फलों से तीन किलो नम बीज प्राप्त होते हैं जो सुखाने से एक किलो सूखा बीज प्राप्त होता है। अत: प्रति पेड़ से दो किलो सूखा बीज प्रतिवर्ष प्राप्त होता है। वर्तमान बाज़ार दर के अनुसार इस फसल की खेती से एक एकड़ ज़मीन से प्रतिवर्ष 80,000 रुपए की अतिरिक्त आय प्राप्त की जा सकती है।

काली मिर्च - मसालों का बादशाह

भारत के पश्चिमी तट और श्रीलंका में नारियल बागों में मिश्रित फसल के रूप में काली मिर्च की खेती की जाती है। नारियल पेड़ ही टेक का कार्य करता है। जड़युक्त कर्तनों को पेड़ की उत्तर दिशा में तने से 1 मीटर की दूरी पर 50 x 50 x 50 आकार के गड्ढ़ों में रोपा जाता है। गड्ढ़ों में 10 किलो अहाता खाद या कंपोस्ट तथा ऊपरी मृदा भरें। बेलों को ज़मीन पर फैलाकर पेड़ों पर चढ़ाएँ। प्रति पौधे केलिए एक किलो नीम खली के प्रयोग से सूत्रकृमियों का प्रकोप रोका जा सकता है जो इस फसल का प्रमुख कीट है। इसका जड़ तंत्र नाज़ुक है इसलिए जड़ों को नुकसान पहुँचाए बिना मिट्टी हिलाकर 45 सेंटीमीटर के दायरे में उर्वरक डालना चाहिए।

काली मिर्च की अंतरा खेती

पेड़ पर 4 मीटर की ऊँचाई तक ही बेल को चढ़ने दिया जाता है। काली मिर्च के पौधे तीसरे वर्ष से उपज देने लगते हैं तथा सातवें से आठवें वर्ष से पूर्ण रूप से फलनक्षम होते हैं। प्राय:15 वर्ष के बाद उपज में कमी पाई जाती है लेकिन कई बार काली मिर्च के पौधे 60 साल तक उपज देते हैं। अप्रैल-मई में फूलने लगते हैं और बेर पकने के लिए आठ महीने लगते हैं। एक या दो बेर लाल रंग के होने पर फसल की तुड़ाई की जा सकती है। बेरों को हाथ से अलग किया जाता है और कड़ी धूप में काले रंग के होने तक सुखाया जाता है। एक पौधे से औसतन एक किलो ग्राम काली मिर्च मिल सकते हैं। रिपोर्ट की गई है कि पन्नियूर -1 किस्म की काली मिर्च लताएं जब 25 साल के नारियल पेड़ों पर चढ़ाई गईं तब प्रति पौधे से 2 किलो काली मिर्च प्राप्त हुआ। अधिकतम 5.5 किलो काली मिर्च तक एक पौधे से एक वर्ष में प्राप्त हुआ है। काली मिर्च की मिश्रित खेती करने से एक एकड़ ज़मीन से प्रतिवर्ष 70000 रुपए तक प्राप्त किया जा सकता है।

लौंग- मसाला कली

पोषक तत्वों से संपुष्ट और अच्छी तरह सिंचित मिट्टी में मिश्रित फसल के तौर पर लौंग की खेती की जाती है। सामान्य तौर पर चार नारियल पेड़ों के बीच लौंग का एक पौधा लगाया जाता है। 60 x 60 x 60 सेंटीमीटर आकार के गड्ढ़ों में ऊपरी मिट्टी तथा अहाता खाद या कंपोस्ट भरकर (15 किलो) दो साल के लौंग पौधों को लगाया जाता है। एक हेक्टर में लगभग 1550 लौंग पेड़ लगाए

अंतरा फसलों से हर

जा सकते हैं। पहले साल में 20 ग्राम नाइट्रजन, 18 ग्राम फोस्फेट तथा 50 ग्राम पोटैश प्रति पेड़ के लिए देना चाहिए और धीरे धीरे खुराक बढ़ाकर 5 वें साल से वयस्क पेड़ के लिए संस्तुत पूरा खुराक दिया जा सकता है। एक वयस्क लौंग पेड़ को 300 ग्राम नाइट्रजन, 250 ग्राम फोस्फेट तथा 750 ग्राम पोटैश देना ज़रूरी है। मई और सितंबर में दो समान खुराकों में दिया जा सकता है। ड्रिप दायरे की चारों तरफ उर्वरकों को डाला जाए तथा हल्की तरह मिट्टी में मिलाएं।

लौंग के पेड़ 10 से 12 मीटर तक की ऊँचाई तक बढ़ते हैं। यह छ: वर्ष की आयु में फूलने लगता है तथा 20 साल में पूरी तरह फलने लगता है। उसके बाद 60 से 80 साल तक उत्पादन बरकरार रहता है। सितंबर में फूलना शुरू होता है तथा जनवरी तक चलता है (परबती इलाकों में)। चार महीनों में कलियों की तुड़ाई की जा सकती है। हरे रंग से हल्के गुलाबी रंग के होने पर प्लैटफोर्म सीढ़ियों पर चढ़कर हाथों से कलियों को तोड़ा जाता है। 4-5 दिनों में धूप में सुखाने पर इनका रंग भूरा हो जाता है। अनुकूल परिस्थितियों में प्रति पेड़ से प्रति वर्ष 3 किलो तक उपज पाई जा सकती है। 80,000 रुपए से लेकर एक लाख रुपए तक मिश्रित फसल के रूप में लौंग की खेती से आय प्राप्त होती है।

ा-भरा नारियल बाग

जायफल

चार नारियल पेड़ों के बीच दो वर्षीय जायफल का पौधा लगाए जाने पर एक हेक्टर भूमि में 150 पेड़ लगाए जा सकते हैं। इस पेड़ में एकलिंगी फूल निकलते हैं इसलिए उच्च उपज प्रदान करनेवाले मादा पौधों से प्राप्त कलमों को लगाना उचित है। रोपने के समय नर और मादा कलमों का अनुपात 10:1 रखना चाहिए। 60X 60X 60 सेंटीमीटर आकार के गड्ढ़ों में अहाता खाद या कंपोस्ट भरकर 20 ग्राम नाइट्रजन, 18 ग्राम फोस्फेट तथा 50 ग्राम पोटैश देना चाहिए। क्रमिक रूप में खुराक बढ़ाकर पाँचवें साल से 500 ग्राम नाइट्रजन, 250 ग्राम फोस्फेट तथा 1000 ग्राम पोटैश प्रति पेड़ प्रति वर्ष देना चाहिए। जायफल के पेड़ 5-13 मीटर तक बढ़ते हैं कभीकभार 20 मीटर तक बढ़ते हैं। ये 5-8 वर्ष की आयु में फूलते हैं, 15-20 साल तक पूर्ण रूप से फलनक्षम होते हैं और 30 से 40 साल या उससे अधिक समय तक लगातार उपज प्रदान करते हैं। जून से अगस्त तक फूलने का दौर है और फल पकने केलिए छ: महीने लगते हैं। फल जब अपने आप फोड़ जाते हैं और बीज चोल लाल रंग के हो जाते हैं तभी तुड़ाई की जाती है। जावित्री को धूप में 10-15 दिनों तक सुखाई जाती है और तब तक वह सूख कर लाल से पीले-भूरे

जायफल की अंतरा खेती

रंग का हो जाता है। फल खोपड़ी के अंदर गरी खड़खड़ाने की आवाज़ निकलने तक जायफलों को सुखाया जाता है। नारियल और जायफल की मिश्रित खेती में प्रति वर्ष प्रति पेड़ से औसतन 3 किलोग्राम फल प्राप्त हो सकता है। एक एकड़ ज़मीन से प्रति वर्ष 1.20 लाख की अतिरिक्त आय पाई जा सकती है।

नारियल बागों में उपरोक्त फसलों से मिश्रित खेती करने से रोज़गार सृजन में वृद्धि, विभिन्न किस्मों की उपजों का उत्पादन तथा पारिस्थितिक टिकाऊपन सुनिश्चित किया जा सकता है। मृदा की उर्वरता में बढ़ोत्तरी, सूक्ष्माणु सक्रियता में वृद्धि, सूर्यप्रकाश का उच्चतम विकिरण, बेहत्तर सूक्ष्म जलवायु तथा कम खरपतवार वृद्धि पाई जाती है। मिट्टी का अपरदन भी मिश्रित खेती से रोका जा सकता है। मिट्टी में गिरे पत्ते तथा अन्य पादप अवशिष्ट सड़ने की प्रक्रियाएँ चलने से मिट्टी की उर्वरता बढ़ जाती है। नारियल आधारित एकीकृत खेती प्रणाली में उपरोक्त चार लाभदायक नकदी फसलों की मिश्रित खेती करने से अतिरिक्त आय ही नहीं बल्कि उच्च उत्पादकता भी पाई जा सकती है।

अहमदनगर जिले में नारियल की खेती से रचा नया इतिहास

शरद एस.आगलावे
क्षेत्र अधिकारी, राज्य केन्द्र, ठाणे

नारियल के वृक्ष को कल्पवृक्ष कहते हैं। इसका हरेक भाग किसी न किसी प्रयोजन हेतु मानव जीवन के लिए उपयोगी है। नारियल हमें भोजन, पानी और आश्रय देता है। भारत नारियल उत्पादन में विश्व में सर्व प्रथम स्थान पर है। भारत के नारियल उत्पादक राज्यों में नारियल के उत्पादन के तौर पर नवें स्थान पर है महाराष्ट्र। महाराष्ट्र में ज्यादातर नारियल की खेती कोंकण भाग में की जाती है। मगर अहमदनगर जिले में नेवासा तालुक के निवासी श्री जनार्दन तुपे ने ठान लिया कि नारियल की खेती अहमदनगर जिले में करेंगे और उन्होंने सात एकड़ में नारियल की खेती करके इतिहास बनाया।

अहमदनगर के किसान नारियल की खेती मुख्य रूप से खेतों के मेंड पर फसल के रूप में करते थे। श्री जनार्दन तुपे के पास दस एकड़ भूमि है। श्री तुपे अपने खेत में ईख का उत्पादन करने के साथ साथ खेत के मेंड पर नारियल के पेड़ लगाए थे। उसमें अंतराफसल के रूप में प्याज और कुछ सब्जियाँ भी उगाते थे। श्री जनार्दन तुपे कृषि स्नातक है और कृषि विभाग में कृषि सहायक के पद पर कार्यरत है, इसलिए खेती में उनकी बहुत रुचि है। श्री तुपे ने देखा कि अहमदनगर जिले के किसानों ने बनावली किस्म के नारियल पेड़ खेतों के किनारों पर लगाए हैं और उनका किसी भी प्रकार का प्रबंधन नहीं करते हैं। फिर भी उन नारियल पेड़ों से अच्छा उत्पादन मिल रहा है, इसलिए उनको विश्वास हो गया कि नारियल की खेती अहमदनगर जिले में हो सकती है।

श्री जनार्दन तुपे के नारियल बागान के बौने नारियल पेड़

उन्होंने नारियल की खेती शुरू करने से पहले क्षेत्रीय नारियल अनुसंधान केन्द्र, डॉ.बालासाहेब सावंत कोंकण कृषि विद्यापीठ, दापोली, भाट्ये, रत्नगिरी में कार्यरत डॉ.दिलीप नागवेकर से संपर्क किया। उनसे संपर्क करके तकनीकी मार्गदर्शन जैसे नारियल के दो पेड़ों के बीच की दूरी क्या होनी चाहिए, गड्ढे का आकार, नारियल की विभिन्न किस्में, पौध लगाने का तरीका, अंतराफसल, नारियल पर आने वाले कीट, रोग रोकने के उपाय आदि संबंधी विस्तृत जानकारी ली।

श्री जनार्दन तुपे ने सन् 2007 में नारियल विकास बोर्ड के कर्नाटक के मण्ड्या स्थित प्रदर्शन सह बीज उत्पादन फार्म का दौरा करके वहाँ के नारियल बागान और नर्सरी देखा और वहाँ के फार्म प्रबंधक से मुलाकात की और उनके मार्गदर्शन के अनुसार लंबी x बौनी, चावक्काट नारंगी बौनी, चावक्काट हरी बौनी किस्मों के 250 पौधे लाकर लगाए और वर्ष 2008 में फिर से उपरोक्त किस्म के 250 पौध लाकर लगाए। इनके खेत में पौधे से पौधे एवं कतार से कतार की दूरी 25 फीट है।

श्री तुपे कहते हैं कि उनकी ज़मीन की मिट्टी काली होने के कारण उन्होंने अपने

बोर्ड के निदेशक डॉ.जी.आर.सिंह
श्री तुपे के बागान में

अच्छी उपज देनेवाली चावक्काट
हरी बौनी किस्म

खेत में अप्रैल के महीने में 1 x 1 x 1 मीटर आकार के गड्ढे खोदकर इसमें बालू, मुरूम, गोबर खाद, सिंगल सूपर फॉस्फेट डालकर गड्ढे को अच्छी तरह से भरकर उसमें नारियल का पौध लगाया।

खाद और पानी प्रबंधन

श्री तुपे ने नारियल के पौधे को एक साल बाद प्रति पौधा 250 ग्राम डाइ अमोनियम फॉस्फेट(डीए पी), 100 ग्राम यूरिया, 100 ग्राम पोटैश, सूक्ष्म अन्य द्रव्य दिया। जैसे जैसे नारियल के पौधे बढ़ते गए उसी तरह उनको रासायनिक खाद के साथ चार किलो नीम खली साल में तीन बार दी गई। खाद का प्रयोग नारियल पेड़ से चार फीट अंतर रखकर थाला बनाकर दिया गया।

नारियल पौधों के रोपण करने के दो महीने बाद टपक (drip) संयंत्र के द्वारा हर दूसरे दिन प्रति पौधा 60 से 80 लीटर पानी देने का प्रबंध किया गया।

कीट और रोग नियंत्रण

श्री जनार्दन तुपे के अनुसार जब पौधे 2 से 3 साल के हुए तब गैंडा भृंग का प्रकोप बड़े पैमाने पर पाया गया। वह कीट नारियल के कोमल पत्तों को काटता है। कुछ दिनों बाद जब पत्ता खुलता है तो कैंची से काटा हुआ जैसा दिखाई देता है। इसके नियंत्रण के लिए तीन चार नैफ्थलीन गोलियाँ या फोरेट 10 जी रेत में मिलाकर पौधे के ऊपरी पत्तों के कक्षों में डालकर कीट का रोकथाम किया गया।

हैं। यहाँ देशभर से पर्यटकों का आना जाना लगा रहता है और यहाँ डाब पानी की बहुत मांग है। यहाँ पर बिक्री होने वाले डाब कर्नाटक तथा आंध्र प्रदेश राज्य से लाकर बेचा जाता है। श्री तुपे के खेत में लगाई गई नारियल की बौनी किस्मों के पेड़ खासकर डाब के लिए प्रचलित है। इसलिए यहाँ के स्थानीय व्यापारी बागान में आकर नारियल तोड़कर दस से पंद्रह रुपए पर खरीद कर ले जाते हैं। बौनी जाति होने के कारण नारियल तोड़ना बहुत आसान है। प्रति सप्ताह 700 से 900 नारियल तोड़े जाते हैं। अभी प्रति पेड़ 70 से 85 नारियल मिलते हैं और पाँच साल के बाद प्रति पेड़ 200 से 250 नारियल के उत्पादन का अनुमान है। प्रति नारियल 15.00 रुपए भी मिला तो प्रति पेड़ से प्राप्त आमदनी 3000 रुपए होगी।

नारियल बगीचा लगाने का कुल खर्चा

विवरण	खर्च
500 पौधे (प्रति पौधा 100 रुपए) के यातायात के साथ कुल खर्चा	60,000 रुपए
गड्ढे बनाने का कुल खर्चा	20,000 रुपए
गड्ढे भरना(बालू, मुरूम, गोबर खाद के साथ)	40,000 रुपए
रासायनिक खाद	5,000 रुपए
मज़दूरी खर्चा	2,500 रुपए
टपक संयंत्र	1,00,000 रुपए
कुल खर्चा	2,27,500 रुपए

500 पौधा लगाने का कुल खर्चा दो लाख सत्ताईस हज़ार पाँच सौ रुपए मात्र आया।

बागान से सीधी बिक्री

चांदा गाँव, शिर्दी और शनिशिंगनापूर के पास है। ये दोनों पवित्र दर्शनीय स्थान

नारियल के साथ साथ पत्तों से झाड़ू भी बनाकर बेचते हैं और भविष्य में कृषि पर्यटन करने का भी विचार है।

अशांत क्षेत्रों में नारियल की खेती से उत्पन्न रोज़गार के अवसर

आर.एस.सेंगर और समीक्षा अवस्थी

सहायक निदेशक और उद्यान सहायक, नारियल विकास बोर्ड, प्रबीउ फार्म, कोंडागांव

छत्तीसगढ़ राज्य का बस्तर एक आदिवासी बहुल इलाका है। बस्तर संभाग एक जिला हुआ करता था जो अभी कई अन्य जिलों में विभाजित हो गया है। बस्तर संभाग लगभग 39114 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला हुआ है जो कि पूरे भारत में सबसे बड़ा संभाग है। सन् 1999 में बस्तर संभाग को तीन जिलों बस्तर, दंतेवाड़ा और कांकेर में विभाजित किया गया। ये तीनों जिले बस्तर संभाग के अंतर्गत आते हैं। इसके बाद जैसे जैसे राज्य का विकास होना शुरू हुआ बस्तर संभाग कई अन्य जिलों में जैसे नारायणपुर, बीजापुर, सुकमा, कोंडागांव इत्यादि में बांटे गए। इसप्रकार बस्तर संभाग सात जिलों में बँट गया, जिससे विकास की गति और तेज़ हो गयी। बस्तर संभाग में नारियल की खेती की काफी संभावनाएं होती हैं।

नारियल एक बहुवर्षीय फसल है। इसे बराबर मौसम तथा उच्च आर्द्रता की आवश्यकता होती है। इसकी खेती हेतु आदर्श ताप 27^0 सेल्शियस से 34^0 सेल्शियस तक होता है तथा आदर्श वर्षा लगभग 1000 से 3000 मि.मी. प्रति वर्ष तक होती है। यदि वर्षा तथा ताप ऊपर लिखित अनुसार हो तो नारियल की बारानी खेती भी अच्छे तरीके से की जा सकती है। नारियल की खेती लेटेराइट, क्ले, दोमट, कच्छारी तथा लाल मृदा में अच्छे से होती है।

नारियल की किस्में

वृद्धि तथा आकारिकी के आधार पर इसे दो समूहों में विभाजित किया गया है, एक लंबी तथा दूसरी बौनी किस्म। बौनी किस्म रोपण के चौथे वर्ष से फलने लगती है, तथा लंबी किस्म रोपण के पांचवें तथा सातवें वर्ष से फलने लगती है। बौनी किस्म प्रायः संकर बीजों तथा बीजफलों एवं डाब पानी के लिए ही लगायी जाती है। महत्वपूर्ण बौनी किस्में हैं, चावक्काट बौना, मलयन बौना, गंगाबोंदम इत्यादि। बौनी किस्म की अपेक्षा लंबी किस्म के पौधों की खेती अधिक की जाती है। नारियल की उत्पत्ति के क्षेत्र के आधार पर उसे पहचानने के लिए उस क्षेत्र का नाम दिया जाता है। जैसे लंबी किस्म के पौधे अधिकतर पश्चिम तटीय भारत के होते हैं, इसलिए ये पश्चिम तटीय लंबी के नाम से जाने जाते हैं। उसी तरह पूर्व तटीय लंबी, लक्षद्वीप ऑर्डिनरी, तिप्तूर टॉल इत्यादि हैं। अधिकतर यह देखा गया है कि बौने वृक्ष की आयु अधिक नहीं होती है, आर्थिक रूप से इनकी आयु लगभग 35 से 40 वर्ष तक होती है। किंतु डाब की खेती के लिए बौनी किस्में अत्यंत उपयुक्त हैं।

नक्सल प्रभावित क्षेत्र
नारियल खेती के लिए उपयुक्त क्षेत्र

बस्तर में नारियल

छत्तीसगढ़ में स्थित बस्तर सदैव अपनी संस्कृति के साथ साथ नक्सल वाद के लिए भी जाना जाता है। जिससे यहाँ के अतिसंवेदनशील दूरस्थ इलाकों का जनजीवन काफी प्रभावित हुआ है। परंतु यहाँ के निवासी परिश्रम करने वाले एवं सीधे-सादे व्यक्ति होते हैं जिनमें से लगभग 70 प्रतिशत आबादी खेती करके अथवा उससे जुड़े अन्य व्यवसायों से अपना जीविकोपार्जन करती हैं।

बस्तर क्षेत्र हर तरह के पौधों के लिए अनुकूल माना जाता है। यहाँ का वातावरण भी सदैव सामान्य होता है जिसमें हर प्रकार की कृषि फसलों, मसाले वाले पौधों के साथ साथ नारियल की भी अच्छी पैदावार होती

है। अतः बस्तर जैसे अशांत क्षेत्रों में नारियल की खेती को बढ़ावा देकर रोज़गार के अवसर प्राप्त किए जा सकते हैं। बस्तर संभाग में जिलेवार नारियल के उत्पादन के आँकड़े निम्नानुसार है जो नारियल विकास बोर्ड, कोंडागाँव तथा उद्यानिकी विभाग, कोंडागांव द्वारा प्राप्त किया गया है।

क्र. सं.	जिला	क्षेत्र (हे.)	नारियल उत्पादन (लाखों में)	उत्पादकता (प्रति हेक्टर)
1.	बीजापुर	86	4.13	4802
2.	दंतेवाड़ा	122	5.61	4598
3.	जगदलपुर	222	9.32	4198
4.	कांकेर	203	7.71	3798
5.	कोंडागाँव	501	21.06	4204
6.	नारायणपुर	271	11.38	4199
7.	सुकमा	70	2.91	4214
	कुल योग	**1475**	**62.42**	**4287.6**

नारियल एक ऐसा वृक्ष है जिसके सभी भाग किसी न किसी रूप में उपयोग में लाए जाते हैं। नारियल की खेती से किसानों की आमदनी में बढ़ोत्तरी लायी जा सकती है। खाद्य उत्पादों के निर्माण में ही नहीं विभिन्न प्रकार के खाद्येतर उत्पादों के निर्माण में, शिल्पकला में तथा इमारती लकड़ी आदि में नारियल का अपना वर्चस्व है। कम लागत से लेकर अधिक लागत तक नारियल से जुड़े हुए व्यवसाय किए जा सकते हैं।

और बात करें बस्तर में नारियल की खेती से रोज़गार के अवसर की तो यहाँ छोटे से बड़े स्तर तक नारियल के व्यवसाय स्थापित किए जा सकते हैं जिससे कई लोगों को आय की प्राप्ति होगी एवं साथ ही साथ रोज़गार के अवसर भी प्राप्त होंगे।

नारियल की खेती से रोज़गार के अवसर और आमदनी में वृद्धि

- नारियल बाग में नारियल पेड़ों के बीच की जगह मौसमी और दीर्घकालिक फसलों को लगाकर नारियल की खेती से रोज़गार के अवसर और आमदनी बढ़ायी जा सकती है। साथ साथ दुधारू पशुओं का पालन, मुर्गी पालन और मत्स्य पालन भी किए जा सकते हैं।
- नारियल की मुख्य रूप से लंबी और बौनी किस्में होती हैं। इन किस्मों के अच्छी तरह उत्पादन देने वाले तंदुरुस्त, रोग-कीटों के प्रकोप से मुक्त और जल्दी फलने लगे पेड़ों को चुनकर उन पर संकरण कार्य करके संकर नारियलों को बढ़ाकर उनकी बुआई करके संकर नारियल पौधशाला लगायी जा सकती है। संकर नारियल पौधों की बिक्री करने से आमदनी में वृद्धि हो जाती है।
- स्वसहायता समूहों द्वारा नारियल की खेती करके अथवा वहाँ उपस्थित नारियल के बागों से नारियल के पत्ते एवं फलों को एकत्र करके उनके उत्पाद बनाए जा सकते हैं। डाब और नारियल की तुड़ाई करके बिक्री की जा सकती है। नारियल के पत्तों से चटाई, झाड़ू एवं शोभनीय वस्तुएं तथा फलों से कई प्रकार के खाने की चीज़ें बनाकर बाज़ार में बिक्री करके अच्छी आमदनी प्राप्त की जा सकती है। इससे कई लोगों को रोज़गार भी प्राप्त होंगे।
- नारियल से बनने वाले खाद्य पदार्थों जैसे लड्डू, पापड़ी, बर्फी, बिस्कुट,

महिला स्वसहायता समूह नारियल के सुविधाजनक खाद्यपदार्थों के निर्माण का प्रशिक्षण प्राप्त करते हुए

मन्टु साहानी नारियल उत्पादों की बिक्री करते हुए

बिक्री के लिए नारियल से बनाए गए उत्पाद

आचार, केक, चॉकलेट आदि के निर्माण पर प्रदर्शन सह बीज उत्पादन फार्म, नारियल विकास बोर्ड, कृषि मंत्रालय, भारत सरकार, कोंडागाँव द्वारा चार दिवसीय प्रशिक्षण दिया जाता है।

- व्यक्तिगत रूप से यदि कोई नारियल की खेती करता है तो लगभग सात से आठ साल के पश्चात वे फलदायी तो हो ही जाते हैं उससे पहले उसके अन्य भागों का उपयोग हम कर सकते हैं। इसी क्रम में हमारे कोंड़ागांव में ही निवासरत अठारह साल का एक बालक जिसका नाम मन्टू है, पिछले सात-आठ सालों से नारियल विकास बोर्ड से नारियल एवं डाब नारियल लेकर इनकी बिक्री कर अपनी जीवनशैली को सुधारा और वह अभी अपने नारियल उत्पाद जैसे लड्डू, पापड़ी, बर्फी, बिस्कुट, नारियल गरी आदि बेचकर अच्छी आमदनी प्राप्त कर रहा है।

- यदि इसे और बड़े स्तर पर करना चाहे तो अपने आसपास की जगह में मिलने वाले नारियल बागों से डाब नारियल एकत्र कर उससे डिब्बा बंद नारियल पानी उत्पाद बनाकर बड़े पैमाने पर उद्योग कर सकता है। इसकी प्रौद्योगिकी नारियल विकास बोर्ड में उपलब्ध है और बोर्ड प्रसंस्करण इकाई शुरू करने के लिए वित्तीय सहायता भी देते हैं।

- नारियल से वाणिज्यिक महत्ववाले कई प्रकार के खाद्य एवं खाद्येतर उत्पन्न बनाए जा सकते हैं जैसे कि नारियल पानी से नारियल सिरका, नारियल से नारियल चिप्स, डेसिक्केटड नारियल, नारियल तेल, वेर्जिन नारियल तेल, नारियल खोपड़ी पाउडर, खोपड़ी कोयला, सक्रियित कार्बन आदि। इस श्रेणी में सबसे नवीनतम उत्पाद है नीरा। नारियल के अनखुले पुष्पगुच्छ को काटकर नीरा उतारी जाती है। यह अत्यंत पौष्टिक स्वास्थ्य पेय है। बाज़ार में इन सब नारियल उत्पादों की बड़ी मांग होती है। इन सारे उत्पादों के उत्पादन के लिए नारियल विकास बोर्ड वित्तीय सहायता देते हैं।

मशीन लेकर अभ्यास हेतु जा रहे प्रशिक्षणार्थी

प्रदर्शन सह बीज उत्पादन फार्म, नारियल विकास बोर्ड, कृषि मंत्रालय, भारत सरकार, कोंडागांव द्वारा नारियल पेड़ पर चढ़ने का छः दिसवीय प्रशिक्षण दिया जाता

केन्द्रीय कृषि राज्य मंत्री श्री मोहनभाई कल्याणजीभाई कुंदरिया

प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में मंत्रि मंडल का विस्तार करते हुए उनकी सलाह पर राष्ट्रपति द्वारा नए नियुक्त मंत्रियों में श्री मोहनभाई कल्याणजीभाई कुंदरिया ने 9 नवंबर 2014 को केन्द्रीय कृषि राज्य मंत्री का पद ग्रहण किया। श्री मोहनभाई कल्याणजीभाई कुंदरिया ने गुजरात के राजकोट निर्वाचन क्षेत्र से 16वाँ लोकसभा चुनाव जीता था। वे उद्योगपति और जानेमाने समाज कार्यकर्ता हैं।

63 वर्ष आयु के श्री कुंदरिया पहले गुजरात सरकार के ग्रामीण विकास मंत्री रह चुके हैं, जिन्होंने गुजरात के 12वें विधान मंडल में राजकोट के तंकारा निर्वाचन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया था। मई 2014 में 16वाँ लोकसभा चुनाव जीतने के बाद 1 सितंबर, 2014 से वे रासायनिक और उर्वरक पर संसदीय स्थायी समिति के सदस्य के रूप में कार्य कर रहे हैं।

वे गुजरात के मोरबी जिला के निवासी हैं और उद्योगपति, राजनैतिक एवं समाज कार्यकर्ता के रूप में अपनी कर्म भूमि में कार्य करते श्री कुंदरिया जी का कारोबार कृषि आधारित है।

है। उद्यानिकी तथा कृषि विभाग के सहयोग से विभिन्न जिलों में जैसे दन्तेवाड़ा, नारायणपुर और बीजापुर के नक्सल प्रभावित क्षेत्रों एवं जगदलपुर और कोंडागांव में समय समय पर नारियल पेड़ पर चढ़ने का प्रशिक्षण दिया जाता है जहाँ उन्हें नारियल वृक्ष पर चढ़ने की मशीन भी मुफ्त प्रदान की जाती है। प्रशिक्षण के माध्यम से उन्हें नारियल की खेती करने का सुझाव दिया जाता है, ताकि उनकी आमदनी में बढ़ोत्तरी हो सके। इसके अंतर्गत संकरण कार्य करने के लिए भी प्रशिक्षण दिया जाता है। प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात वे अन्य नारियल बागों में प्रति पेड़ तुड़ाई की दर निर्धारित कर अपनी आय बढ़ा सकते हैं तथा एक नए रोज़गार की तरफ अपने कदम बढ़ा सकते हैं।

बस्तर की जलवायु को ध्यान में रखते हुए नारियल की खेती भली प्रकार से की जा सकती है। नारियल की खेती के साथ साथ किसान भाई अंतरा फसलों की खेती करके अतिरिक्त आय प्राप्त कर सकते हैं। अंतरा फसलों के रूप में मसाले वाली फसलें जैसे काली मिर्च, दालचीनी, कॉफी, कोको इत्यादि से किसानों को अच्छी कमाई मिलेगी और उनकी आय में भी वृद्धि होगी। बोर्ड के कोंडागाँव स्थित प्रदर्शन सह बीज उत्पादन फार्म में नारियल की खेती करने के लिए उपयुक्त उच्च गुणवत्ता वाली लंबी और बौनी किस्म के नारियल के पौधे उपलब्ध हैं।

नारियल की खेती करने से ज़मीन और मिट्टी का सदुपयोग भी हो जाएगा और रोज़गार के अवसर भी खूब प्राप्त होंगे। नारियल की खेती से उपलब्ध अवसरों का सफलतापूर्वक लाभ उठाने से नारियल किसान की आमदनी में बढ़ोत्तरी आ जाएगी।

कृषक बंधु नारियल की खेती एवं उससे संबंधित किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए सहायक निदेशक, नारियल विकास बोर्ड, प्रदर्शन सह बीज उत्पादन फार्म, कोपाबेडा, जिला-कोंडागांव से संपर्क कर सकते हैं।

दूरभाष एवं फैक्स-07786 242443
ई-मेल -cdbkgn1987@gmail.com

नारियल तेल के स्वास्थ्य लाभ

के.बी.हेब्बार और एम.अरिवलगन
प्रभाग अध्यक्ष और वैज्ञानिक, पादप कायकी, बयोकेमिस्ट्री और फसलोत्तर प्रौद्योगिकी,
केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड

नारियल तेल परिपक्व नारियल की गरी से निकाला जाने वाला खाद्य तेल है। इसमें तकरीबन 90 प्रतिशत संतृप्त वसा निहित है। यह तेल मध्यम श्रृंखला वसा अम्लों से संपुष्ट है और कुछ अनन्य विशेषताएं दर्शाता है। हाल में, फंक्शनल खाद्य तेल के रूप में वेर्जिन नारियल तेल की लोकप्रियता बढ़ती जा रही है। खाद्य और औद्योगिक प्रयोजनों के लिए नारियल तेल का व्यापक उपयोग होता आ रहा है। कई पीढ़ियों से उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में लाखों लोगों के आहार में वसा का प्राथमिक स्रोत नारियल तेल ही है। खाद्य पदार्थों, औषधियों और उद्योग के क्षेत्र में इसके कई उपयोग होते हैं। नारियल तेल अत्यधिक ताप स्थिरता रखने के कारण तलना या भूनना जैसे उच्च तापमान पर खाना बनाने वाली प्रक्रियाओं में उपयुक्त होता है। इसकी स्थायी प्रकृति के कारण यह धीमी गति से ऑक्सीकृत होता है और इसलिए यह तेल जल्दी बासी नहीं होता है तथा संतृप्त वसा संघटक उच्च मात्रा में निहित रहने के कारण दो साल तक खराब नहीं होता है। उत्पादन विधियों के आधार पर नारियल तेल को परंपरागत, परिष्कृत और वेर्जिन नारियल तेल में वर्गीकृत किया जाता है।

परंपरागत नारियल तेल

नारियल तेल खोपड़े से बनाया जाता है। नारियल की सूखी गरी को खोपड़ा कहा जाता है। यह धुआँ, धूप या भट्ठी में सुखाकर या एक साथ इन तीनों विधियों का प्रयोग करके तैयार किया जाता है। एक्स्पेलर से ज्यों का त्यों निकाला जाने वाला कच्चा, बिना फिल्टर किया गया और बिना कोई अतिरिक्त पदार्थ मिलाया गया तेल को परंपरागत नारियल तेल कहते हैं। कभी-कभी इसे परिशुद्ध नारियल तेल कहा जाता है ताकि परिष्कृत, ब्लीच किया गया, निर्गन्धीकृत नारियल तेल जिसे सामान्यतया परिष्कृत नारियल तेल कहता है, से अंतर स्पष्ट हो। खोपड़े से निकाला गया अपरिष्कृत नारियल तेल खपत के लिए उपयुक्त नहीं होता है और इसे परिशुद्ध बनाना अनिवार्य है। यह इसलिए है कि खोपड़ा सुखाने का तरीका ज्यादातर साफ और स्वच्छ नहीं होता है।

परिष्कृत नारियल तेल

आरबीडी नारियल तेल खोपड़े से वाणिज्यिक प्रयोजनों के लिए उत्पादित अंतिम मानक उत्पाद है। आरबीडी का मतलब है परिष्कृत, ब्लीच किया गया और निर्गन्धीकृत। परंपरागत नारियल तेल को अच्छी गुणवत्ता के बनाने के लिए और अधिक प्रसंस्करण की ज़रूरत है। उच्च ताप में तेल निर्गन्धीकृत किया जाता है और इसमें निहित गंदगी को निकालने के लिए चिकनी मिट्टी के माध्यम से छाना (ब्लीचिंग) जाता है। मुक्त वसा अम्लों को निकालने और लंबे समय तक सुरक्षित रखने के लिए आमतौर पर सोडियम हाइड्रोक्साइड का प्रयोग किया जाता है।

वेर्जिन नारियल तेल

वेर्जिन नारियल तेल नारियल की कच्ची गरी से बनाया जाता है न कि खोपड़े से। इसे परिष्कृत बनाने के लिए रासायनिकों और उच्च तापमान का प्रयोग नहीं किया जाता है। वेर्जिन नारियल तेल के उत्पादन के लिए फिलहाल दो प्रमुख प्रक्रियाएं अपनाई जाती हैं:

1. नारियल की कच्ची गरी को शीघ्र सुखाने के बाद निचोड़कर तेल निकाला जाता है। इस विधि में नारियल गरी को शीघ्र सुखाया जाता है और यांत्रिक साधनों के सहारे तेल निकाला जाता है।

2. नम पेषणः इस विधि में कच्ची नारियल गरी को बिना सुखाए तेल निकाला जाता है। गरी निचोड़कर पहले नारियल दूध निकाला जाता है। बाद में दूध से तेल अलग किया जाता है। दूध से तेल निकालने के लिए दूध उबालना, किण्वन, प्रशीतन, एनज़ाइमों का प्रयोग, यांत्रिक सेंट्रिफ्यूग जैसी विधियाँ अपनायी जाती हैं।

नारियल तेल का संघटन, भौतिक और रासायनिक विशेषताएं

नारियल तेल में नब्बे प्रतिशत से अधिक संतृप्त वसा अम्ल है, साथ साथ बहुत कम मात्रा में एकल असंतृप्त वसा अम्ल और बहु असंतृप्त वसा अम्ल जैसे कुछ असंतृप्त वसा अम्ल भी निहित हैं। नारियल तेल में मुख्यतः मध्यम श्रृंखलावाले ट्राइग्लिसेराइड निहित हैं, इसके साथ लगभग 92 प्रतिशत संतृप्त वसा अम्ल, 6 प्रतिशत एकल असंतृप्त वसा अम्ल और 2 प्रतिशत बहु असंतृप्त वसा अम्ल भी हैं । नारियल तेल में निहित संतृप्त वसा अम्लों में मुख्यतः 44.6 प्रतिशत लॉरिक अम्ल, 16.8 प्रतिशत मिरिस्टिक अम्ल, 8.2 प्रतिशत पामिटिक अम्ल और 8 प्रतिशत कैप्रिलिक अम्ल मौजूद हैं। यद्यपि इसमें सात विभिन्न संतृप्त वसा अम्ल निहित हैं, इसका एकमात्र एकल असंतृप्त वसा अम्ल ओलीक अम्ल और एकमात्र बहु असंतृप्त वसा अम्ल लिनोलीक अम्ल हैं।

संतृप्त वसा अम्ल

संतृप्त वसा अम्लों में 40 प्रतिशत से अधिक हिस्सा लॉरिक अम्ल का है और

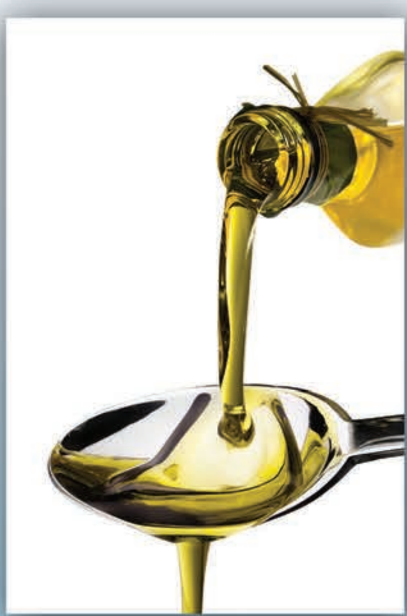

इसके बाद कैप्रिक अम्ल, कैप्रिलिक अम्ल, मिरिस्टिक अम्ल और पामिटिक अम्ल आते हैं। बहु असंतृप्त वसा अम्ल के रूप में लिनोलिक अम्ल और एकल असंतृप्त वसा अम्ल के रूप में ओलीक अम्ल निहित हैं। नारियल में गैलिक अम्ल मौजूद है जोकि एक फिनोलिक अम्ल है। नारियल तेल को महक और जायका प्रदान करने वाले घटक ये पोलीफिनोल माने जाते हैं और वेर्जिन नारियल तेल में ये पोलीफेनोल भरपूर मात्रा में निहित हैं। *बीटेइन, एथनोलैमाइड, ईथोक्साइलेट, फैटी एस्टर, फैटी पोली सोरबेट, मोनोग्लिसेराइड और पोलियोल एस्टर, फैटी क्लोराइड, फैटी एल्कोहॉल सल्फेट और फैटी एल्कोहॉल ईथर सल्फेट* ये सभी फैटी एल्कोहॉल के संजात हैं।

उत्पाद विविधीकरण के ज़रिए नारियल तेल का मूल्यवर्धन

अपरिष्कृत (कच्चा) नारियल तेल 24-25^{0}सेल्शियस (76^{0}फैरनहीट) पर गल जाता है और 177^0 सेल्शियस (350^0 फैरनहीट) पर धुआँ बनने लगता है। जबकि परिष्कृत नारियल तेल की धूम्र बिंदु इससे उच्चतर 232^{0}सेल्शियस (450^{0}फैरनहीट) है। सभी तेलों में से नारियल तेल सबसे अधिक स्थिरता दर्शाता है। इसलिए इसका बहुत धीरे से ऑक्सीकरण होता है और यह बासीपन रोधी होता है। लंबे समय तक सुरक्षित रखने के लिए ठोस पदार्थ के रूप में इसका भंडारण करना सबसे उत्तम है (अर्थात 24.5^{0}सेल्शियस (76^0 फैरनहीट)पर)।

स्वास्थ्य लाभ

नारियल तेल के स्वास्थ्य लाभों में केश संरक्षण, त्वचा संरक्षण, तनाव से राहत, कोलेस्ट्रॉल स्तर बनाए रखना, वज़न कम करना, रोगप्रतिरोधिता बढ़ाना, पाचन शक्ति और चयापचय क्रिया ठीक रखना, गुर्दे की बीमारी, हृदय रोग, उच्च रक्तचाप और मधुमेह से राहत, दांतों का संरक्षण और हड्डियाँ मज़बूत बनाना आदि शामिल हैं। नारियल तेल में मौजूद लॉरिक अम्ल, कैप्रिक अम्ल और कैप्रिलिक अम्ल एवं इसके सूक्ष्मजीवरोधी, निरोक्सीकारक, फफूँदरोधी, जीवाणुरोधी एवं प्रशमन विशेषताएं नारियल तेल के स्वास्थ्यवर्धक गुणों के

स्रोत मानी जा सकती हैं। मनुष्य का शरीर लॉरिक अम्ल को मॉनोलॉरिन में बदलता है जो हेर्पिस, इंफ्लुएन्ज़ा, साइटोमेगलोवाइरस और यहाँ तक कि एचआईवी से निपटने में सहायक है। यह, *लिस्टेरिया मोनोसाइटोजीन्स* और *हेलिकोबैक्टर पाइलोरी* जैसे घातक जीवाणु और *जियार्डिया लैंब्लिया* जैसे घातक प्रोटोज़ोआ के खिलाफ लड़ने में मदद करता है। नारियल तेल के इन स्वास्थ्य लाभों के फलस्वरूप इसकी वास्तविक क्रिया विधि से अनजान होते हुए भी भारत की परंपरागत चिकित्सा विधि आयुर्वेद में इसका व्यापक उपयोग हो रहा है। नारियल अनुसंधान केन्द्र ने परंपरागत और आधुनिक चिकित्सा में इसके विविध लाभों का संकलन किया है।

हृदय के लिए स्वास्थ्यपूर्ण तेल

लोगों के बीच यह गलत अवधारणा फैली हुई है कि नारियल तेल हृदय के लिए अच्छा नहीं है। यह इसलिए कहा जाता है कि नारियल तेल में बड़ी मात्रा में संतृप्त वसा निहित हैं। संतृप्त वसा स्वास्थ्य के लिए अच्छी नहीं मानी जाती है और कई स्वास्थ्य प्राधिकरण आहार के रूप में यह कम लेने की सलाह देते हैं। ये सिफारिश उच्च मात्रा में संतृप्त वसा अम्ल की खपत और हृदय रोग के संबंध में किए गए अध्ययन से उभर आया है। फिर भी, संतृप्त वसाएं स्वभाव से पूरी तरह भिन्न जातीय होती हैं और संभवतः स्वास्थ्य पर इसके प्रभावों में भी। असल में इनकी संरचना के आधार पर संतृप्त वसाओं को हृस्व श्रृंखला, मध्यम श्रृंखला और दीर्घ श्रृंखला वसाओं में उप-वर्गीकृत किया जा सकता है, जबकि सारे एकल और बहु

असंतृप्त वसा अम्ल दीर्घ श्रृंखला वाले होते हैं। हृस्व श्रृंखला वाले वसा अम्लों में छः या इससे कम कार्बन अणु होते हैं, मध्यम श्रृंखला वसा अम्लों में 8-12 कार्बन अणु होते हैं और दीर्घ श्रृंखला वसा अम्लों में सामान्यतः 14 या इससे अधिक कार्बन अणु होते हैं। संतृप्त वसा और असंतृप्त वसा के प्रभावों की तुलना करते हुए चलाए गए अधिकांश अध्ययनों में उन वसा अम्लों पर ध्यान केन्द्रित किया गया है जिनमें वसा अम्ल दीर्घ श्रृंखला वसा अम्लों के रूप में निहित हैं।

हृस्व श्रृंखला वसा अम्ल और मध्यम श्रृंखला वसा अम्ल दीर्घ श्रृंखला वसा अम्लों से अधिक विपरीत चार्ज के होते हैं और लसीका तंत्र में परिवहन हेतु कैलोमाइक्रोनों में बंद करने की ज़रूरत नहीं पड़ती है। इसलिए नारियल तेल और अन्य मध्यम श्रृंखला वसा अम्ल कोलेस्ट्रोल चक्र में प्रवेश नहीं करते हैं और कार्निटिन के बगैर भी इसका चयापचय किया जा सकता है, जो इनकी चयापचय क्रिया दर निर्धारित करने वाला सबसे धीमा चरण है और यह बीटाऑक्सीकरण के लिए माइटोकोंड्रिया में प्रवेश अत्यंत सुगम बनाता है। उत्पाद विविधीकरण के ज़रिए नारियल के मूल्यवर्धन में कुदरती, हाइड्रोजनीकृत नहीं किया गया नारियल तेल एचडीएल कोलेस्ट्रॉल बढ़ाता है और कोलेस्ट्रॉल प्रोफाइल बेहतर बनाता है। एचडीएल अच्छा कोलेस्ट्रॉल होता है जो दिल की बीमारी से सुरक्षित रखने में सहायता करता है। खून का कुल कोलेस्टॉल जिसमें एचडीएल(अच्छा) और एलडीएल(खराब) कोलेस्ट्रॉल शामिल हैं, दिल की बीमारी का खतरा सूचित करने में अपर्याप्त है। दिल की बीमारी का खतरा जानने का अधिक सटीक तरीका दोनों प्रकार के कोलेस्ट्रॉलों को पृथक करना है। अतः दिल की बीमारी का खतरा अधिक सटीक सूचित करने वाले सूचक के रूप में खराब और अच्छे कोलेस्ट्रॉल के बीच के अनुपात को वैश्विक तौर पर मान्यता दी गई है। एचडीएल बढ़ाने की नारियल तेल की प्रवृत्ति के कारण कोलेस्ट्रॉल अनुपात सुधरता है जिससे दिल की बीमारी का खतरा कम होता है। उन लोगों में दिल की बीमारी का खतरा कम पाया गया है जो अपने दैनिक आहार में परंपरागत रूप से

अधिक मात्रा में नारियल तेल की खपत करते हैं और इनके खून का कोलेस्ट्रॉल स्तर सामान्य रहता है। विभिन्न देशों के लोगों के बीच किए गए अध्ययन इस तथ्य का समर्थन करते हैं। अनुसंधान से पता चला है कि जो लोग बड़ी मात्रा में नारियल तेल की खपत करते हैं उनका हृदय काफी स्वास्थ्यपूर्ण रहता है। नारियल तेल की खपत कम करते हुए इसके एक हिस्से के बदले बहु असंतृप्त वसा की खपत करने के परिणामस्वरूप खून के कोलेस्ट्रॉल स्तर पर बदलाव पाया गया जो दिल की बीमारी का खतरा कम करने में अहम था। बहु असंतृप्त वसा की तुलना में नारियल तेल खून का थक्का बनने की प्रवृत्ति कम करता है।

वज़न कम करना

नारियल तेल वज़न कम करने में काफी फायदेमंद है। इसमें ह्रस्व और मध्यम श्रृंखला वसा अम्ल निहित हैं जो अधिक वज़न बढ़ना कम करता है। यह आसानी से पच जाता है और थाइरोइड एवं एनज़ाइम तंत्र स्वस्थ तरीके से कार्य करने में मदद करता है। अग्नाशय पर अधिक दबाव डाले बिना ही शरीर की चयापचय क्रिया बढ़ाता है जिससे अधिक ऊर्जा जल जाती है और मोटापा एवं अतिभार से पीड़ित लोगों का वज़न घट जाता है। अतः उष्णकटिबंधीय तटीय क्षेत्रों में रहने वाले लोग जो खाना पकाने के तेल के रूप में रोज़ाना नारियल तेल का इस्तेमाल करते हैं, प्रायः मोटा या अतिभार वाले नहीं होते हैं। मध्यम श्रृंखला वसा अम्ल बनाम दीर्घ श्रृंखला वसा अम्ल की खपत के आधार पर चलाए गए दोनों अध्ययनों में मध्यम श्रृंखला वसा अम्ल की खपत से ऊर्जा का अधिक व्यय और वसा ऑक्सीकरण नोट किया गया, जिससे यह निष्कर्ष निकला कि वज़न बढ़ना और मोटापा रोकने के लिए मध्यम श्रृंखला वसा अम्ल सहायक हो सकता है। सेंट ओंगे और अन्य (2008) ने मध्यम श्रृंखला वसा अम्लों पर अनुसंधान चलाया और पाया कि चयापचयी खतरा कारकों पर विपरीत असर डालने के डर के बिना ही वज़न कम करने के कार्यक्रम में नारियल तेल का प्रयोग किया जा सकता है। उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि चयापचयी खतरों पर संतृप्त वसा के प्रभावों पर चर्चा करते समय श्रृंखला की लंबाई के अनुसार पहचानना ज़रूरी है।

पाचन प्रक्रिया

नारियल तेल की आंतरिक खपत मुख्यतः खाना बनाने के तेल के रूप में होती है। पाचन तंत्र को स्वस्थ बनाने में नारियल तेल मदद करता है और इसप्रकार यह आंत्र एवं पाचन संबंधी विविध समस्याओं से बचाता है। नारियल तेल में मौजूद संतृप्त वसा में सूक्ष्मजीवीय विशेषताएं निहित हैं और यह बदहज़मी के कारक विविध जीवाणु, फफूँद, परजीवी आदि से लड़ने में मदद करता है। मध्यम श्रृंखला वसा अम्ल की खपत का सबसे उत्कृष्ट लाभ यह है कि इसे पचाने के लिए जिगर की ज़रूरत नहीं पड़ती है। इसका मतलब है इससे शरीर को तत्काल ऊर्जा प्राप्त होती है और शरीर की चयापचय क्रिया दर में वृद्धि होती है जिससे अधिक ताप उत्पादन एवं बेहतर रक्तसंचार संभव हो जाता है। व्रणीय बृहदांत्रशोथ(अल्सरेटिव कोलाइटिस) एक दीर्घकालीन रोग है जो पाचन प्रक्रिया में अस्वस्थता पैदा करके हम जो आहार खाते हैं उसके पचने में बाधा डालता है। अधिकांश तेलों और वसाओं से भिन्न नारियल तेल आंत्र की जगह पेट में ही विघटित होता है। दूसरे शब्दों में यह कह सकते हैं कि अल्सरेटिव कोलाइटिस के शिकार लोगों में संवेदनशील बृहदांत्र क्षेत्र तक पहुंचने से पहले ही यह पच जाता है। फाउंडेशन फॉर आल्टरनेटिव एंड इंटेग्रेटिव मेडिसिन (एफएआईएम) यह सिफारिश देती है कि पाचनसंबंधी बीमारियों जैसे आंत के सूजन से पीड़ित लोगों को इसका रोगलक्षण कम करने के लिए अन्य तेलों की जगह नारियल तेल का उपयोग करना चाहिए। जहाँ तक पाचन संबंधी रोगों की बात आती है, भोजन नाली के स्वास्थ्य के लिए उपयुक्त आहार संबंधी नए क्षेत्र पर और अधिक अनुसंधान चलाने की ज़रूरत है। अल्सरेटिव कोलाइटिस से पीड़ित लोग अपने आहार से सारे पोषकतत्वों का अवशोषण करने में असमर्थ हो सकते हैं। एफएआईएम के अनुसार नारियल तेल कुछ विटामिनों और खनिजों की अवशोषण दर सुधारने में मददगार रहा है, भले ही यह साबित करने के लिए उन्होंने अधिकांशतः शिशुओं पर हुए प्रभाव को रिपोर्ट किया है।

नीरोगण और रोग-संक्रमण

नारियल तेल अपनी फफूँदरोधी, वायरसरोधी और जीवाणुरोधी विशेषताओं के कारण कई प्रकार के रोगसंक्रमण में काफी फायदेमंद साबित हुआ है। संक्रमणयुक्त भागों पर लगाने से वहाँ पर एक रासायनिक परत बनती है जो संक्रमित शरीर भाग को बाहरी धूल, हवा, फफूँद,

बैक्टीरिया और वायरस से सुरक्षित रखता है। चोट लगे भागों पर नारियल तेल लगाना भी उचित है क्यों कि क्षतिग्रस्त ऊतकों की मरम्मत करके यह घाव भरने की प्रक्रिया त्वरित करता है। नारियल तेल कैंडिडा फफूँद की कतिपय प्रजातियों के खिलाफ प्रभावी पाया गया, भले ही यह दूसरों के प्रति फायदेमंद नहीं रहा है। बच्चों में सामूहिक मेलमिलाप से होनेवाले न्यूमोणिया के उपचार में मौखिक रूप से नारियल तेल लेना फायदेमंद साबित हुआ। नारियल अनुसंधान केन्द्र, यूएसए के अनुसार इन्फ्लुएन्ज़ा, खसरा, हेपाटाइटिस, हेर्पिस आदि रोगों के कारक वायरस को नारियल तेल मारता है। नारियल तेल मिश्रित IV आम्पिसिलिन लेने से मात्र IV आम्पिसिलिन लेने की अपेक्षा श्वसन दर और फेफड़ों की आवाज़ जल्दी सामान्य स्थिति में होते पाया गया। नारियल तेल में निहित मोनोलॉरिन 14 मानव आरएनए एवं डीएनए आवृत वायरस के खिलाफ कृत्रिम परिवेश में वायरस मारने की क्रिया निर्दशित की। छह आम एंटीबयोटिक दवाओं के साथ प्रयोगशाला में किए गए तुलनात्मक अध्ययन में प्राथमिक और द्वितीय स्तर की त्वचा संबंधी बीमारियों के खिलाफ मोनोलॉरिन का प्रभाव दर्शित हुआ। नारियल तेल कैंडिडयासिस, दाद, एथलीट फुट, मूँह के छाले, डायपर की फुन्सियाँ आदि के कारक फफूँद और खमीर के खिलाफ भी असरदार पाया गया।

बालों की देखभाल

नारियल तेल केश के लिए उत्तम कुदरती पोषकतत्व है। यह अच्छी तरह बाल बढ़ने में सहायक होने के साथ साथ बालों की चमक बढ़ाता है। यह क्षतिग्रस्त

और स्वस्थ बालों का प्रोटीन नुकसान कम करता है। यह क्षतिग्रस्त बालों के पोषण के लिए अनिवार्य प्रोटीन प्रदान करता है। अनुसंधान अध्ययन सूचित करता है कि हाइग्रल फैटिग, माने बालों का सूजन और संकुचन, से बालों को होने वाले नुकसान से संरक्षण देने के लिए नारियल तेल फायदेमंद है। हाइग्रल फैटिग बालों को नुकसान पहुंचाने वाला एक घटक है, जिससे नारियल तेल बेहतर संरक्षण देता है क्योंकि मिनरल तेलों के मुकाबले नारियल तेल बेहतर तरीके से बालों के अंदर घुस जाता है। रेले और मोहाइल (2003) ने पाया कि क्षतिग्रस्त और स्वस्थ बालों में बाल धोने से पहले और बाद में नारियल तेल का इस्तेमाल करने पर अन्य तेलों की तुलना में प्रोटीन नुकसान कम हुआ है। नारियल तेल, लॉरिक अम्ल का ट्राइग्लिसेराइड (प्रधान वसा अम्ल) होने के नाते बालों की प्रोटीन के साथ अच्छा मेल खाता है और इसके कम अणु भार और सीधी रेखीय श्रृंखला के कारण अन्य तेलों की तुलना में बालों में आसानी से घुसता है।

त्वचा की देखभाल

नारियल तेल त्वचा के लिए बेहतरीन मालिश तेल है। यह शुष्क त्वचा सहित सभी प्रकार की त्वचा में फायदेमंद मोइस्चराइसर के रूप में काम करता है। त्वचा पर नारियल की खूबियों की तुलना हम मिनरल तेल से कर सकते हैं। त्वचा पर मिनरल तेल से भिन्न नारियल तेल लगाने से किसी भी प्रकार का विपरीत असर बिलकुल भी उत्पन्न नहीं होता है। इसलिए नारियल तेल त्वचा का रूखापन और शल्की त्वचा के उपचार में काफी सुरक्षित है। ज़िरोसिस त्वचा की एक आम बीमारी है जिसके लक्षण हैं शुष्क, रूखी, शल्की और खुजली वाली त्वचा जो त्वचा अवरोधक की क्रियाओं में होने वाली क्षति से उत्पन्न होती है और मोइस्चराइज़रों से उपचार किया जाता है। सदियों से

उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों के लोग मोइस्चराइज़र के रूप में नारियल तेल का प्रयोग फायदेमंद तरीके से करते आ रहे हैं। हाल में, त्वचा पर रोगाणुरोधी प्रभाव के लिए भी नारियल तेल फायदेमंद पाया गया है। त्वचा की जलयोजन प्रक्रिया सुधारने और त्वचा की सतह पर लिपिड स्तर बढ़ाने में नारियल तेल प्रभावी पाया गया है। इसके प्रयोग से त्वचा पर झुर्रियाँ निकलना और त्वचा की झोल होना कम होता है जो उम्र बढ़ने के साथ पाया जाता है। नारियल तेल सराइअसिस, डेर्माटाइटिस, एक्ज़िमा और त्वचा की अन्य बीमारियों के उपचार में उपयोगी पाया गया है। इसलिए साबुन, लोशन, क्रीम आदि त्वचा की देखभाल के लिए उपयोग किए जाने वाले उत्पादों के रूप में मूल्यवर्धन हेतु उत्पाद विविधीकरण के लिए नारियल तेल का इस्तेमाल होता है। नारियल तेल इसकी निरोक्सीकारी विशेषताओं की वजह से समयपूर्व बुढ़ापा और डिजनरेटिव रोग आदि रोकने में मददगार रहा है।

दांतों की देखभाल

अयरलैंड के एथलॉन इंस्टिट्यूट ऑफ टेकनोलॉजी के अनुसंधानकर्ताओं ने पाया है कि पचने के बाद नारियल तेल दांतों की सड़न के कारक बैक्टीरिया से लड़ सकता है। उन्होंने पाया कि नारियल तेल दाँतों की सड़न के प्रमुख कारक बैक्टीरिया *स्ट्रेप्टोकोकस* (और खासतौर पर *स्ट्रेप्टोकोकस म्यूटेन्स*) से काफी प्रभावी तरीके से लड़ता है। इस परिणाम से दांतों के डॉक्टरों के बीच यह उम्मीद जगी है कि भविष्य में आम जनता के दाँतों की सड़न व्यापक रूप से रोकने में नारियल तेल का उपचार काफी फायदेमंद साबित होगा। इसके अतिरिक्त मूँह में छाला पड़ने के प्रमुख कारक खमीर *कैंडिडा एल्बिकन्स* के खिलाफ भी नारियल तेल काफी प्रभावी पाया गया। यह मूँह के स्वास्थ्य संबंधी दूसरी बड़ी समस्या है। कैल्शियम दाँतों में मौजूद प्रमुख तत्व है। चूँकि नारियल तेल शरीर में कैल्शियम का अवशोषण सुगम बनाता है, यह दांत मज़बूत बनाने में सहायक है।

वेर्जिन नारियल तेल के विशेष गुण

वेर्जिन नारियल तेल का वसा अम्लीय संयोजन परंपरागत और परिष्कृत नारियल तेल के समान है, किंतु यह निरोक्सीकारकों जैसे पोली फेनोलिक यौगिक, टोकोफेरोल और फाइटोस्टेरोल से भरपूर है। वेर्जिन नारियल तेल में पाए जाने वाले प्रमुख पोलीफेनोलिक यौगिक प्रोटोकैटेचूइक, वैनिलिक, कैफीक, सिरिंजिक, फेरुलिक और पी-कौमैरिक अम्ल हैं। कई अध्ययनों से सुझाव निकला है कि मनुष्य का स्वास्थ्य बढ़ाने में आहारीय फेनोलिक्स निहित खाद्य पदार्थ की खपत काफी फायदेमंद है। फेनोलिक निरोक्सीकारकों के लाभकारी प्रभावों ने फेनोलिक यौगिकों से संपुष्ट आहार ढूँढ़ने का नया दौर शुरू किया है। परिष्कृत नारियल तेल की तुलना में वेर्जिन नारियल तेल में उच्च मात्रा में फेनोलिक घटक निहित हैं।

यह सुझाव है कि शुष्क विधि से आरबीडी (परिष्कृत, ब्लीच किया गया और निर्गन्धीकृत) प्रक्रिया अपनाने पर नारियल तेल में निहित कुछ फेनोलिक यौगिक काफी अधिक मात्रा में नष्ट हो जाते हैं। परंपरागत नारियल तेल का कुल फेनोलिक संघटक वाणिज्यिक रूप से तैयार किए गए नारियल तेल से सात गुना अधिक है। वेर्जिन नारियल तेल की निरोक्सीकारक क्रियाएं परिष्कृत नारियल तेल की तुलना में काफी उच्च पाया गया। उत्पादित वेर्जिन नारियल तेल की गुणवत्ता 1,1-डाइफिनाइल-2-पाइक्रिलहाइड्राज़िल (डीपीपीएच) रेडियल अपमार्जन क्रिया, कैरोटीन-लिनोलीट ब्लीचिंग क्रिया और रेड्यूसिंग पवर आदि तीन अलग निरोक्सीकारी कसौटियों पर तय की जाती है। उत्पाद विविधीकरण के ज़रिए मूल्यवर्धन करने पर कुल फेनोलिक घटक में काफी अंतर पाया गया। किण्वन विधि से उत्पादित नारियल तेल में कुल फेनोलिक संघटक सबसे अधिक रहा और इसके बाद चिल्लिंग विधि और फिर आरबीड़ी विधि आती है। किण्वन विधि से उत्पादित वेर्जिन नारियल तेल में डीपीपीएच पर ज़बरदस्त अपमार्जन प्रभाव देखा गया और कैरोटीन-लिनोलीट ब्लीचिंग विधि के आधार पर उच्चतम निरोक्सीकारी क्रिया पाई गई। तथापि उच्चतम रेड्यूसिंग पवर चिलिंग विधि से उत्पादित वेर्जिन नारियल तेल में पाया गया। कुल फेनोलिक संघटक और अपमार्जन क्रिया एवं रेड्यूसिंग पवर के बीच आपस में काफी उच्च संबंध पाया गया।

नारियल तेल में कुछ खास प्रकार के वसा अम्ल निहित हैं जो आसानी से पचता है, तत्काल ऊर्जा प्रदान करता है, थाइरोइड क्रियाओं की सहायता करता है (जो रोगहर और रोगप्रतिरोधी तंत्र मज़बूत बनाता है) और पौष्टिक तत्वों का अवशोषण बेहतर बनाता है। इसके अतिरिक्त, चिकित्सा अनुसंधानों से सूचित हुआ है कि नारियल दिल की बीमारी, स्तन और कोलन कैंसर, जिगर की बीमारी, गुर्दे की बीमारी, क्रोन बीमारी, एपिलेप्सी, कैंडिडा, हेर्पिस, इन्फ्लुएंज़ा और कई संक्रामक रोगों से बचाता है।

गर्मियों में पत्ताभक्षी इल्ली से सावधान रहें

आर ज्ञानदेवन
उप निदेशक (विकास), नाविबो, कोची- 11

पत्ता भक्षी इल्ली या कृष्णशीर्ष इल्ली केरल के पालक्काट और तमिलनाडु के पोल्लाची इलाकों में नारियल पेड़ों को गंभीर रूप से हानि पहुँचा रही है। साल भर में इस कीट का प्रकोप पाया जाता है फिर भी गर्मियों में (मार्च-मई) कीट की संख्या में तेज़ वृद्धि पाई जाती है। बढ़वार के लिए अनुकूल परिस्थितियों में इस इल्ली के प्रकोप से नारियल बाग तबाह हो जाता है। तीव्र प्रकोप में नारियल पेड़ों के वयस्क पत्ते भूरे रंग के मृत ऊतक मात्र रह जाते हैं और शिखर के मध्य भाग में मात्र तीन चार युवा पत्ते ही शेष रहते हैं। कीट प्रकोप से फसल का प्रकाश संश्लेषण क्षेत्र कम हो जाता है और उपज में भारी कमी आती है।

प्रकोप के लक्षण

नारियल पत्तों के निचले भाग में अपने उत्सर्जन और रेशमी जाल से बने कोष्ठों की पंक्तियों में सूँडियों के झुंड बसते हैं। ये झुंड नारियल पत्तों के क्लोरोफिल युक्त ऊतकों को खा जाते हैं और पेड़ की प्रकाश संश्लेषण की शक्ति कम हो जाती है। गंभीर प्रकोप के मामलों में पत्तों का हरा रंग खोकर भूरे रंग में पूरा बाग जला हुआ सा दीखता है। अंडाकार में क्रीमी सफेद रंग के अंडे 0.6 से 0.7 मिली मीटर लंबे और 0.3 से 0.4 मिली मीटर चौड़े होते हैं।

जीवन चक्र

कीट पत्तों के निचले भाग में पुराने कोष्ठों के आसपास ही एक दूसरे से दूर अंडे डालते हैं। पाँच दिनों में अंडों से नुकीले पृष्ठभाग की वजह से थोड़ा निचोड़ा बेलन के आकार की सूँडियाँ निकलती हैं। सूँडी की अवस्था में कीट 42 दिन रहते हैं जिसमें प्यूपा पूर्व अवस्था सहित आठ अवस्थाएं होती हैं। सूँडी पूर्ण वृद्धि पर 15 मिली मीटर लंबी और लालिम भूरे रेखाओं के साथ हल्के हरे रंग की होती है। पीठ पर लंबाई में तीन, मध्य में एक और दो रेखाएं पार्श्व भाग में पाई जाती हैं। शीर्ष भूरे से काले रंग का होता है जो अंदर की तरफ मुड़ा हुआ होता है। सूँडी कोष्ठों में रेशमी कोकून में कीट की प्यूपावस्था काटती है। प्यूपा का रंग हल्का या गाढ़ा भूरा रंग होता है। शरीर उदर से पृष्ठभाग तक सपाट , अग्रभाग स्थूल और पृष्ठभाग नुकीला होता है। वयस्क मादा शलभ 10-15 मिली मीटर तक लंबी तथा 20-25 मिली मीटर चौड़ी होती है जबकि नर शलभ आकार में थोड़ा छोटा होता है। शीर्ष और कंठ धूसर रंग का और पंख काले और शल्कयुक्त होता है। मादा शलभ का उदर पुष्ट और नर शलभ का उदर कृश होता है। मादा शलभ 5 दिनों तक और नर शलभ सात दिनों तक जीते हैं। दो महीने में अंडे से लेकर शलभ तक का जीवनचक्र पूरा हो जाता है।

पत्ता भक्षी इल्ली से प्रकोपित नारियल बाग

कीट प्रकोप का प्रबंधन

उचित प्रबंधन रीतियाँ न अपनाने से कीट प्रकोप शीघ्र आसपास के पेड़ों पर फैलता है तथा उपज में महत्वपूर्ण कमी आती है। कीट का प्रकोप रोकने केलिए संस्तुत निवारण उपाय गंभीर रूप से प्रकोपित पेड़ों के 2-3 सूखे बाहरी पत्ते काटकर जलाना है। डाइक्लोरवोस 0.02 प्रतिशत या मालथियोन 0.05 प्रतिशत छिड़कने से कीट का हल्का प्रकोप काबू में रखा जा सकता है। गंभीर प्रकोप केलिए 10 मिली मोनोक्रोटोफोस 10 मिली पानी के साथ पेड़ को जड़ों के द्वारा पिलाएं। यह उपचार करने से पहले पके नारियलों की तुड़ाई

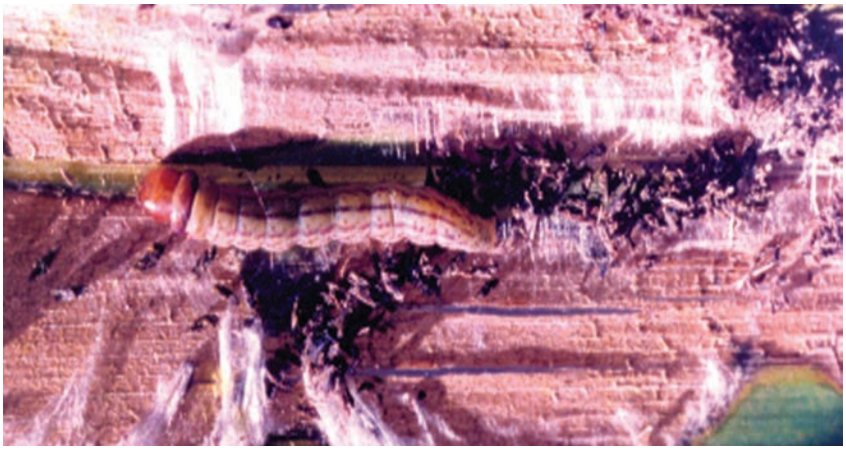

पत्ता भक्षी इल्ली

करनी चाहिए। उपचार करने के 45 दिनों बाद ही अगली तुड़ाई करनी चाहिए। जड़ों के द्वारा दवा पिलाने केलिए एक सक्रिय जड़ पहचानकर तेज़ चाकू से उसे टेढ़ा काट लें, उसे पानी में घुलनीय 10 मिली मोनोक्रोटोफोस 36 और 10 मिली पानी से भरा पोलिथीन बैग में डुबोकर बैग को जड़ से कसकर बाँधके रखें। कीटनाशी का आमेलन होने के बाद, छेद को कोपर ओक्सीक्लोराइड मिलाई गई मृण्मय मिट्टी से भरें। जैव एजेंटों के ज़रिए भी कीट का प्रकोप रोका जा सकता है। कीट की अवस्था को ध्यान में रखकर परजीवियों को बाग में छोड़ा जाता है। पंद्रह दिनों के अंतराल में परजीवियों को छुड़ाएं। सूँडी, प्यूपा पूर्व तथा प्यूपा अवस्थाओं की परजीवियाँ कृषि विभाग, सीपीसीआरआई, नाविबो, राज्य कृषि विश्वविद्यालयों की परजीवी प्रजनन प्रयोगशालाओं से प्राप्त की जा सकती हैं। बेहत्तर नियंत्रण के लिए कीटों की विभिन्न अवस्थाओं हेतु उपयुक्त जैव एजेंटों को बाग में छोड़ना अपेक्षित है। जब बाग में कीटनाशी द्वारा उपचार किया जाता है, परजीवियों को दो-तीन हफ्ते बाद ही वहाँ छोड़ना चाहिए।

Statement of ownership and other particulars about the BHARATIYA NARIYAL PATRIKA

FORM IV
(See Rule 8)

1.	Place of Publication	:	Kochi - 11
2.	Periodicity of Publication	:	Quarterly
3.	Printer's Name	:	Sugata Ghose
	Nationality	:	Indian
	Address	:	Chief Coconut Development Officer Coconut Development Board, Kochi - 11, Kerala.
4.	Publisher's Name	:	Sugata Ghose
	Nationality	:	Indian
	Address	:	Chief Coconut Development Officer Coconut Development Board, Kochi - 11, Kerala
5.	Editor's Name	:	Beena S.
	Nationality	:	Indian
	Address	:	Assistant Director (OL) Coconut Development Board, Kochi - 11, Kerala
6.	Names and address of individuals who own the newpaper and partners or shareholders holding more than one percent of the total capital	:	The periodical is owned by the Coconut Development Board which is a body corporate set up by the Government of India under the Coconut Development Board Act, 1979.

I, Sugata Ghose, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Sd/-

Date : 17-3-2015

(Sugata Ghose)
Publisher

प्रश्नोत्तरी

प्रश्नः ***लाल ताड़ घुन के प्रबंधन के लिए प्रयुक्त फेरोमोन ट्रैप के बारे में सुना है। कृपया इसकी उपयोगिता तथा ट्रैप उपयोग करते समय बरती जाने वाली सावधानी के बारे में जानकारी दें।***

उत्तरः फेरोमोन ट्रैप का प्रयोग लाल ताड़ घुन के एकीकृत कीट प्रबंधन का मुख्य घटक है। इससे एक निश्चित इलाके के लाल ताड़ घुनों की संख्या के बारे में सूचना मिलती है। कीटों की संख्या कम करने के लिए यह अत्यंत प्रभावी है क्योंकि लाल ताड़ घुन को इसमें आकर्षित कर जाल में फँसाकर मार डालते हैं। परंतु यह ध्यान में रखना चाहिए कि केवल फेरोमोन ट्रैप से इस कीट का नियंत्रण नहीं किया जा सकता क्योंकि यह एकीकृत कीट प्रबंधन कार्यक्रम का एक घटक मात्र है। एकीकृत प्रबंधन पद्धति के अंतर्गत अन्य प्रबंधन कार्यक्रम जैसे बाग की सफाई, ताड़ को घाव न पहुँचने देना, गैंडा भृंग के खिलाफ तथा पर्ण विगलन व कलिका विगलन के लिए नियंत्रण उपाय अपनाना, लाल ताड़ घुन के प्रकोप के लिए कीटनाशक से उपचार आदि भी अपनाना चाहिए। आगे, बेहतर परिणाम के लिए क्षेत्र विशेष के किसानों को एक साथ फेरोमोन ट्रैप का प्रयोग करना चाहिए। यह कहना अधिक उचित होगा कि एक इलाके के कीटों के प्रभावी प्रबंधन के लिए उस प्रदेश के सभी किसानों को मिलकर एकीकृत कीट प्रबंधन कार्यक्रम अपनाना चाहिए।

फेरोमोन अधिक दूरी से भी कीटों को आकर्षित करने के लिए सक्षम रासायनिक पदार्थ है। फेरोमोन का वाणिज्यिक रूप थैली / शीशियों (sachet/ vials) में उपलब्ध है। ढक्कनयुक्त 5 लीटर के बकट के ढक्कन से फेरोमोन थैलियों को लटकाना चाहिए। बकट के अंदर विषैला खाना रखना चाहिए। बकट को बोरी से ओढ़ना है जिससे कि आकर्षित घुन आसानी से चढ़कर बकट तक पहुँच सकते हैं। बकट के ऊपरी भाग पर चारों तरफ समान दूरी पर 2.5 x 5 से.मी. के झरोखे बनाना चाहिए जिससे होकर घुन बकट के अंदर प्रवेश करते हैं।

फेरोमोन का प्रयोग नारियल पेड़ को छोड़कर किसी अन्य पेड़ पर करते समय निम्नलिखित बातें ध्यान में रखनी चाहिए।

1. ट्रैप नारियल पेड़ को छोड़कर किसी दूसरे पेड़ पर धरती से 1-1.5 मी. की ऊँचाई पर लटकाएं। नारियल पेड़ पर ट्रैप लटकाने से लाल ताड़ घुन शिखर की ओर आकर्षित हो सकता है।
2. सीधे धूप में ट्रैप न रखें।
3. यद्यपि प्रति हेक्टर के लिए एक ट्रैप वांछित है फिर भी 4-6 हे. के लिए एक ट्रैप पर्याप्त होगा।
4. यह सुनिश्चित करें कि विषैला खाद्य(एक लीटर पानी में 100 ग्रा. पके केले + 2 ग्राम यीस्ट + 2 ग्राम कार्बरिल) बकट के अंदर रखा है।
5. सात दिनों में एक बार ट्रैप से मृत कीटों को निकालकर नया विषैला खाद्य रखना चाहिए। यदि ट्रैप रखने में कोई असुविधा है तो फेरोमोन थैली निकालकर एक बंद डिब्बे में फ्रिज में रखनी चाहिए।
6. मृत कीटों तथा खाद्य अवशिष्टों को गहरा गाड़ देना चाहिए।
7. नियमित रूप से फेरोमोन थैलियों को बदलना चाहिए। साधारणतः एक थैली का 4-5 महीने तक प्रयोग किया जा सकता है।
8. समय-समय पर ट्रैप अलग अलग स्थानों पर रखें।

प्रश्नः ***मेरे बाग में 7 से 8 वर्ष की डी x टी पेड़ों की कोंपल सड़ी हुई सी पाई जाती है। बाहरी पत्ते भी पीले पड़ जाते हैं। इसे कैसे रोका जा सकता है?***

उत्तरः यह कली सड़न रोग के कारण हो सकता है। बारिश शुरू होने के साथ साथ कली सड़न रोग का प्रकोप हो जाता है। रोगकारक फफूँद बारिश के मौसम में सक्रिय हो जाती है। रोगनिरोधी उपाय के रूप में बारिश शुरू होने के पहले किसी फफूँदनाशक (इंडोफिल एम 45) 2 ग्रा. सरंध्र पाउचों में डालकर कोंपल की चारों ओर भीतरी पत्तों के कक्षों में रखें। बारिश शुरू होते ही यह फफूँदनाशी बरसाती पानी के साथ पत्तों के कक्षों से रिसकर पेड़ के शिखर पर फैलते हुए रोग निरोधी उपाय के रूप में कार्य करेगा। इसके अलावा, रोगनिरोधी छिड़काव के रूप में एक प्रतिशत बोर्डो मिश्रण की अनुशंसा दी जाती है।

पत्तों का पीला पड़ जाना मैग्नीशियम की कमी के कारण पाया जाता है। मैग्नीशियम सल्फेट का उर्वरक प्रति पेड़ 0.5 से 1 कि.ग्रा. की दर पर डाला जा सकता है।

प्रश्नः ***कितने महीने में नारियल की तुड़ाई की जानी चाहिए?***

उत्तरः 6-7 महीने में डाब की तुड़ाई की जा सकती है। बीज के लिए पूर्ण रूप से परिपक्व नारियल चुनना चाहिए। नारियल पूर्ण रूप से परिपक्व होने के लिए परागण से लेकर बारह महीने लगते हैं। सबसे अधिक मात्रा में खोपड़ा तथा नारियल तेल इसी समय प्राप्त होता है। लेकिन इस समय रेशे की गुणवत्ता घट जाती है और इसके लिए अच्छा दाम भी नहीं मिलता। जहाँ नारियल रेशे का उद्योग होता है वहाँ नारियल की तुड़ाई परागण से लेकर 11 महीने में की जा सकती है।

प्रश्नः ***नारियल से गुड़ कैसे बनाया जाता है? कृपया इस पर प्रकाश डालें।***

उत्तरः मीठी ताड़ी(नीरा) से नारियल गुड़ बनाया जाता है। मीठी ताड़ी को 118^0-120^0 से. तक उबाला जाता है और ठंडा होकर जमने दिया जाता है। इस ठोस पदार्थ को गुड़ कहते हैं जो मीठा होता है और कई प्रकार की मिठाइयाँ बनाने में इसका उपयोग किया जाता है। यह गुड़ गन्ने से उत्पादित गुड़ से भी बेहतर होता है।

मीठी ताड़ी एक बरतन में डालकर तेज़ आंच पर लगातार गरम की जाती है। उबाल आने से तुरंत पहले झाग आने लगते हैं और ऊपरी परत पर मैल जम जाता है। झाग का आना कम करने के लिए उबलती चाशनी में थोड़ा नारियल तेल डाला जाता है और जैसे ही झाग का आना घट जाता है, छेददार कलछी से मैल निकाल दिया जाता है । तकरीबन 3 से 4 घंटे तक लगातार उबालने के कारण चाशनी गाढ़ी चिपचिपी हो जाती है और इसे लकड़ी की कलछी से हिलाया जाता है। आँच से तवा निकालने के बाद भी इसे हिलाया जाता है। अब धीरे-धीरे यह क्रिस्टल होने लगता है। इस जमने की अवस्था के गुड़ को उचित आकार के बर्तनों में डाला जाता है। अध-जमा गुड़ वातावरण की ठंड के प्रभाव से धीरे-धीरे जमकर क्रिस्टलीकृत ठोस पदार्थ बन जाता है।

प्रस्तुत गुड़ बिक्री और खपत के लिए अब तैयार है। किण्वन से बचने तथा मीठी ताड़ी को उसके मूल स्वाभाविक स्थिति में बरकरार रखने के लिए परिरक्षक की आवश्यकता पड़ती है। नीरा को 12 घंटों से अधिक समय तक ताज़ा रखने के लिए सबसे बेहतर परिरक्षक चूना है। गुड़ की गुणवत्ता इसे तैयार करने के लिए प्रयुक्त मीठी ताड़ी की अवस्था के अनुसार होती है। यदि ताड़ी ज़रा भी किण्वित स्थिति में हो तो गुड़ का स्वाद वांछित स्तर तक नहीं आता है। उसी तरह यदि नीरा में ज्यादा चूना डाला हो तो गुड़ का रंग काला और स्वाद चूने का हो जाएगा। अतः यह बेहतर होगा कि शूकी के छोर पर मटका लगाने से पहले ही मटके में चूना डाल दें।

भारतीय नारियल पत्रिका की एजेंसी संबंधी शर्तें

1. भारतीय नारियल पत्रिका का वार्षिक शुल्क 40 रु. और आजीवन शुल्क 1000 रु. है।
2. एजेंसी के लिए ऐसे व्यक्ति हकदार होंगे जो कम से कम 10 ग्राहकों को दर्ज करते हों।
3. एजेंटों को 25 प्रतिशत कमीशन दिया जाएगा।
4. ग्राहकों को दर्ज करने के बाद कमीशन काटकर बाकी रकम अध्यक्ष, नारियल विकास बोर्ड, केराभवन, कोची - 682 011 के पते पर मनी आर्डर द्वारा भेजें। मनी आर्डर का कमीशन एजेंट को चुकाना चाहिए।
5. रकम के साथ साथ ग्राहकों के नाम व पता भी स्पष्ट रूप से लिखकर भेजें। रकम प्राप्त होते ही पत्रिका प्रत्येक ग्राहक को डाक द्वारा भेजी जाएगी।
6. हमारे रजिस्टर में दर्ज ग्राहकों के नाम व पता एवं पत्रिका भेजने की तारीख से एजेंट को अवगत कराया जाएगा।
7. अध्यक्ष, नारियल विकास बोर्ड, केरा भवन, कोची - 11 के पते पर संपर्क करें तो एजेंसी का आवेदन पत्र मिल जाएगा।

हल्दी उत्पादन तकनीक

भारत हल्दी का सबसे बड़ा उत्पादक देश है। पूरी दुनिया के उत्पादन का 80 प्रतिशत सिर्फ भारत में पैदा होता है। हल्दी का उपयोग मुख्य रूप से सभी घरों में मसाले के रूप में किया जाता है। इसमें लगभग 6.3 प्रतिशत प्रोटीन, 5.1 प्रतिशत वसा, 3.5 प्रतिशत खनिज तत्व तथा 69.4 प्रतिशत कार्बोहाइड्रेट होता है। हल्दी का पीला रंग इसमें पाए जाने वाले *कुरकुमिन* के कारण होता है।

भूमि

हल्दी की खेती के लिए हल्की उपजाऊ मिट्टी अच्छी होती है। भारी मिट्टी में पर्याप्त जल निकास की व्यवस्था होनी चाहिए। मटियार दोमट मिट्टी इसकी खेती के लिए सर्वथा उपयुक्त होती है। हल्दी कुछ हद तक अम्लीयता को बर्दाश्त कर सकती है। इसकी खेती छायादार जगह में भी हो सकती है।

बुआई का समय

अगर सिंचाई की व्यवस्था हो तो अप्रैल-मई में बुआई कर देनी चाहिए। सिंचाई की सुविधा नहीं रहने पर जून के दूसरे पखवाड़े में बुआई की जा सकती है।

बीज दर एवं बीज उपचार

एक हेक्टर में बुआई करने के लिए 18 क्विंटल बीज प्रकंद की आवश्यकता होती है। बीज की बुआई मूल कंद या द्वितीय कंद से करते हैं। कंद का वजन 30-35 ग्राम होना चाहिए। लगाने के पहले प्रकंद को अंकुरित करा लेनी चाहिए। इसके लिए गीली मिट्टी एवं बुरादे से उपचारित कर अंकुरण कराया जा सकता है। बुआई से पहले बीज का उपचार करना आवश्यक है। बीज उपचार के लिए एक लीटर पानी में एक ग्राम बाविस्टिन या ब्लाईटॉक्स-50 (2 ग्राम प्रति लीटर) या रिडोनिल एमज़ेड(एक ग्राम प्रति लीटर) मिलाकर घोल बनाएं तथा आधा घंटा घोल में कन्द को डूबा रहने दें। उपचार के बाद बीज प्रकंद को छायादार जगह में सुखाकर बुआई करनी चाहिए।

बोने की विधि

गर्मी में नाली बनाकर तथा बरसात में ऊँची क्यारी या मेड बनाकर बुआई करनी चाहिए। गर्मी में बुआई के लिए 45 से.मी. की दूरी पर 20 से.मी. गहरी तथा उतनी ही चौड़ी नाली बनाती है। नाली में कंपोस्ट तथा रसायनिक खाद का मिश्रण डालकर मिट्टी में अच्छी तरह मिला देता है। नाली में 10 सेंटीमीटर के फासले पर बीज प्रकंद की बुआई करती है तथा मिट्टी से ढक देता है। मिट्टी से ढकते समय ख्याल रखें कि नाली ज़मीन से थोड़ा नीचे है ताकि गर्मी में पानी देने में सुविधा हो। सिंचाई के बाद नाली को सूखे पत्तों की 5-6 से.मी. मोटी परत से अच्छी तरह ढक देता है ताकि नमी बनी रहे। बरसात आने पर मिट्टी चढ़ा देता है।

बरसात में हल्दी लगाने के लिए खेत को जोतकर छोटी-छोटी क्यारियाँ ज़मीन से 10 से.मी. ऊँचा बना लेती हैं। बुआई के लिए 10 से.मी. गहराई की नाली बनाती है तथा नाली में 10 सेंटीमीटर की दूरी पर प्रकंद को रखकर बीज की बुआई करती हैं। बुआई के समय प्रकंद की आँख ऊपर की तरफ होनी चाहिए। प्रकंद को मिट्टी से ढकने के बाद क्यारी को 5-6 से.मी. मोटा सूखा घास-फूस, पत्तियाँ या गोबर की सड़ी खाद से ढक देता है। इससे तापक्रम बना रहेगा एवं खरपतवार कम उगेगा।

खाद एवं उर्वरक का प्रयोग

खेत तैयार करते समय हल्दी के लिए 200 क्विंटल कम्पोस्ट या 100 क्विंटल केंचुआ खाद दें। सूत्रकृमि कीटों की रोकथाम के लिए बुआई के 15 दिन पूर्व प्रति हेक्टर 10 क्विंटल की दर पर नीम या करंज की खली का प्रयोग आवश्यक है। प्रति हेक्टर के लिए पीएसबी 500 ग्राम 25 किलो कम्पोस्ट के साथ मिलाकर खेत तैयार करते समय मिला देना चाहिए। हल्दी की अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए नत्रजन 100 किलोग्राम, फॉस्फोरस 50 किलोग्राम एवं पोटैश 100 किलोग्राम प्रति हेक्टर प्रयोग करें। बुआई के 10-15 दिन पहले प्रति हेक्टर 20 किलो की दर पर ब्लीचिंग पाउडर खेत में डालकर अच्छी तरह मिला दें। खेत की अंतिम तैयारी के समय पोटैश की आधी मात्रा एवं फॉस्फोरस की पूरी मात्रा दें। बुआई के 60 दिन बाद नत्रजन की आधी मात्रा एवं पोटैश की शेष आधी मात्रा दें। बुआई के 90 दिन बाद नत्रजन की शेष आधी मात्रा देकर मिट्टी चढ़ा दें।

निराई-गुड़ाई

खेत की दो-तीन बार निराई-गुड़ाई कर खरपतवार से मुक्त रखें। अंतिम बार गुड़ाई करने के बाद मिट्टी चढ़ा दें। बरसात में पानी के निकास का समुचित प्रबंध करें।

कीट एवं इसका प्रबंधन

1. प्रकंद एवं तना बेधक (Dichocrocis functiferalis): पूर्ण विकसित पिल्लू 25-30 मि.मी. लंबा, पीले

हरे रंग का होता है। इसका पिल्लू बाह्य तना एवं धड़ में सुरंग बनाकर क्षति करता है। इसके नियंत्रण के लिए प्रकोप की शुरुआत में ही क्लोरपाइरिफॉस 20 ई.सी. के घोल (2.5 मि.ली. प्रति लीटर पानी में) से तने के मूलभाग पर छिड़काव करें।

2. पत्र लपेटक (Udaspesfolus): इस कीट का पिल्लू हरे रंग का होता है। पिल्लू पत्तियों को मोड़कर अन्दर ही अन्दर खाता रहता है। कार्बेरिल चूर्ण(2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी में) का घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए।

3. स्केल कीट(Aspidiotus hartii): इस कीट का आक्रमण प्रकंद पर होता है। ये कीट प्रकंद का रस चूसते हैं फलतः प्रकंद सिकुड़ जाता है। इस कीट के आक्रमण से पत्तियों में छोटे-छोटे छेद बन जाते हैं। नीम के बीज की घोल (5प्रतिशत) या नीम से निर्मित कीटनाशी(निम्बेसिडीन, अचूक, निमेरिन) का छिड़काव(2.0 मि.ली./लीटर पानी) करने से पत्र लपेटक, भृंग तथा स्केल कीट को नियंत्रित किया जा सकता है।

4. सूत्रकृमि: हल्दी फसल पर सूत्रकृमि का प्रकोप कम करने के लिए फसल के चारों तरफ या पाँच पंक्ति के बाद अंतरवर्ती फसल के रूप में एक पंक्ति गेंदा फूल लगाने की अनुशंसा की जाती है।

बीमारियाँ एवं रोकथाम

1. प्रकन्द गलन रोग: अदरक एवं हल्दी में प्रकंद गलन रोग एक जटिल समस्या है। यह फफूँद एवं जीवाणु जनित रोग है जो *पाइथियम* तथा *फ्यूसेरियम* फफूँद एवं *राइज़ोक्टोनिया* जीवाणु द्वारा होता है। इस रोग से ग्रसित पौधों की पत्तियाँ पीलापन लिए हुए होती हैं। यह पीलापन पत्तियों के शीर्ष से शुरू होकर किनारों से नीचे की तरफ फैलता है। रोगी पत्तियाँ सूखकर नीचे की तरफ लटक जाती है। तना जलीय व पिलपिला हो जाता है एवं खींचने पर मिट्टी से बाहर आ जाता है। खड़ी फसल में रोग दीखने पर रेडोमिल एमज़ेड(0.1 प्रतिशत) की घोल का प्रयोग जड़ के पास मिट्टी भिगोते हुए करें।

2. पत्ती धब्बे: यह रोग *कोलेक्टोट्राइकम कैप्सिकी* नामक फफूँद से होता है। इससे पत्तियों पर 4-5 से.मी. लम्बे तथा 3 से.मी. चौड़े धब्बे बन जाते हैं। ये धब्बे आपस में मिलकर अधिक बड़े धब्बे बनाते हुए सारी पत्ती को घेर लेते हैं। पत्तियाँ सूख जाती हैं तथा रोग के तीव्र होने पर पूरी फसल जली हुई सी दिखाई देने लगती है। रोग से बचाव के लिए जून से सितंबर माह में मैंकोज़ेब (0.25 प्रतिशत) या हिनोसान (0.1 प्रतिशत) का छिड़काव करें।

3. पत्ती चित्ती: यह रोग *टैफारिना मैकुलारेस* नामक फफूँद के कारण होता है। इसमें पत्तियों के बाहरी तथा भीतरी सतह पर 1-2 मि.मी. चौड़ाई के अधिकांशतः आयताकार ललाई युक्त भूरे धब्बे बन जाते हैं जो कतार में से सजे रहते हैं। इसके कारण पत्तियाँ शीघ्र ही पीली पड़ जाती हैं। रोग के बढ़ने पर पत्तियाँ बदरंग हो जाती हैं। रोग से बचाव के लिए मैंकोज़ेब(0.3 प्रतिशत) का छिड़काव करें।

खुदाई एवं उपज

फसल परिपक्व होने पर पत्तियाँ पीली होकर मुरझाने लगती है। सावधानी पूर्वक कोड़ाई कर प्रकंद को निकालते हैं। कच्ची हल्दी की 400 क्विंटल/हेक्टर तक उपज क्षमता होती है। कच्ची हल्दी से 20 प्रतिशत सूखी हल्दी मिलती है।

उपचार व सुखाना

प्रकंद को पौधे से अलग करने के बाद मूलकंद एवं द्वितीयक को अलग कर, साफ कर लेते हैं। इसके बाद प्रकंद को 5-7 दिन तक पत्तियों से अच्छी तरह ढक कर रखता है। हल्दी को सुखाने के पहले 0.1 प्रतिशत चूना या सोडियम बाइकार्बोनेट में उबालते हैं। उबालते समय जब बर्तन में झाग तथा हल्दी का गंध आने लगे तो समझना चाहिए हल्दी तैयार हो गया है। इस समय प्रकंद मुलायम होकर अंगुलियों से दबने लगता है। अधिक उबालने से वाष्पशील तेल की क्षति होती है। उबली हुई गांठों को 7-8 दिन तक धूप में सुखाते हैं। अच्छी तरह सुखाने के बाद गाँठों को खुरदरी चीज़ से रगड़कर साफ किया जाता है।

बीज प्रकंद का रखरखाव

छायादार जगह में शेड बनाते हैं ताकि वर्षा का पानी न जाए। एक मीटर गहरा एवं 50 सेंटीमीटर चौड़ा गड्ढ़ा बनाते हैं। बीज प्रकंद को बाविस्टिन (2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोलकर) से उपचारित कर लेते हैं। गड्ढ़े के निचली सतह पर बालू की 20 से.मी. घना परत बनाती है। इसके ऊपर 30 से.मी. मोटाई में प्रकंद की परत बनाती है। इसके ऊपर बालू की परत और फिर प्रकंद की परत बनाती है। इस तरह गड्ढ़े में प्रकंद को रखकर गड्ढ़े को पटरा से ढक देते हैं। पटरा एवं प्रकंद के बीच 10 से.मी. खाली जगह हवा के लिए छोड़ देती है। पटरे के ऊपर मिट्टी का लेप कर देता है। इस प्रकार बीज प्रकंद को सुरक्षित रखकर अगले मौसम में बुआई करती हैं।

साभार: बीएयू बुलेटिन

नारियल कृषकों को क्या करना चाहिए?

अप्रैल से जून तक

अन्डमान व निकोबार द्वीप समूह

अप्रैल

पहले ही बनाए गए गड्ढ़ों के आधे भाग तक लकड़ी की राख, रेत और ऊपरी मिट्टी के मिश्रण से भरें। उसके मध्य भाग में बनाए छिद्र में पौध लगाएं। गड्ढ़े के चारों ओर बंद बनायें। गैंडा भृंग के प्रकोप को रोकने के लिए सभी फलदायी ताड़ों के शिखरों को साफ करें और सबसे ऊपर के 2-3 पर्ण कक्षों से रेत और 2 से 3 नैफ्थालीन गोलियों से भरें।

मई

नर्सरियों में पानी देना जारी रखें। यदि शुष्क मौसम चल रहा है तो ताड़ों को सिंचित करें। जलनिकासी सुचारू बनाने के लिए बंधों और नालों की मरम्मत करें। बीजफलों को इकट्ठा करें। पौद तैयार करने के लिए नर्सरियों की स्थापना करें। नई रोपाई और प्रतिरोपाई हेतु दोनों तरफ 7.5 मीटर की दूरी पर बलुई और बलुई दुमट मिट्टी में 100 घन सें.मी. का और मटियारी मिट्टी में 60 घन सें.मी. का गड्ढ़ा खोदें। एकल बाड़ा प्रणाली में 6मी. x 9मी. का और द्विबाड़ा प्रणाली में 6मी. x 6मी. x 9मी. का अंतरण दें। उत्तर दक्षिण दिशा में कतारों की तैयारी करें। जल जमाव वाले क्षेत्रों में मटियारी और रेतीली मिट्टी बारी बारी से डालकर टीला तैयार करके प्रतिरोपण किया जाए। ताड़ों की कतारों के बीच में 50 सें.मी. चौड़ाई और 60 सें.मी. गहराई की रेखीय खाई तैयार करें। छिलकों को खाइयों में उनका अवतल भाग ऊपर की तरफ करके एक के ऊपर एक करके रखकर मिट्टी से ढक दें। जहाँ हर साल कलिका विगलन पाया जाता है ऐसे क्षेत्रों के सभी ताड़ों पर एक प्रतिशत बोर्डो मिश्रण का रोगनिरोधी छिड़काव करें। बीच की खाली जगहों पर सब्जियों और अंतराफसलों की खेती करें।

जून

ताड़ के चारों ओर 2 मीटर की दूरी पर थाला बनाएं। प्रति ताड़ 25 से 50 किलो ग्राम गोबर या कंपोस्ट और 10-20 किलो ग्राम राख डाल दें और थालों को मिट्टी से ढक दें। नर्सरी से खरपतवार निकाल दें।

आंध्र प्रदेश

अप्रैल

नर्सरी क्यारियां तैयार करें। यदि दीमक आक्रमण है तो बलुई मृदा में नर्सरी तैयार करें या नर्सरी क्यारियों में नदि की रेत की मोटी परत डालें या नर्सरी क्यारियों में 0.05 प्रतिशत क्लोरपाइरीफोस से 20 से 25 दिन के अंतराल में दो बार उपचार करें। क्यारियों में बीजफल बोएं। यदि नारियल छिलका उपलब्ध हैं तो ताड़ों की कतारों के बीच 3 मीटर की दूरी पर बनाई गई खाई में या तने से 2 मीटर की दूरी पर ताड़ों के चारों ओर बनाई गई वृत्ताकार की खाइयों में गाड़ दें। छिलके का भीतरी भाग ऊपर की ओर करते हुए परतों में छिलका गाड़ दें। छिलका गाड़ने से नमी बरकरार रहती है और पोषकतत्व खासतौर से पोटैश की आपूर्ति होती है। छिलका गाड़ने का अनुकूल प्रभाव 5 से 7 साल तक मिलता रहेगा। वयस्क ताड़ों के थालों में उर्वरकों की पहली मात्रा यानी 400 ग्राम यूरिया, 700 ग्राम सिंगल सूपरफोस्फेट और 750 ग्राम म्यूरिएट ऑफ पोटैश आदि दें। प्रति ताड़ दो टोकरा भर हरी खाद का प्रयोग करें और इसे मृदा से ढक दें तथा थालों की सिंचाई करें। यदि पशु खाद उपलब्ध हो तो उपर्युक्त खादों के साथ 25 कि.ग्रा. पशु खाद का प्रयोग करें। उपलब्धतानुसार एक चौथाई कार्टलोड टंकी गाद का प्रयोग करें। मुख्य खेतों में एक वर्ष की आयुवाले बीजपौधों की रोपाई करें। यदि कृष्णशीर्ष इल्ली का प्रकोप पाया जाए तो रोग ग्रस्त पत्तों को काटकर जलाएं ताकि रोग कीटों का फैलाव रोका जा सके। रोगग्रस्त ताड़ों पर 0.02 प्रतिशत डाइक्लोरवोस या 0.05 प्रतिशत मैलाथियन का छिड़काव करें।

रोगकीटों की अवस्थानुसार वयस्क ताड़ों पर उस अवस्था के लिए सक्षम विशेष परजीवियों को छोड़ दें। रोगकीटों की बहु-अवस्था स्थिति में सभी परजीव्याभों को एक साथ छोड़ देना आवश्यक है। जब प्रारंभिक पीड़कनाशी से उपचार किया जाए तो छिड़काव करने के तीन हफ्ते बाद परजीव्याभों को छोड़ दिया जाए।

यदि उस क्षेत्र में दीमक की परेशानी हो तो नर्सरी रेतीली मृदा में तैयार करें या क्यारियों पर नदी की रेत की मोटी परत डाल दें या 20 से 25 दिनों के अंतराल में दो बार क्यारियों को 0.05 प्रतिशत क्लोरपाइरिफोस से शराबोर करें।

यदि बरूथी का प्रकोप पाया गया है तो नीम तेल - लहसुन - साबुन मिश्रण 2 प्रतिशत (1 लीटर पानी में 20 मि.ली. नीम तेल + 20 ग्राम लहसुन पेस्ट + 5 ग्राम साबुन घोलकर) या प्रति लीटर पानी में 4 मि.ली. की दर पर 0.004 प्रतिशत एज़ाडिरेक्टिन युक्त नीम तेल दवा दूसरे से पाँचवें अपक्व गुच्छों की तरफ खास तौर से बुतामों के परिदलपुंज भाग पर और रोगग्रस्त फलों पर छिड़क दें या एज़ाडिरेक्टिन 5 प्रतिशत युक्त नीम तेल दवा 7.5 मि.ली. की दर पर उतनी ही मात्रा में पानी में मिलाकर जड़ों द्वारा पिला दें।

मई

बागों में नियमित रूप से सिंचाई करें। अगर आवश्यक है तो सिंचाई नालों को साफ करें। नारियल थालों में नारियल छिलका, कयर गूदा आदि से पलेवा करके मृदा की नमी संरक्षित रखने की कोशिश करें। चुने गए मातृ ताड़ों से बीजफल इकट्ठा करें। बागों की जुताई करें और मृदा उर्वरता बढ़ाने के लिए हरी खाद के बीजों की छिटका बुवाई करें। मृदा की उर्वरता बढ़ाने के लिए बागों में तालाबों की गाद डाल दें। फलों का झड़ना रोकने के लिए झुके हुए गुच्छों को बाँध दें। यदि कृष्ण शीर्ष इल्ली का प्रकोप पाया जाए तो इससे पीड़ित ताड़ों पर 0.02 प्रतिशत डाइक्लोरवोस या 0.05 प्रतिशत मैलाथियॉन से छिड़काव करें और छिड़काव के तीन हफ्ते बाद डिंभक या प्यूपा अवस्था के परजीवियों को छोड़ दें। यदि बरूथी का प्रकोप पाया गया है तो प्रति लीटर पानी में 4 मि.ली. की दर पर 0.004 प्रतिशत एज़ाडिरेक्टिन युक्त नीम तेल दवा दूसरे से पाँचवें अपक्व गुच्छों की तरफ खास तौर से बुतामों के परिदलपुंज भाग पर और रोगग्रस्त फलों पर छिड़क दें।

जून

यदि मई में उर्वरकों का प्रयोग नहीं किया है तो उर्वरकों का अभी प्रयोग करें। मुख्य खेत में पौदों का रोपण करें। गैंडा भृंग के रोगरोधी उपाय के रूप में साल में तीन बार सबसे अंदर के तीन पर्णकक्षों में 250 ग्राम मरोट्टि चूर्ण/नीम खली के साथ उसी मात्रा में रेत मिलाकर भरें या नैफ्थलीन गोली (प्रति ताड़ 12 ग्राम)रखें और उसे मिट्टी से ढक दें।

यदि बरुथी का प्रकोप पाया गया है तो नीम तेल - लहसुन - साबुन मिश्रण 2 प्रतिशत (1 लीटर पानी में 20 मि.ली. नीम तेल + 20 ग्राम लहसुन पेस्ट + 5 ग्राम साबुन घोलकर) या प्रति लीटर पानी में 4 मि.ली. की दर पर 0.004 प्रतिशत एज़ाडिरेक्टिन युक्त नीम तेल दवा दूसरे से पाँचवें अपक्व गुच्छों की तरफ खास तौर से बुतामों के परिदलपुंज भाग पर और रोगग्रस्त फलों पर छिड़क दें या एज़ाडिरेक्टिन 5 प्रतिशत युक्त नीम तेल दवा 7.5 मि.ली. की दर पर उतनी ही मात्रा में पानी में मिलाकर जड़ों द्वारा पिला दें।

असम

अप्रैल

मुख्य खेत में पौदों का रोपण जारी रखें। नवरोपित पौदों के गड्ढ़ों में जमा बरसाती पानी नियमित रूप से बाहर बहा दें। पेड़ों के शिखर की सफ़ाई करें और फलगुच्छों का झुकाव रोकने हेतु उन्हें बाँध लें या सहारा दें। रोगों से बचाने हेतु रोगनिरोधी उपाय अपनायें। अगर दीमक का प्रकोप पाया जाता है तो 0.05 प्रतिशत क्लोरपैरिफॉस से 20 से 25 दिनों के अंतर से दो बार नर्सरी क्यारियों एवं नवरोपित पौदों के थालों की मृदा को अच्छी तरह शराबोर करें। पत्ता सड़न रोग की रोकथाम हेतु सड़े हुए हिस्सों को काटकर निकालने के बाद तर्कु पत्ते के मूलभाग के चारों ओर प्रति ताड़ 300 मि.ली.पानी में 2 मि.ली. की दर पर कॉनटैफ 5 ईसी या 300 मि.ली.पानी में 3 ग्राम मैंकोज़ेब डाल दें।

मई

मुख्य खेतों में गुणवत्तापूर्ण पौदों की प्रतिरोपाई करें। यदि चाहिए तो सिंचाई जारी रखें। उर्वरकों की पहली मात्रा यानि 500 ग्राम यूरिया, 1000 ग्राम सिंगल सूपर फोसफेट (एसएसपी), 1000 ग्राम म्यूरिएट ऑफ पोटैश (एम ओ पी) और 25 ग्राम बोरैक्स इस अवधि के दौरान दें। यदि फलों का झड़ना और फलों का टूटना पाया जाए तो पोटैश की मात्रा बढ़ाएं। एक प्रतिशत बोर्डो मिश्रण का रोगनिरोधी छिड़काव करें। यदि गैंडा भृंग के प्रकोप से बचने के लिए मार्च में कोई उपचार नहीं किया गया है तो पर्णकक्षों में 25 ग्राम सेविडोल (8 जी) और 250 ग्राम महीन रेत के मिश्रण से भर दें।

जून

प्रतिरोपित पौधों के गड्ढ़ों में बारिश का पानी जमने न दें। ताड़ के शिखरों को साफ करें। यदि तना स्रवण रोग पाया गया है तो (1) रोगग्रस्त ऊतकों को काट निकालकर घाव पर 5 प्रतिशत कैलिक्सिन लगाएं। जब यह सूख जाएगा तब गरम कोलतार लगाएं। (2) साल में चार बार प्रति ताड़ 100 मि.ली. पानी में 5 मि.ली.कैलिक्सिन घोलकर जड़ों द्वारा पिलाएं। (3) मानसून के बाद जैव खादों के साथ प्रति वर्ष प्रति ताड़ 5 कि.ग्राम नीम खली डालें (4) बारिश के समय उचित जलनिकासी व्यवस्था करें और गर्मी के महीनों में ताड़ों की सिंचाई करें। यदि कली सड़न पाया जाता है तो, रोगग्रस्त ऊतकों को निकालकर साफ करें और रोगग्रस्त भागों पर बोर्डो पेस्ट लगाएं। उपचारित भाग पर एक कवर डालें ताकि बारिश के पानी में यह पेस्ट बह न जाए। निकटस्थ पौधों पर भी एक प्रतिशत बोर्डो मिश्रण से छिड़काव करें। जब मौसम ठीक रहता है तो पौधा संरक्षण उपाय अपनाएं। नर्सरी से खरपतवार निकाल दें।

बिहार/मध्य प्रदेश/छत्तीसगढ़

अप्रैल

सिंचाई की आवृत्ति बढ़ाएं। दीमक के प्रकोप/ फफूँद रोगों की तलाश करें और नियंत्रणोपाय अपनाएं। मखरली मिट्टी में 1.2 मी. x 1.2 मी. x 1.2 मी. का तथा बलुई मिट्टी में 1 मी. x 1 मी. x 1मी. आकार का गड्ढ़ा खोदकर बीजपौधा लगाना शुरू करें।

मई

यदि आवश्यक हो तो सिंचाई के नालों को साफ करें और गर्मियों के महीनों में बागों में लगातार सिंचाई करते रहें। थाला सिंचाई करें तो मृदा की नमी धारण क्षमता के अनुसार 4-5 दिन में 200 लीटर पानी पर्याप्त है। 3 साल तक के छोटे ताड़ों को 3 दिन में कम से कम एक बार सिंचित

करना चाहिए। छोटी पौदों को ठीक से छाया प्रदान करें। यदि पानी की दुर्लभता हो तो पानी बचाने के लिए ड्रप्स सिंचाई प्रणाली अपनाएं। खेत की जुताई और निराई करें। थालों से खरपतवार निकाल दें। नारियल के चारों ओर थाला खोदें और नारियल पत्ते, कयर गूदा आदि से पलेवा करें। नारियल शिखरों को साफ करें और पौधा संरक्षण रासायनिकों का प्रयोग करें। यदि कलिका विगलन पाया जाए तो रोगग्रस्त ऊतकों को काटकर निकाल दें और बोर्डो मिश्रण की लेई लगाएं।

जून

उचित जल निकासी की व्यवस्था करें। गड्ढ़ों में अधिक समय तक बारिश का पानी जमने न दें। पहले से ही तैयार किए और आधे भरे गड्ढ़ों में अच्छी गुणवत्ता की पौदों से प्रतिरोपाई करें। दीमकों के प्रकोप से बचने के लिए प्रतिरोपित पौदों के थालों को 20 से 25 दिनों के अंतराल में दो बार 0.05 प्रतिशत क्लोरपाइरिफोस से शराबोर करें। रोपण से पहले गड्ढ़ों में 2 कि.ग्राम अस्थिचूर्ण या सिंगल सूपरफोस्फेट डालें। ताड़ के चारों और 2 मीटर की दूरी पर 15-20 सें.मी.गहरे थाले बनाएं और खाद एवं उर्वरक डालकर मिट्टी से ढक दें। इस महीने के दौरान उर्वरकों का प्रयोग करने से पहले प्रति ताड़ 30-50 कि.ग्राम अहाता खाद/कंपोस्ट थाले में डाल दें। सिंचित और अच्छी तरह रखरखाव वाले बागों में उर्वरक जैसे 275 ग्राम यूरिया, 500 ग्राम सिंगल सूपर फोसफेट और 500 ग्राम म्यूरिएट ऑफ पोटैश डाल दें। बारानी खेती वाले बागों में उर्वरकों की पहली मात्रा (अनुशंसित मात्रा का एक तिहाई भाग) यानि प्रति वयस्क ताड़ 250 ग्राम यूरिया, 350 ग्राम सिंगल सूपरफोस्फेट और 400 ग्राम म्यूरिएट ऑफ पोटैश डाल दें और मिट्टी से ढक दें। पिछले वर्ष रोपित पौदों के मर जाने पर जो खाली जगह पड़ती है वहाँ पोलीबैग पौदों से रोपण करें। वैसे ही सभी दुर्बल और खराब पौदों को हटाकर अच्छी पौदों से पुनर्रोपण करें। कली सड़न की जाँच करें। यदि कली सड़न पायी जाती तो रोगग्रस्त भागों को निकालकर वहाँ बोर्डो पेस्ट लगाएं। निकटस्थ ताड़ों/पौदों पर 1 प्रतिशत बोर्डो मिश्रण से छिड़काव करें।

कर्नाटक

अप्रैल

नहरें साफ़ करें और बंदों की मरम्मत करें। बारिश शुरू नहीं हुई है तो सिंचाई जारी रखें। मानसून शुरू होने के पहले बीजफल बोयें और अगर अपेक्षित है तो सिंचाई करें।

फफूँद रोगों की रोकथाम हेतु एक प्रतिशत बोर्डो मिश्रण या किसी अन्य ताम्र फफूँदनाशियों से रोगनिरोधी छिड़काव करें। पहले ही तैयार किए गड्ढ़ों के आधे भाग तक लकड़ी की राख, गोबर और ऊपरी मिट्टी से भरें और गड्ढ़ों में नया रोपण करें। अगर सूखे का दौर जारी रहता है तो पौदों की सिंचाई करें। प्रतिवर्ष प्रति ताड़ की दर पर उर्वरकों की पहली मात्रा, 50 कि.ग्रा. जैव खाद(अहाता खाद) और 5 कि.ग्रा. नीम खली का प्रयोग करें।

यदि बरूथी का प्रकोप पाया गया है तो नीम तेल - लहसुन - साबुन मिश्रण 2 प्रतिशत (1 लीटर पानी में 20 मि.ली. नीम तेल + 20 ग्राम लहसुन पेस्ट + 5 ग्राम साबुन घोलकर) या प्रति लीटर पानी में 4 मि.ली. की दर पर 0.004 प्रतिशत एज़ाडिरेक्टिन युक्त नीम तेल दवा दूसरे से पाँचवें अपक्व गुच्छों की तरफ खास तौर से बुतामों के परिदलपुंज भाग पर और रोगग्रस्त फलों पर छिड़क दें या एज़ाडिरेक्टिन 5 प्रतिशत युक्त नीम तेल दवा 7.5 मि.ली. की दर पर उतनी ही मात्रा में पानी में मिलाकर जड़ों द्वारा पिला दें।

मई

सिंचाई और चयनित मातृ ताड़ों से बीजफल इकट्ठा करना जारी रखें। बीजफलों को बोने के लिए नर्सरी क्यारियाँ तैयार करना शुरू करें। नर्सरी ऐसी मृदा में होनी चाहिए जो अच्छी जल निकास वाली हल्की संरचना की हो और सिंचाई की भी सुविधा हो। ताड़ों की पौष्टिक स्थिति सुधारने के लिए पर्याप्त मात्रा में जैव खाद और रासायनिक उर्वरकों का संतुलित प्रयोग अनुशंसित है। जैव खाद (अहाता खाद) 50 कि.ग्रा. और नीम खली 5 कि.ग्रा. प्रति ताड़ प्रति वर्ष की दर पर डाल दें। यदि तापमान अधिक है तो पत्ता भक्षक इल्लियों के प्रकोप पर भी ध्यान दें और यदि पहले नहीं किया गया तो उचित उपाय अपनाएं ।

यदि बरूथी का प्रकोप पाया गया है तो नीम तेल - लहसुन - साबुन मिश्रण 2 प्रतिशत (1 लीटर पानी में 20 मि.ली. नीम तेल + 20 ग्राम लहसुन पेस्ट + 5 ग्राम साबुन घोलकर) या प्रति लीटर पानी में 4 मि.ली. की दर पर 0.004 प्रतिशत एज़ाडिरेक्टिन युक्त नीम तेल दवा दूसरे से पाँचवें अपक्व गुच्छों की तरफ खास तौर से बुतामों के परिदलपुंज भाग पर और रोगग्रस्त फलों पर छिड़क दें या एज़ाडिरेक्टिन 5 प्रतिशत युक्त नीम तेल दवा 7.5 मि.ली. की दर पर उतनी ही मात्रा में पानी में मिलाकर जड़ों द्वारा पिला दें।

जून

ताड़ के चारों ओर 2 मीटर व्यासार्ध में वृत्ताकार में थाला बनाएं। यदि गैंडा भृंग और लाल ताड़ घुन का प्रकोप पाया जाता तो उचित नियंत्रण उपाय अपनाएं। बागों से खरपतवार निकाल दें। यदि पिछले महीने नहीं किया है तो 1 प्रतिशत बोर्डो मिश्रण से रोगरोधी छिड़काव करें। इस महीने पौद की रोपाई की जा सकती है।

यदि बरुथी का प्रकोप पाया गया है तो नीम तेल - लहसुन - साबुन मिश्रण 2 प्रतिशत (1 लीटर पानी में 20 मि.ली. नीम तेल + 20 ग्राम लहसुन पेस्ट + 5 ग्राम साबुन घोलकर) या प्रति लीटर पानी में 4 मि.ली. की दर पर 0.004 प्रतिशत एज़ाडिरेक्टिन युक्त नीम तेल दवा दूसरे से पाँचवें अपक्व गुच्छों की तरफ खास तौर से

बुतामों के परिदलपुंज भाग पर और रोगग्रस्त फलों पर छिड़क दें या एज़ाडिरेक्टिन 5 प्रतिशत युक्त नीम तेल दवा 7.5 मि.ली. की दर पर उतनी ही मात्रा में पानी में मिलाकर जड़ों द्वारा पिला दें।

केरल / लक्षद्वीप

अप्रैल

पत्ता भक्षक इल्लियों की तलाश करें और इससे प्रकोपित पत्तों को काटकर जला दें। रोगग्रस्त ताड़ों पर 0.02 प्रतिशत डाइक्लोर्वोस या 0.05 प्रतिशत मैलाथियान से छिड़काव करें। पुराने ताड़ों पर कीडों की अवस्था के अनुसार परजीव्याभों को छोड़ दें। जब विविध अवस्थाओं के कीट हैं तो सभी अवस्थाओं के परजीव्याभों को एकसाथ छोड़ दें।

गैंडा भृंग एवं लाल ताड़ घुन के लिए पेड़ के शिखरों की जाँच करते रहें। गैंडा भृंग को अंकुश से बाहर निकाल कर मार डालें। लाल ताड़ घुन ग्रस्त पेड़ों को एक प्रतिशत गाढ़ा कार्बरिल कीप द्वारा दें। कली सड़न रोग की जाँच करें। अगर रोग-प्रकोप पाया जाता है तो रोगग्रस्त ऊतकों को काटकर निकाल दें तथा बोर्डो की लेई से उपचार करें और रोगनिरोधी उपाय के रूप में आसपास के पेड़ों पर 1 प्रतिशत बोर्डो मिश्रण का छिड़काव करें।

यदि बरूथी का प्रकोप पाया गया है तो नीम तेल - लहसुन - साबुन मिश्रण 2 प्रतिशत (1 लीटर पानी में 20 मि.ली. नीम तेल + 20 ग्राम लहसुन पेस्ट + 5 ग्राम साबुन घोलकर) या प्रति लीटर पानी में 4 मि.ली. की दर पर 0.004 प्रतिशत एज़ाडिरेक्टिन युक्त नीम तेल दवा दूसरे से पाँचवें अपक्व गुच्छों की तरफ खास तौर से बुतामों के परिदलपुंज भाग पर और रोगग्रस्त फलों पर छिड़क दें या एज़ाडिरेक्टिन 5 प्रतिशत युक्त नीम तेल दवा 7.5 मि.ली. की दर पर उतनी ही मात्रा में पानी में मिलाकर जड़ों द्वारा पिला दें।

पेड़ की चारों ओर नीचे भाग से 2 मी. की दूरी पर थाला खोलें और अगर हरी खाद फसल मुख्य खेत में नहीं उगायी गयी है तो थाले में बोयें। मृदा में नमी संरक्षण के लिए छिलके गाड़ दें। पर्याप्त मात्रा में जैव खादों का तथा संतुलित मात्रा में अकार्बनिक उर्वरकों का प्रयोग करके ताड़ों की पौष्टिकता बढ़ाई जा सकती है। प्रति वर्ष प्रति पेड़ जैव खाद 50 कि.ग्रा. और नीम की खली 5 कि.ग्रा. दें।

मई

यदि सिंचाई की सुविधा हो तो नारियल पौदों की रोपाई करें। इससे मानसून शुरू होने से पहले ही जड़ें जम जाएंगी और बारिश का पूरा लाभ प्राप्त होगा। मानसून के जल जमाव को बरदाश्त करने में यह सहायक होगा। महीने के दौरान बीजफलों को एकत्रित करना जारी रखें। बलुई मिट्टी में स्थित ताड़ों को प्रति पेड़ आधा टन नदी की गाद या तालाब की गाद डाल दें। नारियल की नई रोपाई/अधोरोपाई के लिए गड्ढे खोद लें।

यदि बरूथी का प्रकोप पाया गया है तो नीम तेल - लहसुन - साबुन मिश्रण 2 प्रतिशत (1 लीटर पानी में 20 मि.ली. नीम तेल + 20 ग्राम लहसुन पेस्ट + 5 ग्राम साबुन घोलकर) या प्रति लीटर पानी में 4 मि.ली. की दर पर 0.004 प्रतिशत एज़ाडिरेक्टिन युक्त नीम तेल दवा दूसरे से पाँचवें अपक्व गुच्छों की तरफ खास तौर से बुतामों के परिदलपुंज भाग पर और रोगग्रस्त फलों पर छिड़क दें या एज़ाडिरेक्टिन 5 प्रतिशत युक्त नीम तेल दवा 7.5 मि.ली. की दर पर उतनी ही मात्रा में पानी में मिलाकर जड़ों द्वारा पिला दें।

जून

ताड़ के चारों ओर थाला बनाएं और यदि मई में नहीं किया है तो उसमें प्रति ताड़ 25 कि.ग्राम की दर पर हरी खाद या हरे पत्ते या गोबर, कंपोस्ट आदि जैसी जैव खाद प्रति वयस्क ताड़ 50 कि.ग्राम की दर पर डालें और भागिक रूप से थालों को ढक दें। पौद लगाए गड्ढ़ों को साफ करें। ताड़ के शिखरों पर गैंडा भृंग, लाल ताड़ घुन आदि की तलाश करें और कलिका विगलन रोग की भी जांच करें।

यदि बरुथी का प्रकोप पाया गया है तो नीम तेल - लहसुन - साबुन मिश्रण 2 प्रतिशत (1 लीटर पानी में 20 मि.ली. नीम तेल + 20 ग्राम लहसुन पेस्ट + 5 ग्राम साबुन घोलकर) या प्रति लीटर पानी में 4 मि.ली. की दर पर 0.004 प्रतिशत एज़ाडिरेक्टिन युक्त नीम तेल दवा दूसरे से पाँचवें अपक्व गुच्छों की तरफ खास तौर से बुतामों के परिदलपुंज भाग पर और रोगग्रस्त फलों पर छिड़क दें या एज़ाडिरेक्टिन 5 प्रतिशत युक्त नीम तेल दवा 7.5 मि.ली. की दर पर उतनी ही मात्रा में पानी में मिलाकर जड़ों द्वारा पिला दें।

महाराष्ट्र/गोवा/गुजरात

अप्रैल

ज़मीन की एक या दो बार जुताई करें और खरपतवार निकालें। जंगली सनई, ढैंचा, सेसबनिया या कोलिंजी जैसी किसी एक हरी खाद फसल का बीज प्रति हेक्टर 28 से 34 कि. ग्रा. की दर पर बोयें। उर्वरक यदि पहले नहीं डाला गया है तो अब डालें।

मई

निम्नवर्ती क्षेत्रों में जहाँ नारियल बंदों पर रोपित हैं, बंदों के बीच के नाले साफ करें और नालों से निकाली गई ऊपरी मृदा बंदों के पार्श्व में डाल कर उन्हें मज़बूत कर दें। बीजफलों को एकत्र करना जारी रखें और एकत्रित बीजफलों को छाया में रखें। पौदों की रोपाई हेतु गड्ढ़ा खोदें।

जून

ताड़ों के बीच के गड्ढ़ों में भीतरी भाग ऊपर की तरफ करके छिलका गाड़ दें। फफूंदजन्य रोगों से बचने के लिए 1 प्रतिशत बोर्डो मिश्रण से रोगरोधी छिड़काव करें।

ओडिशा

अप्रैल

पेड़ों की चारों ओर थाले बनाएं। दक्षिण पश्चिम मानसून शुरू होते ही हरी खाद और गोबर डालें। पहले हरी खाद डालें और बाद में गोबर डालकर मिट्टी से ढक दें। उर्वरकों की पहली मात्रा यानी प्रति पेड़ 250 ग्रा. यूरिया, 500 ग्रा. सिंगल सूपर फॉसफेट एवं 500 ग्रा. म्यूरेट ऑफ पोटैश डालें। उर्वरकों की उपर्युक्त मात्रा के एक चौथाई, आधा एवं तीन चौथाई भाग क्रमशः एक वर्ष, दो वर्ष एवं तीन वर्ष की आयुवाले पेड़ों को दें। मखरली मिट्टी में 1.2 मी. x 1.2 मी. x 1.2 मी. का तथा बलुई दोमट मिट्टी में 1मी. x 1मी. x 1मी.आकार का गड्ढ़ा खोदकर मुख्य खेतों में बीजपौधे लगाना शुरू करें। मुख्य खेत में पौदों की रोपाई शुरू करें।

मई

सिंचाई जारी रखें। खरपतवार निकाल दें और थालों में सूखे नारियल पत्ते और कयर गूदे से पलेवा करें। थालों में छिलका गाड़ने का कार्य भी किया जाए। यदि रोग-कीटों का प्रकोप पाया जाए तो यांत्रिक, रासायनिक और जैविक प्रणालियों को मिलाकर एकीकृत कीट प्रबंधन प्रणाली अपनाएं। पत्ता भक्षक इल्लियों के प्रकोप से बचाने के लिए बुरी तरह से रोगग्रस्त पत्तों को काटकर जला दें और निचले पत्तों के निम्न प्रतल पर 0.02 प्रतिशत डाइक्लोरवास का छिड़काव करें। ब्रैकोनिड जैसे परजीव्याभों को पेड़ों पर छोड़ दें। गैंडा भृंग के आक्रमण पर काबू पाने के लिए भृंग अंकुश से भृंगों को निकालकर मार दें। प्रति पेड़ 25 ग्राम सेविडोल (8जी) के साथ 250 ग्राम महीन रेत मिश्रित करके सबसे भीतर के 2-3 पर्ण कक्षों में भर दें। खाद के गड्ढ़ों को 0.01 प्रतिशत गाढ़ता में कार्बरिल (50 नम पाउडर) से उपचार करें। एरियोफिड बरूथी के प्रकोप से बचाने के लिए एज़ाडिरेक्टिन 10000 पीपीएम (7.5 मि.ली.) 7.5 मि.ली. पानी में मिलाकर जड़ों द्वारा पिला दें।

जून

गैंडा भृंग के प्रकोप से बचने के लिए रोगरोधी उपाय के रूप में साल में तीन बार सबसे ऊपर के तीन पर्णकक्षों में 250 ग्राम चूर्णित मरोट्टि/नीम खली में तुल्य मात्रा में रेत मिलाकर भर दें या नैफ्थलीन गोली (12 ग्राम/ताड़) रख दें और उसे मिट्टी से ढक दें। गैंड़ा भृंगों को हुक से निकाल दें। सब्जियों और अन्य फसलों को खाद दें। फफूंदजन्य रोगों से बचने के लिए 1 प्रतिशत बोर्डो मिश्रण से रोगरोधी छिड़काव करें।

तमिलनाडु/पुदुच्चेरी

अप्रैल

बागों की सिंचाई जारी रखें। ड्रप्स सिंचाई वाले बागों में प्रति दिन प्रति ताड़ 80 लीटर पानी या थालों की सिंचाई वाले बागों में पश्चिमी क्षेत्रों में 6 दिनों में एक बार और पूर्वी क्षेत्रों में 5 दिनों में एक बार प्रति ताड़ 500 लीटर पानी दें। कृष्ण शीर्ष इल्ली की तलाश करें। यदि कीट प्रकोप पाया जाए तो रोग ग्रस्त पत्तों और पत्तों के भागों को काटकर जलाएं। यदि कृष्णशीर्ष इल्ली का प्रकोप पाया जाए तो रोगग्रस्त ताड़ों पर 0.02 प्रतिशत डाइक्लोरवोस या मैलाथियॉन का छिड़काव करें और छिड़काव करने के 3 हफ्ते बाद लार्वा या प्यूपा परजीव्याभों को छोड़ दें। यदि धूसर/घातक पर्ण चित्ती रोग पाया जाए तो कोपर ऑक्सीक्लोराइड 0.25 प्रतिशत/कार्बेन्डाज़िम 0.1 प्रतिशत की दर पर छिड़काव दोहराया जाए या 100 मि.ली.पानी में 2ग्राम कार्बेन्डाज़िम जड़ों के द्वारा पिलाया जाए। जड़ों द्वारा दवा पिलाने और फसल की अगली कटाई के बीच 45 दिनों का अंतराल होना चाहिए। नर्सरी में बीजफल की बुवाई शुरू करें। ताड़ों के थालों में सनई और ढैंचा जैसी हरी खाद फसल की बुवाई शुरू करें।

मई

ऐसे क्षेत्रों में सिंचाई जारी रखें जहाँ पर ग्रीष्मकालीन बारिश नहीं मिलती हो। मृदा की उर्वरता बढ़ाने के लिए और मृदा की संरचना और बेहतर करने के लिए बलुई मिट्टी वाले बागों में तालाब की गाद डाल दें। बीजफलों को एकत्रित करते रहें।

यदि बरूथी का प्रकोप पाया गया है तो नीम तेल - लहसुन - साबुन मिश्रण 2 प्रतिशत (1 लीटर पानी में 20 मि.ली. नीम तेल + 20 ग्राम लहसुन पेस्ट + 5 ग्राम साबुन घोलकर) या प्रति लीटर पानी में 4 मि.ली. की दर पर 0.004 प्रतिशत एज़ाडिरेक्टिन युक्त नीम तेल दवा दूसरे से पाँचवें अपक्व गुच्छों की तरफ खास तौर से बुतामों के परिदलपुंज भाग पर और रोगग्रस्त फलों पर छिड़क दें या एज़ाडिरेक्टिन 5 प्रतिशत युक्त नीम तेल दवा 7.5 मि.ली. की दर पर उतनी ही मात्रा में पानी में मिलाकर जड़ों द्वारा पिला दें।

जून

ताड़ों के चारों तरफ थाला बनाएं। बागों से खरपतवार निकाल दें। कलिका विगलन और अन्य फफूंदजन्य रोगों से बचने के लिए एक प्रतिशत बोर्डो मिश्रण से रोगरोधी छिड़काव करें। यदि पिछले महीने नहीं डाला है तो उर्वरकों की पहली मात्रा यानि प्रति ताड़ 300 ग्राम यूरिया, 500 ग्राम सिंगल सूपर फोस्फेट और 500 ग्राम म्यूरिएट ऑफ पोटैश डालें। ताड़ के शिखरों पर गैंडा भृंग

की तलाश करके उसे बीटल हुक से निकाल दें और मार दें। गेंडा भृंग के प्रकोप से बचने के लिए रोगरोधी उपाय के रूप में साल में तीन बार सबसे ऊपर के तीन पर्णकक्षों में 250 ग्राम चूर्णित मरोट्टि/नीम खली में तुल्य मात्रा में रेत मिलाकर भर दें या नैफ्थलीन गोली (12 ग्राम/ताड़) रख दें और उसे मिट्टी से ढक दें। इस महीने में मुख्य खेत में बीजपौधों की रोपाई की जा सकती है। तंजावुर मुर्झा रोग से प्रकोपित ताड़ों की तलाश करें और उचित प्रबंधन प्रणालियाँ अपनाएं।

यदि बरुथी का प्रकोप पाया गया है तो नीम तेल - लहसुन - साबुन मिश्रण 2 प्रतिशत (1 लीटर पानी में 20 मि.ली. नीम तेल + 20 ग्राम लहसुन पेस्ट + 5 ग्राम साबुन घोलकर) या प्रति लीटर पानी में 4 मि.ली. की दर पर 0.004 प्रतिशत एज़ाडिरेक्टिन युक्त नीम तेल दवा दूसरे से पाँचवें अपक्व गुच्छों की तरफ खास तौर से बुतामों के परिदलपुंज भाग पर और रोगग्रस्त फलों पर छिड़क दें या एज़ाडिरेक्टिन 5 प्रतिशत युक्त नीम तेल दवा 7.5 मि.ली. की दर पर उतनी ही मात्रा में पानी में मिलाकर जड़ों द्वारा पिला दें।

त्रिपुरा

अप्रैल

बागों से खरपतवार निकालें एवं पानी बाहर बह जाने की सुविधाएं बढ़ाएं। इस महीने पौदों का प्रतिरोपण किया जाना चाहिए। अगर बाग में कली सड़न रोग व्यापक रूप से पाया जाता है तो 1 प्रतिशत बोर्डो मिश्रण का छिड़काव करें। गेंडा भृंग एवं लाल ताड़ घुन के प्रकोप से पेड़ों को बचाने हेतु पेड़ के भीतरी तीन-चार पत्तों के कक्षों में 25 ग्रा. सेविडॉल 8 जी 250 ग्रा. महीन रेत मिलाकर भरें। मृदा में उचित वातन हेतु बीच की जगहों की जुताई करें।

बीजफल बोने के लिए नर्सरी क्यारियाँ बनाएं। जहाँ पानी बहा देने की सुविधा नहीं होती है ऐसी भूमि में उठी क्यारियाँ बनाई जाएं। बीजफल कतारों पर बोए जाएं। दीमक के प्रकोप से बीजफलों को बचाने के लिए 20 से 25 दिनों के अंतर से दो बार 0.05 प्रतिशत क्लोरपैरिफॉस से क्यारियों का उपचार करें।

मई

बागों में निराई करें और जलनिकास के नालों की सफाई करें। खरपतवार निकालकर बागान की सफाई करें। जल निकासी की सुविधाएँ सुधारें। इस महीने के दौरान पौदों की प्रतिरोपाई शुरू की जाए। बीजफलों की बुवाई के लिए नर्सरी क्यारियाँ तैयार करें। जल-जमाव वाले क्षेत्रों में ऊँची क्यारियों का निर्माण करें। दीमकों के प्रकोप से फल को बचाने के लिए 20-25 दिनों के अंतराल में दो बार 0.05 प्रतिशत क्लोरपाइरिफोस से क्यारियों का उपचार करें। यदि कलिका विगलन रोग का प्रकोप है तो 1 प्रतिशत बोर्डो मिश्रण का छिड़काव करें, ताड़ों को गेंडा भृंग और लाल ताड़ घुन से बचाने के लिए 25 ग्राम सेविडोल 8 जी 250 ग्राम महीन रेत के साथ मिलाकर सबसे ऊपर के 3-4 पर्णकक्षों को भर दें। मृदा में अनुकूल वातन के लिए बीच की जगहों की जुताई करें।

जून

ताड़ के चारों ओर के थालों से खरपतवार निकाल दें। यदि मई में कोई हरी खाद फसल उगाई गई है तो जुताई करके वह मिट्टी में मिलाएं। गेंडा भृंग के प्रकोप से बचने के लिए रोगरोधी उपाय के रूप में साल में तीन बार सबसे ऊपर के तीन पर्णकक्षों में 250 ग्राम चूर्णित मरोट्टि/नीम खली में तुल्य मात्रा में रेत मिलाकर भर दें या नैफ्थलीन गोली (12 ग्राम/ताड़) रख दें और उसे मिट्टी से ढक दें। एकत्रित किए बीजफल वर्षाकाल का फायदा उठाते हुए बिना देरी के क्यारियों में बोएं।

पश्चिम बंगाल

अप्रैल

मेंड़ बनाएं और नाले साफ़ करें। अगर मानसून शुरू नहीं हुआ है तो सिंचाई जारी रखें। मानसून शुरू होने के पहले बीजफल बोएं और अगर आवश्यक हो तो उनकी सिंचाई करें। अगर रोपाई के लिए गड्ढे नहीं खोदे गए हैं तो अब खोदें।

पेड़ के शिखरों पर गेंडा भृंग की तलाश करें और भृंग अंकुश से भृंगों को निकालकर मार दें। पेड़ के सबसे ऊपर के 3-4 पर्णों के कक्षों में 25 ग्राम सेविड़ोल 8जी, 250 ग्राम महीन रेत मिश्रण भरें। अदरक, हल्दी तथा अन्य मौसमी सब्जियों का अंतरासस्यन करें।

मई

सिंचाई जारी रखें। नई रोपाई के लिए स्थानों का चयन करें और गड्ढ़ा खोदें। ताड़ों के शिखरों पर गेंडा भृंग की तलाश करें और भृंग अंकुश से भृंगों को निकालकर मारें। 25 ग्राम सेविडोल 8 जी 250 ग्राम महीन रेत के साथ मिलाकर सबसे ऊपर के 3-4 पर्णकक्षों को भर दें। अदरक, हल्दी और अन्य मौसमी सब्जियों की खेती शुरू करें।

जून

प्रति ताड़ 25 कि.ग्राम की दर पर हरी खाद डालें। बागों से खरपतवार निकाल दें। मुख्य खेत में बीजपौधों का रोपण शुरू करें। फफूंदजन्य रोगों से बचने के लिए 1 प्रतिशत बोर्डो मिश्रण से रोगरोधी छिड़काव करें।

51 वाँ एपीसीसी सत्र/मंत्रिस्तरीय बैठक संपन्न

51वाँ एपीसीसी सत्र/मंत्रिस्तरीय बैठक 2 से 5 फरवरी 2015 तक कोची के होटल क्राउन प्लाज़ा में संपन्न हुई। फिजी सरकार के माननीय कृषि, ग्रामीण और समुद्री विकास एवं राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन मंत्री श्री इनिया सेरुइराटु, समोआ सरकार के माननीय कृषि एवं मात्स्यिकी मंत्री श्री ले मामिया रोपाती मुआलिया सहित एपीसीसी सदस्य देशों के पूर्ण अधिकार प्राप्त प्रतिनिधिमंडल, एपीसीसी सदस्य देशों के वरिष्ठ सरकारी अधिकारीगण, पसफिक कम्यूनिटी सचिवालय , कोजेंट, इंटरनेशनल ट्रेड सेंटर, करीबियन कृषि अनुसंधान एवं विकास संस्था के निरीक्षकों ने बैठक में भाग लिया।

भारत सरकार के माननीय कृषि राज्य मंत्री श्री मोहनभाई कल्याणजीभाई कुंदरिया ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने कहा कि आर्थिक दृष्टि से किसानों का हिस्सा बढ़ाने के लिए हमें सामूहिक रूप से प्रयास करना चाहिए। उन्होंने बताया कि भारत में गठित तीन स्तरीय कृषक उत्पादक संगठन देश में नारियल उत्पादन और उत्पादकता बढ़ाने, बढ़िया किस्म की रोपण सामग्रियों का उत्पादन, प्राथमिक प्रसंस्करण हेतु उत्पादों का संचयन, उपोत्पादों की बेहतर उपयोगिता और मूल्यवर्धन, विपणन एवं निर्यात बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। उन्होंने कहा कि नारियल उत्पादों के वैश्विक बाज़ार पर कब्ज़ा करने के लिए नारियल क्षेत्र के कृषक उत्पादक संगठनों के लिए मेक इन इंडिया अभियान अत्यधिक अवसर खोलेगा। उन्होंने आशा व्यक्त की कि प्रस्तुत सत्र नारियल खेती और उद्योग से संबंधित सूचनाओं का आदान-प्रदान, चर्चाएं एवं वाद-विवाद के लिए खुली मंच के रूप में कार्य करेगा।

फिजी सरकार के माननीय कृषि, ग्रामीण और समुद्री विकास एवं राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन मंत्री श्री इनिया बटिकोटो सेरुइराटु ने अपने भाषण में नारियल क्षेत्र के विकास और सुस्थिरता के महत्व पर बल दिया जो पूरी दुनिया के लाखों पुरुषों, महिलाओं और बच्चों के पालनपोषण और जीविका का ज़रिया है। उन्होंने सूचित किया कि नारियल क्षेत्र में सहयोग हेतु भारत सरकार के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया जाएगा।

समोआ सरकार के माननीय कृषि और मात्स्यिकी मंत्री श्री लेमामिया रोपाती मुआलिया ने कहा कि भारत प्रौद्योगिकी, अच्छी कृषि रीति, प्रसंस्करण, उपस्कर, मशीनरी आदि के क्षेत्र में काफी आगे बढ़ चुका है और अन्य देश मार्गदर्शन के लिए भारत की ओर देख रहे हैं। उन्होंने सूचित किया कि भारत कयर और कयर उत्पादों के क्षेत्र में भी काफी सफल है और साथ साथ इस क्षेत्र को और व्यापक एवं विविधीकृत करने में भी प्रयत्नरत है।

एरणाकुलम के सांसद प्रो.के.वी.थोमस ने अपने अध्यक्षीय भाषण में केरल में नारियल की अहमियत पर ज़ोर दिया। उन्होंने कहा कि पौष्टिक स्वास्थ्यवर्धक पेय नीरा के आगमन से नारियल किसानों को इस फसल से किफायतमंद आय सुनिश्चित हो गया है।

केरल सरकार के माननीय मात्स्यिकी, पत्तन और आबकारी मंत्री श्री के.बाबु ने अपने विशेष भाषण में कहा कि एपीसीसी का 51वाँ सत्र उस समय आया है जब नारियल क्षेत्र की किस्मत बदलने के लिए

भारत सरकार के माननीय कृषि राज्य मंत्री श्री मोहनभाई कल्याणजीभाई कुंदरिया सत्र का उद्घाटन करते हुए

नीरा उभर आयी। सिर्फ नारियल किसान ही नहीं बल्कि नीरा तकनीशियन और उपभोक्ता भी इसका लाभ उठा सकेंगे।

एपीसीसी के अध्यक्ष और भारत सरकार के कृषि मंत्रालय के संयुक्त सचिव (एमआईडीएच) श्री संजीव चोपड़ा भाप्रसे ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि भारत में संपन्न 51वाँ एपीसीसी सत्र/मंत्रिस्तरीय बैठक वैश्विक नारियल क्षेत्र के विकास के लिए नई सरहदों को पार करने का रास्ता खोल देगा।

श्री उरोन एन सलूम, कार्यकारी निदेशक, एपीसीसी ने 51वाँ एपीसीसी सत्र/मंत्रिस्तरीय बैठक का औपचारिक परिचय देते हुए एपीसीसी की ओर से भारत सरकार के कृषि मंत्रालय और नारियल विकास बोर्ड को कोची में 51वाँ सत्र/मंत्रिस्तरीय बैठक की मेज़बानी करने के लिए आभार व्यक्त किया। कार्यकारी निदेशक ने एपीसीसी के बारे में संक्षिप्त विवरण दिया। उन्होंने अपने भाषण में सदस्य देशों को एकसाथ मिलकर अपना ज्ञान और प्रौद्योगिकियाँ आपस में बाँटने की ज़रूरत के बारे में बताया। उन्होंने सशक्त संस्थाओं और कृषक संगठनों की ज़रूरतों पर बल दिया। आगे उन्होंने सदस्य देशों के संबंधित राष्ट्रीय सरकारों द्वारा नीति संबंधी रूपरेखा तैयार करते समय नारियल फसल को प्राथमिकता देने की आवश्यकता के बारे में बताया।

कयर बोर्ड के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्रनाथ त्रिपाठी भाप्रसे ने अपने विशेष भाषण में कहा कि नारियल समुदायों की शक्ति निम्न स्तरीय कृषक संस्थानों की स्थापना पर निर्भर है।

भारत सरकार के माननीय कृषि राज्य मंत्री श्री मोहनभाई कल्याणजीभाई कुंदरिया ने डॉ.के.के.हरिदास(मृत्यूपरांत), श्री ओ.वी.आर.सोमसुंदरम और श्री विजयकुमार सी.आर. को उनकी उत्कृष्ट उपलब्धियों के लिए एपीसीसी के स्मृति चिह्न प्रदान किए। श्री मोहनभाई कल्याणजीभाई कुंदरिया ने इस अवसर पर एपीसीसी प्रकाशनों का विमोचन किया। एपीसीसी का कार्यपालक निदेशक श्री उरोन एन सलूम ने प्रतियाँ स्वीकार कीं।

नारियल विकास बोर्ड के अध्यक्ष श्री टी.के.जोस भाप्रसे ने धन्यवाद ज्ञापन भाषण में कहा कि नारियल उत्पादन करने वाले अधिकाधिक देशों को शामिल करते हुए एपीसीसी का बुनियाद और बड़ा बनाना चाहिए और नारियल अर्थव्यवस्था में किसानों को प्रमुखता देते हुए गतिविधियाँ चलानी चाहिए। उन्होंने आशा व्यक्त की कि नारियल क्षेत्र से जुड़ी चार दिवसीय चर्चाएं वैश्विक नारियल क्षेत्र के विकास के लिए फायदेमंद साबित होंगी।

मार्शल द्वीपसमूह के माननीय सार्वजनिक कार्य और संसाधन एवं विकास कार्यकारी मंत्री श्री हिरोषी वी.यमामुरा 4 फरवरी 2015 को सत्र में शरीक हुए। सत्र का समापन 5 फरवरी 2015 को हुआ। एपीसीसी का अगला अध्यक्ष इंडोनेशिया है और 52वीं एपीसीसी मंत्रिस्तरीय बैठक/सत्र इंडोनेशिया में मार्च 2016 के बाद आयोजित की जाएगी। इंडोनेशिया कृषि मंत्रालय के बारहमासी फसल निदेशक डॉ.हेरद्रजत एन. ने भारत से एपीसीसी की अध्यक्षता स्वीकार की।

बैठक में 54 प्रतिनिधियों और 2 निरीक्षकों ने भाग लिया। बैठक की मेज़बानी के लिए सुविधाएं भारत सरकार ने नारियल विकास बोर्ड और कृषि मंत्रालय के माध्यम से प्रदान की।

शुद्धिपत्र

भारतीय नारियल पत्रिका के अक्तूबर-दिसंबर 2014 अंक के पृष्ठ सं.4 में छपे "नारियल खेती में जोखिम कम करने के लिए नारियल पेड़ बीमा योजना" शीर्षक लेख में बीमा रकम और वार्षिक प्रीमियम के अंतर्गत दी गई सारणी में 16-60 वर्ष आयु के ताड़ों के लिए वार्षिक प्रीमियम 11 रुपए के स्थान पर 14 रुपए पढ़ें।

नारियल के क्षेत्र में उत्कृष्ट उपलब्धियों को सम्मानित किया गया

श्री ओ.वी.आर. सोमसुंदरम, स्वर्गीय डॉ.के.के.हरिदास की पत्नी श्रीमती अनुराधा और श्री सी.आर.विजयकुमार भारत सरकार के माननीय कृषि राज्य मंत्री श्री मोहनभाई कल्याणजीभाई कुंदरिया से एपीसीसी का स्मृति चिह्न स्वीकार करते हुए

2 से 5 फरवरी 2015 तक कोची में संपन्न एशियन और पैसफिक कोकोनट कम्यूनिटी(एपीसीसी) के 51वीं मंत्रिस्तरीय बैठक/सत्र में तीन भारतीयों को नारियल क्षेत्र में उनके महत्वपूर्ण योगदान के लिए सम्मानित किया गया। वे हैं तमिलनाडु के पोल्लाची से श्री ओ.वी.आर.सोमसुंदरम, केरल से डॉ.के.के.हरिदास (स्वर्गीय) और कर्नाटक से श्री सी.आर.विजयकुमार।

ओ.वी.आर.सोमसुंदरम

ओ.वी.आर.सोमसुंदरम एक सफल किसान है जो पोल्लाची के निकट ओडैयाकुलम गाँव स्थित अपने खेत में मिश्रित रोपण फसल प्रणाली के अंतर्गत नारियल और जायफल, कोको, कालीमिर्च जैसी रोपण फसलों की खेती कर रहे हैं। वे नारियल, जायफल और कालीमिर्च की उत्तम नस्ल की रोपण सामग्रियाँ प्रदान करके किसानों की मदद करते हैं। मद्रास क्रिस्टियन कॉलेज से सस्यविज्ञान में स्नातक उपाधि प्राप्त ओ.वी.आर. भारत में वैज्ञानिक विधि के साथ खेती करने वाले अनुभवी जायफल उत्पादक है और फसल उत्पादन में वे काफी अनुभव रखते हैं। वे जानकारियों का प्रचार-प्रसार करने के साथ साथ सहयोगी किसानों एवं वैज्ञानिक समुदाय के साथ अपने अनुभव भी बाँटते हैं। 1996 में, पत्ता भक्षी इल्ली *टरनाका अकूटा* के प्रकोप के दौरान तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय, केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, नारियल विकास बोर्ड, कोची, कृषि विभाग, तमिलनाडु और किसान दोस्तों के मार्गदर्शन और सहायता से किण्णत्तुकडवु क्षेत्रों में उन्होंने जो नियंत्रणोपाय स्वीकार किया था वह उनकी महत्वपूर्ण उपलब्धियों में से एक है। दो वर्ष के बाद 1998 में तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय के सेवानिवृत्त कीटवैज्ञानिक डॉ.मोहनसुंदरम की मदद से पोल्लाची क्षेत्रों में नारियल एरियोफाइड बरुथी का प्रकोप पहली बार पहचाना गया और कोयंबत्तूर जिले के जिलाधीश को नियंत्रणोपाय के संबंध में 30 प्रकार के कीटनाशियों की जाँच संबंधी विवरण दिए। बाद में तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय ने भी नियंत्रणोपाय के रूप में वही कीटनाशी की सिफारिश की थी। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड़ एवं कायंकुलम, नारियल विकास बोर्ड, भारतीय मसाला अनुसंधान संस्था, तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय, कृषि एवं बागवानी विभाग, तमिलनाडु सरकार ने ओ.वी.आर. के फार्म को मोडल फार्म के रूप में चुना। व्यावहारिक जानकारी के लिए कोर्नल विश्वविद्यालय, इताका, यूएसए और अन्य अंतर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय विश्वविद्यालय के छात्र एवं वैज्ञानिक नियमित रूप से फार्म का दौरा करते हैं। हाल में जून 2014 के दौरान आस्त्रेलिया, न्यूजिलैंड और युनाइटेड किंगडम के नौ नफील्ड शिक्षार्थियों ने उनके फार्म का दौरा किया। वैसे ही, लैट रोब विश्वविद्यालय के 15 आस्त्रेलियन छात्रों ने उनके प्रोफसर डॉ.पीटर सेल के साथ जनवरी 2014 में ओडैयाक्कुलम स्थित सोमसुंदरम के फार्म का दौरा किया। वर्तमान में ओ.वी.आर.सोमसुंदरम दूरदर्शन केन्द्र, चेन्नई में कृषि सलाहकार समिति के सदस्य, कोयंबत्तूर स्थित वन आनुवंशिकी एवं ताड़ प्रजनन संस्था के अनुसंधान सलाहकार

ग्रूप के सदस्य और तमिलनाडु जैव खेती नीति के आलेखन समिति के सदस्य हैं। पहले तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय, कोयंबत्तूर के प्रबंधन मंडल के सदस्य; क्षेत्रीय अनुसंधान परिषद के सदस्य; नारियल विकास बोर्ड, कोची के अनुसंधान परिषद सदस्य; हॉनररी ट्री वार्डन, इंदिरा गाँधी वाइल्ड लाइफ सैंक्चुरी; सदस्य, तमिलनाडु वन विभाग सलाहकार समिति; सदस्य, जैव प्रमाणन हेतु अपील समिति, तमिलनाडु सरकार रह चुके हैं। केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड़ द्वारा प्लैटिनम जयंती समारोह के दौरान 1991 में तमिलनाडु के सर्वोत्तम नारियल किसान के पुरस्कार से उन्हें सम्मानित किया गया। तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय ने शताब्दी समारोह के दौरान 2005 में उन्हें वेलान्मै चेम्माल पुरस्कार से सम्मानित किया। "समृद्धि के लिए नारियल की जैवविविधता" विषय पर केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में नारियल आधारित मिश्रित फसल प्रणाली से उच्च आमदनी प्राप्त करने हेतु नूतन प्रौद्योगिकियों के सफलतापूर्वक एकीकरण में उनके मूल्यवान योगदान के लिए उन्हें सर्टिफिकेट ऑफ रेकगनिशन से सम्मानित किया गया। वर्ष 2010 में एनजीएम कॉलेज अलुमनी मीट द्वारा आउटस्टैंडिंग अलुमनस पुरस्कार प्रदान किया गया।

डॉ.के.के.हरिदास

डॉ.के.के.हरिदास द्वारा नारियल पर खासकर "हृदय रोग के खतरा कारकों पर पकाने के तेल के रूप में नारियल तेल का प्रभाव और बेहतरीन चिकित्सा प्राप्त हृदय धमनी रोगियों में इसका नैदानिक परिणाम; बहु असंतृप्त सूरजमुखी तेल का अनियमित उपयोग के साथ केस कंट्रोल्ड अध्ययन" विषय पर किए गए अध्ययन के लिए एपीसीसी ने उन्हें सम्मानित किया। वे नारियल विकास बोर्ड द्वारा अमृता इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइन्सस, कोची के लिए प्रायोजित अनुसंधान अध्ययन का प्रधान निरीक्षक थे। पायलट अध्ययन का प्राथमिक उद्देश्य था बेहतर चिकित्सा प्राप्त हृदय धमनी रोगियों में पकाने के तेल के रूप में सीरम लिपिडों, ग्लाइसिमिक इंडिसेस, निरोक्सीकारी प्रतिरोधी स्थिति और वास्कुलर एंडोथेलियल क्रियाओं पर नारियल तेल का प्रभाव और खाना पकाने के तेल के रूप में सूरजमुखी तेल की खपत करने वाले रोगियों के साथ इसकी तुलना। इस अध्ययन के दूसरे लक्ष्य अध्ययन के दो वर्षों की अवधि में प्रमुख नैदानिक परिणामों का मूल्यांकन- प्रत्यावर्ती और खराब होती आंजिना, व्यायाम न झेल पाना, अस्पताल में पुनः भर्ती, मयोकार्डियल इन्फार्क्शन, मृत्यु, दोनों अध्ययन ग्रूपों में उदरीय मोटापे के पैरामीटरों और जिगर की कियाओं का मूल्यांकन आदि हैं। अध्ययन से पता चला कि कार्डियोवास्कुलर घटनाएं, लिपिड प्रोफाइल, निरोक्सीकारक अनुपात आंकड़ों की दृष्टि से महत्वपूर्ण नहीं हैं। सारांश यह निकला कि अध्ययन ग्रूपों में विश्लेषण किए गए पैरामीटरों के परिणामों में कोई खास अंतर नहीं दर्शित हुआ है। जब अध्ययन कार्य प्रगति पर चल रहा था सितंबर 2012 में डॉ.हरिदास का निधन हुआ। यह, विश्व में इसप्रकार चलाया गया पहला अध्ययन था जो विश्वभर नारियल पर कई नैदानिक अध्ययन चलाने के लिए रास्ता खोल सकता है।

डॉ.हरिदास का जन्म कोष़िक्कोट में हुआ था और वे आलप्पुष़ा के कुट्टनाट तालुक के मंकोम्प के निवासी थे। उन्होंने कस्तूरबा मेडिकल कॉलेज, मणिपाल से एमबीबीएस की उपाधि बयोकेमिस्ट्री, फार्माकोलॉजी, माइक्रोबयोलॉजी, फोरेन्सिक मेडिसिन एवं आखिरी वर्ष एमबीबीएस में रैंक के साथ हासिल की थी। उन्होंने श्री चित्तिरातिरुनाल इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइन्सेस, तिरुवनंतपुरम से कार्डियोलॉजी में अपना सूपर स्पेशियालिटी प्रशिक्षण प्राप्त किया और 1988 में भारत सरकार के अधीन चलाए गए राष्ट्रीय बोर्ड परीक्षा में उपाधि-पत्र हासिल किया। उन्होंने अपना करियर कार्डियोलॉजी के ट्यूटर और सहायक प्रोफसर के रूप में तिरुवनंतपुरम और आलप्पुष़ा मेडिकल कॉलेजों में शुरू की थी। 1990 में, ओरिगोन विश्वविद्यालय, पोर्टलैंड, यूएसए से एंजियोप्लास्टी, विविध हृदय रोगों के एथेरेक्टॉमी एवं डिवाइस चिकित्सा में प्रशिक्षण प्राप्त किया। 1990 से 1998 तक उन्होंने विजया हॉस्पिटल और मद्रास मेडिकल मिशन, चेन्नई में कंसल्टन्ट और कार्डियोलॉजी विभाग के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया। इस अवधि के दौरान, उन्होंने देश में पहली बार कई नए इंटरवेंशनल प्रक्रियाएं शुरू कीं और इनमें से कई आज भी नियमित रूप से करते आ रहे हैं। उन्होंने कई अनुसंधान पत्रिकाओं और पाठ्यपुस्तकों के अध्यायों की रचना की है और कार्डियोलॉजी में डीएनबी सहित प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए हैं। वर्ष 2002 में उन्हें इंडियन कॉलेज ऑफ कार्डियोलॉजी के फेलोशिप से सम्मानित किया गया और अमृता इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस, कोची में हार्ट

प्रोग्राम शुरू करने के लिए आमंत्रित किया गया। शुरुआत के पहले दशक में ही हार्ट संस्था ने 65,000 कथीटरैज़ेशन क्रियाएं, 10,000 ऑपन हार्ट सर्जरियाँ कीं और देश में हृदयरोग चिकित्सा में नई मिसाल खड़ी की और अंतर्राष्ट्रीय ज्ञाति प्राप्त की। डॉ.हरिदास को यूरो पीसीआर, द जेआईएम बैठक, सिंगापूर लाइव, तायवान लाइव, यूएसए का एकेएमजी मीट और ऐसे कई कार्यक्रमों में आमंत्रित संकाय सदस्य और अतिथि वक्ता के रूप में अंतर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा प्राप्त हुई। वर्ष 2007 में उन्हें इमेक्स टैवेलिंग पुरस्कार प्राप्त हुआ; वे स्विटज़ेरलैंड के शिक्षा जगत में आमंत्रित अनुशासन अधिकारी के रूप में भी कार्य करते थे और कई देशों में कई अध्यापन फोरम एवं बैठकों में उन्होंने जीवंत सर्जरी की है। आप एआईएमएस में इंटरवेंशनल फेलोशिप प्रशिक्षण कार्यक्रम और डीएम कार्यक्रम में सहायक के रूप में कार्य किए हैं। आप कार्डियोलॉजी में कई अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रमों के सलाहकार और प्रधान निरीक्षक के रूप में कार्य किए हैं और उन्हें सरकारी एवं गैर सरकारी और अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधान निकायों से अनुसंधान अनुदान प्राप्त हुए हैं। डॉ.हरिदास को वर्ष 2010 में डब्लिन में रोयल कॉलेज ऑफ फिज़िशियन्स ऑफ आयरलैंड ने एफआरसीपी की उच्च पदवि से पुरस्कृत किया। वर्ष 2010 के दौरान चिकित्सा क्षेत्र में योगदान के लिए इस उपाधि के सात प्राप्तकर्ताओं में से एक आप थे।

सी.आर.विजयकुमार

सी.आर.विजयकुमार ने 1960 में नारियल की खेती शुरू की थी। उनके बागों में लंबा x बौना, तिप्तुर लंबा और पश्चिम तटीय लंबा नारियल एवं खरबूजे की खेती की जाती है। खरबूज़े में जापानीस योमोटो क्रीम और कुडमा सीका किस्मों की खेती की जाती है। उन्होंने आईआईएचआर, हेस्सरघट्टा के लिए कुम्हड़ा के किस्मों पर कई क्षेत्र परीक्षण किए, खासतौर पर अर्का चंदन, अर्का सूर्यमुखी जैसी कद्दु किस्मों, अर्का ज्योति, अर्का मोनिक आदि खरबूज़ा किस्मों पर। डॉ.प्रेमनाथ और डॉ.ओ.पी.दत्ता के मार्गदर्शन में वे थोमसन सीडलेस, अनाबि शाही, ब्यूटी सीडलेस आदि सहित अंगूर की विविध किस्मों की खेती भी कर रहे हैं। आप देश में आईआर-8 चावल उगाने वाले पहली व्यक्ति है। बीजों का प्रापण अंतर्राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्था, लेसबेनोस, लेगुना, फिलिप्पाइन्स से करते हैं। चावल की अन्य किस्मों, मूँगफली (अशिरेया मतुंडे), मक्की के संकर और मक्की के मूल बीज उत्पादन, बैंगन, कैप्सिकम आदि की खेती भी उनके खेतों में होती है। उन्होंने आईआईएचआर और यूएएस के लिए डॉ.जी.के.वीरेश के अधीन आलू जाति की फसलों पर रूट ग्रबों का प्रकोप और इसका नियंत्रण सहित कई क्षेत्र परीक्षण चलाए। वर्ष 1972 में उन्हें भारत सरकार के विस्तार निदेशालय के तत्वावधान में एक साल की अवधि के लिए यूएसए में इंटरनेशनल लिविंग में परीक्षण हेतु चुना गया। यह चयन बैंगलूर कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय द्वारा किया गया था। 1974 में आईआईएचआर द्वारा खरबूजे की खेती पर नई दिल्ली में आयोजित प्रथम कृषि मेले में कृषक प्रोफसर के रूप में सभा को संबोधित करने के लिए श्री सी.आर.विजयकुमार को चुना गया। आप कर्नाटक सरकार के लिए विस्तार निदेशक, कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय, बैंगलूर द्वारा चावल एवं अन्य फसलों की दर निर्धारित करने के पैनल के सदस्य भी हैं।

‘भारतीय नारियल पत्रिका’ के वार्षिक चंदे का नवीनीकरण

यदि आप ने भारतीय नारियल पत्रिका के वार्षिक चंदे का अब तक नवीनीकरण नहीं करवाया है तो कृपया नवीनीकरण हेतु 40 रु. का मनीऑर्डर या अध्यक्ष, नारियल विकास बोर्ड के नाम बना रेखांकित डिमांड ड्राफ्ट नीचे लिखे पते पर भेजने का कष्ट करें।

अध्यक्ष,

नारियल विकास बोर्ड, केरा भवन, कोची - 682 011.

संसदीय स्थायी समिति ने अध्ययन दौरा किया

डॉ.ई.एम.सुदर्शना नाचिप्पन की अध्यक्षता में कार्मिक, लोक शिकायत, नियम और न्याय पर संसदीय स्थायी समिति ने 27 जनवरी से 4 फरवरी 2015 तक मधुरै, रामेश्वरम, चेन्नई, बंगलुरु और कोची का दौरा किया और सार्वजनिक उपक्रमों, राज्य सरकारों और अन्य लाभभोगियों के साथ चर्चाएं कीं। नारियल विकास बोर्ड ने नागरिक चार्टर, लोक शिकायत निवारण उपाय, आरटीआई अधिनियम और केन्द्र सरकारी संगठनों में सरकार की आरक्षण नीति पर प्रस्तुति पेश की।

संसदीय समिति के सदस्य नीरा का स्वाद आज़माते हुए। नाविबो अध्यक्ष श्री टी.के.जोस भाप्रसे भी चित्र में दर्शित हैं

नारियल विकास बोर्ड के प्रयासों के लिए सीएसीपी की सराहना

कृषि लागत एवं मूल्य आयोग (सीएसीपी) ने नारियल की उत्पादकता एवं प्रापण में वृद्धि लाने हेतु नारियल विकास बोर्ड के प्रयासों और कृषक संगठन बनाने के लिए बोर्ड की पहल की सराहना की। सीएसीपी प्रमुख कृषि उत्पादों के लिए मूल्य नीति बनाने के संबंध में सरकार को सलाह देने वाला सांविधिक निकाय है। आयोग, प्रापण पद्धति मज़बूत बनाने की सिफारिश ज़ोर से करता है। आयोग ने उम्मीद की है कि नारियल विकास बोर्ड की पहल से गठित नारियल उत्पादक समितियाँ और नारियल उत्पादक फेडरेशन बेहतर तरीके से प्रापण गतिविधियाँ चला सकेंगे। आयोग ने कहा है कि उत्पादकता स्तर बढ़ाने के लिए कृषक उत्पादक संगठनों के गठन के लिए समर्थन देना चाहिए और नियमित रूप से बड़ी संख्या में उत्पादक संगठनों का गठन करते रहना चाहिए जिससे कि बागानों का बेहतर प्रबंधन, वैज्ञानिक प्रौद्योगिकियों का अभिग्रहण और कटाई एवं कटाई उपरांत तकनीकों का प्रयोग सुगम बन जाएं।

आयोग यह भी सिफारिश करता है कि नारियल की प्रापण अवधि मौजूदा 90 दिनों से बढ़ाकर 6 महीने करा दी जाए। वर्ष 2015 के लिए खोपड़े की मूल्य नीति पर सीएसीपी ने जो रिपोर्ट बनायी है उसमें यह भी उल्लेख किया है कि नीरा के मूल्यवर्धित उत्पाद जैसे नारियल शक्कर, सिरप, शहद और नारियल आधारित उत्पाद जैसे नारियल खोपड़ी उत्पाद, कयर आदि के उत्पादन के लिए समर्थन देना होगा और बड़े पैमाने पर इसका उत्पादन करना होगा क्योंकि वाणिज्यिक दृष्टि से इनकी असीम संभावनाएं हैं। आयोग का सुझाव है कि नारियल उत्पादों की मूल्य श्रृंखला का और अधिक विकास और विस्तार करना चाहिए ताकि खोपड़ा और नारियल तेल जैसे परंपरागत नारियल उत्पादों से हटकर कच्चे नारियल का उपयोग नए नए मूल्यवर्धित उत्पादों के रूप में किया जा सकें जिससे कि अधिक मुनाफा प्राप्त हो जाएं।

पश्चिम गोदावरी (आंध्र प्रदेश), चित्रदुर्गा (कर्नाटक), मलप्पुरम (केरल) और कृष्णगिरी (तमिलनाडु) जैसे जिलों के उत्पादकता स्तर पर अध्ययन चलाना अनिवार्य है क्योंकि इन जिलों की उत्पादकता, संबंधित राज्यों की औसतन उत्पादकता से काफी अधिक है। अन्य जिलों में भी यहाँ अपनाई जा रही खेती प्रणालियों और कृषि साधनों का प्रचार किया जा सकता है और इसे अपनाया जा सकता है।

बोर्ड की 121वीं बैठक संपन्न हुई

नाविबो की 121वीं बोर्ड बैठक का दृश्य

नारियल विकास बोर्ड की 121वीं बोर्ड बैठक 23 मार्च 2015 को बंगलुरु में बोर्ड के अध्यक्ष श्री टी.के.जोस भाप्रसे की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बोर्ड के सदस्य श्री सी.पी.नारायणन, सांसद(राज्य सभा), श्री तोटा नरसिंहम, सांसद(लोक सभा), डॉ.ए.राममूर्ति, कृषि निदेशक, पुतुच्चेरी, डॉ.पी.चौदप्पा, निदेशक, सीपीसीआरआई, श्री नवीन कुमार सक्सेना, कृषि निदेशक, लक्षद्वीप और श्री जोहार खान ने बैठक में भाग लिया। श्री के.एस. श्रीनिवास भाप्रसे, कृषि निदेशक, कृषि एवं सहकारिता विभाग, कृषि मंत्रालय ने विशेष आमंत्रित के रूप में बैठक में भाग लिया। बैठक में नाविबो की योजनाओं के कार्यान्वयन की प्रगति की समीक्षा की और वर्ष 2015-16 के दौरान 175.85 करोड़ रुपए की कुल लागत पर विविध विकासात्मक कार्यक्रम कार्यान्वित करने के लिए बोर्ड द्वारा बनाई गई अनंतिम वार्षिक कार्ययोजना पर चर्चा हुई।

नारियल तेल पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन(आईसीसीओ) संपन्न

नाविबो के मुख्य नारियल विकास अधिकारी देश की रिपोर्ट पेश करते हुए

नारियल तेल पर पहला अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (आईसीसीओ) 17 से 20 मार्च तक थाईलैंड के बैंकोक में संपन्न हुआ। "नारियल तेल के स्वास्थ्यपरक और न्यूट्रास्यूटिकल गुणों के बारे में जागरूकता बढ़ाना: अतीत से वर्तमान तक" विषय पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन कंसर्वेशन एंड डेवलपमेंट ऑफ कोकनट ऑयल(सीडीसीओ) ऑफ थाईलैंड फॉरम; कृषि विभाग, थाईलैंड सरकार; खाद्य एवं कृषि संगठन(एफएओ); एशिया और पसफिक क्षेत्रीय कार्यालय; थाईलैंड बागवानी विज्ञान समिति(एचएएसएसटी) और एशियन पसफिक कोकोनट कम्यूनिटी(एपीसीसी), जकार्ता ने मिलकर किया था।

माननीय कृषि एवं सहकारी उप मंत्री डॉ.एपिचार्ट पोंगश्रीहादुलचाई ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की और आमुख भाषण दिया। कार्यक्रम के सिलसिले में नारियल तेल के वैश्विक उत्पादन और उपयोगिता की मौजूदा स्थिति, सात सहभागी देशों में नारियल तेल के उत्पादन और व्यापार के बारे में संबंधित देशों की रिपोर्ट, नारियल तेल का उत्पादन, प्रसंस्करण और नारियल तेल से निर्मित उत्पाद एवं नारियल तेल के औषधीय उपयोग पर सत्र का आयोजन हुआ। नारियल उत्पादक देशों से नारियल तेल के राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधानकर्ता और वैज्ञानिक, चिकित्सा क्षेत्र के अनुसंधानकर्ता और प्रैक्टीशनर, कृषिविद्, कृषक, प्रक्रमणकर्ता, उद्यमी, कृषि व्यवसाय निवेशक और प्रमाणन एजेंसियों ने कार्यक्रम में भाग लिया। नारियल विकास बोर्ड, भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए मुख्य नारियल विकास अधिकारी श्री सुगत घोष ने बैठक में भाग लिया। श्री सुगत घोष ने दूसरे सत्र की अध्यक्षता की और भारत में नारियल के उत्पादन और व्यापार पर देश की रिपोर्ट प्रस्तुत की। सम्मेलन के भाग स्वरूप नारियल उत्पादों की प्रदर्शनी होर्टि एशिया 2015 और एक क्षेत्र दौरे का भी आयोजन किया गया।

नारियल प्रौद्योगिकी मिशन की परियोजना अनुमोदन समिति ने 13 परियोजनाओं के लिए मंजूरी दी

नारियल विकास बोर्ड के अध्यक्ष श्री टी.के.जोस भाप्रसे की अध्यक्षता में कोची में संपन्न परियोजना अनुमोदन समिति की 44 वीं बैठक में 4079 करोड़ रुपए का कुल परिव्यय और 3.45 करोड़ रुपए की सहायिकी सहित 13 परियोजनाओं के लिए अनुमति दी गई। परियोजनाओं में तीन अनुसंधान परियोजनाएं और प्रसंस्करण एवं उत्पाद विविधीकरण पर 10 परियोजनाएं शामिल हैं।

प्रसंस्करण और उत्पाद विविधीकरण उप संघटक के अधीन प्रति दिन 60,000 फलों की प्रसंस्करण क्षमता वाली शोषित नारियल पाउडर इकाई, प्रति दिन 10,000 फलों के प्रसंस्करण की क्षमता वाली एक वेर्जिन नारियल तेल इकाई, प्रति दिन 8000 डाब की प्रसंस्करण क्षमता वाली दो डाब पानी परिरक्षण एवं पैकेजिंग इकाइयाँ, प्रति दिन 44 मेट्रिक टन खोपड़ी की प्रसंस्करण क्षमता वाली तीन नारियल खोपड़ी आधारित सक्रियित कार्बन इकाइयाँ और प्रति वर्ष 61,60,000 फलों की प्रसंस्करण क्षमता वाली तीन खोपड़ा/गोल खोपड़ा इकाइयों के लिए वित्तीय सहायता दी जाएगी।

केरल में, प्रति दिन 3000 डाब की प्रसंस्करण क्षमता वाली एक इकाई, प्रति वर्ष 61,60,000 फलों की प्रसंस्करण क्षमता वाली तीन खोपड़ा/गोल खोपड़ा इकाई, कर्नाटक में प्रति दिन 22 मेट्रिक टन खोपड़ियों की प्रसंस्करण क्षमता वाली एक नारियल खोपड़ी आधारित सक्रियित कार्बन इकाई और तमिलनाडु में प्रति दिन 10,000 फलों की प्रसंस्करण क्षमता वाली एक वेर्जिन नारियल तेल इकाई, प्रति दिन 60,000 नारियल के प्रसंस्करण के लिए एक शोषित नारियल पाउडर इकाई, प्रति दिन 5000 डाब के प्रसंस्करण के लिए एक डाब पानी प्रसंस्करण इकाई, प्रति दिन 22 मेट्रिक टन नारियल खोपड़ियों के प्रसंस्करण के लिए दो नारियल खोपड़ी आधारित सक्रियित कार्बन इकाइयों के लिए वित्तीय सहायता दी जाएगी।

डॉ.ए.जी.गोपालकृष्णा, वैज्ञानिक, केन्द्रीय खाद्य प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर), मैसूर; डॉ.विनायक हेगडे, अध्यक्ष, फसल संरक्षण, सीपीसीआरआई, कासरगोड; श्री वेंकटेश एन.हुब्बल्ली, निदेशक, काजू और कोको विकास निदेशालय, श्रीमती उषा के., सहायक महा प्रबंधक, नाबार्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, तिरुवनंतपुरम; श्री एम.एम.जोस, वरिष्ठ विपणन विकास अधिकारी, डीएमआई, कोची; नारियल विकास बोर्ड के मुख्य नारियल विकास अधिकारी श्री सुगत घोष, सचिव डॉ.ए.के.नंदी और उप निदेशक श्री हेमचंद्रा ने बैठक में भाग लिया।

परियोजना अनुमोदन समिति की 44वीं बैठक का दृश्य

प्रबीउ फार्म, कोंडागाँव में महिला किसानों की बैठक संपन्न

नारियल विकास बोर्ड के प्रबीउ फार्म, कोंडागाँव में 12 मार्च 2015 को महिला किसानों की बैठक आयोजित की गई। अधिकांश महिला किसान नक्सल प्रभावित नारायणपुर गाँव से थीं और वे रामकृष्ण मिशन आश्रम से जुड़कर अपने खेतों में चावल और खुंभी की खेती करती हैं। वे स्वावलंबी संगठन के ज़रिए अपने उत्पादों का विपणन भी करती हैं।

नारायणपुर जिले के स्वावलंबी संगठन की 16 महिलाओं ने बैठक में भाग लिया और उन्हें नारियल की खेती प्रौद्योगिकी, काली मिर्च एवं दालचीनी की फसल तुड़ाई आदि पर फार्म पर ही प्रशिक्षण दिया गया और नारियल के पत्तों से झाड़ू निर्माण की विधि निर्दशित की गई। महिला किसानों ने इस कार्यक्रम में काफी दिलचस्पी दिखाई और कुछ महिलाओं ने नारियल के सुविधाजनक आहार पदार्थों पर प्रशिक्षण चलाने का अनुरोध किया ताकि उनकी दैनिक आमदनी में बढ़ोत्तरी लायी जा सके। प्रशिक्षणार्थियों को फार्म के दौरे के लिए ले जाया गया और कोंडागाँव फार्म में उगाए जा रहे कोको, काली मिर्च, नींबु, दालचीनी, कॉफी, आम आदि फसलों के बारे में उनकी शंकाओं का समाधान करके निदर्शन किया गया।

बोर्ड के सहायक निदेशक श्री आर.एस.सेंगर प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण देते हुए

महाराष्ट्र के चौल में एफओसीटी प्रशिक्षण आयोजित

नारियल विकास बोर्ड के राज्य केन्द्र, ठाणे ने कृषक कल्याणकारी संस्था, चौल, अलिबाग तालुक, रायगढ़ जिला के सहयोग से 19 से 24 फरवरी 2015 तक पाटील गार्डन, चौल में नारियल पेड़ पर चढ़ने की मशीन का प्रयोग करके फसल तुड़ाई सहित पौधा संरक्षण पहलुओं पर एफओसीटी प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन श्री पांडुरंग साल्वे, तालूक कृषि अधिकारी, अलिबाग, रायगढ़ जिला ने किया। कार्यक्रम में नाविबो के अधिकारी एवं अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। नाविबो की कार्यक्रम अनुसूची के अनुसार छह दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के उपरांत प्रशिक्षणार्थियों का मूल्यांकन करने के लिए एक लिखित परीक्षा आयोजित की गई। कार्यक्रम के सहभागी 20 प्रशिक्षणार्थियों के बीच प्रतियोगिता चलाई गई और विजेताओं को पुरस्कार दिए गए।

समापन समारोह के अवसर पर रायगढ़ जिले के कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। बोर्ड के ठाणे स्थित राज्य केन्द्र के क्षेत्र अधिकारी श्री शरद आगलावे ने स्वागत भाषण दिया। प्रगतिशील किसान श्री रघुजिराजे आंग्रे कार्यक्रम के मुख्य अतिथि रहे। उन्होंने मुख्यातिथि का भाषण दिया और प्रशिक्षणार्थियों को नारियल पेड़ पर चढ़ने की मशीनें एवं प्रमाणपत्र और प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए। दिनांक 24.02.2015 को शाम 5.00 बजे कार्यक्रम समाप्त हुआ।

प्रशिक्षण कार्यक्रम में सफलतापूर्वक प्रशिक्षण पूरा किए प्रशिक्षणार्थी

नारियल विकास बोर्ड ने विज़न राजस्थान 2015 प्रदर्शनी में भाग लिया

बोर्ड के स्टाल का दृश्य

नारियल विकास बोर्ड ने 1 से 3 मार्च 2015 तक सर्वश्री फ्रेंड्स एक्सिबिशन्स प्राइवेट लिमिटेड द्वारा तीन दिवसीय किसान मेले के साथ उदयपुर के कृषि विज्ञान केन्द्र में आयोजित विज़न राजस्थान 2015 प्रदर्शनी में भाग लिया। डॉ.एस.अय्यप्पन, सचिव (डीएआरई) एवं महा निदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने 1 मार्च 2015 को आमंत्रित गणमान्य व्यक्तियों एवं वरिष्ठ अधिकारियों की समुपस्थिति में मेले का उद्घाटन किया।

बोर्ड ने नारियल से बनाए जाने वाले नूतन, उपयोगी और विपणनयोग्य मूल्यवर्धित उत्पादों और प्रकाशनों एवं पत्रिकाओं के साथ पहली बार उदयपुर प्रदर्शनी में भाग लिया। स्टाल में आए किसान और आम जनता पहली बार ये जानकारी पा रहे थे कि नारियल से कुदरती स्वास्थ्यदायक इतने सारे उत्पाद बनाए जा सकते हैं। स्कूल और कॉलेज एवं अन्य संस्थानों के छात्र भी नारियल के बहुमुखी उपयोगों से पहली बार परिचित हो रहे थे। स्टाल में प्रमुख नारियल उत्पादों जैसे नारियल दूध पाउडर, आदिवासी उत्पाद, वेर्जिन नारियल तेल और सौन्दर्यवर्धक सामग्रियाँ एवं डाब पानी की बिक्री की व्यवस्था भी की गई थी।

कई सरकारी संगठनों और निजी संस्थाओं ने प्रदर्शनी में भाग लिया। प्रदर्शनी के आयोजकों ने आगंतुकों के लिए खासतौर पर विद्यार्थियों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित कीं। प्रदर्शनी देखने के लिए तकरीबन पचास हज़ार से अधिक लोग आए। नारियल विकास बोर्ड को सर्वोत्तम प्रदर्शनी श्रेणी में माननीय लोक सभा सांसद श्री अर्जुन लाल मीणा से मोमेन्टो प्राप्त हुआ।

कृषि विज्ञान मेला 2015

नारियल विकास बोर्ड ने भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा, नई दिल्ली द्वारा आयोजित तीन दिवसीय कृषि विज्ञान मेले में भाग लिया। माननीय केन्द्रीय कृषि एवं खाद्य प्रसंस्करण उद्योग राज्य मंत्री डॉ.संजीव कुमार बालियान ने श्री सिराज हुसैन, सचिव (कृषि एवं सहकारिता), डॉ.एस.अय्यप्पन, सचिव(डीएआरई) एवं महानिदेशक, आईसीएआर और अन्य गणमान्य व्यक्तियों की समुपस्थिति में मेले का उद्घाटन किया।

डॉ. जी.आर.सिंह, निदेशक, बाविसूकें, नई दिल्ली स्टाल में आए किसानों को जानकारी देते हुए

बोर्ड के स्टॉल में नारियल और नारियल के विविध हिस्सों से बने कई मूल्यवर्धित उत्पाद प्रदर्शित किए गए। स्टाल में नारियल और नारियल उत्पादों के न्यूट्रास्यूटिकल और स्वास्थ्य लाभों को उजागर करने वाले आकर्षक पोस्टर भी प्रदर्शित किए गए। नारियल की खेती, डाब पानी और नारियल से बनाए जाने वाले खाद्य उत्पादों के स्वास्थ्य लाभ, खोपड़ी आधारित औद्योगिक उत्पाद एवं दस्तकारियां, बोर्ड की योजनाएं आदि पर सूचनात्मक पुस्तिकाएं आगंतुकों को वितरित किए गए। स्टाल में प्रमुख नारियल उत्पादों की बिक्री की व्यवस्था भी की गई थी।

भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, राज्य कृषि विश्वविद्यालयों, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की संस्थाओं, निजी एवं सार्वजिनक उपक्रमों, गैर सरकारी संगठनों/समितियों और प्रगतिशील किसानों ने कृषक जनता के हित के लिए अपनी प्रौद्योगिकियाँ प्रदर्शित कीं। देश के विविध भागों से बड़ी संख्या में लोग प्रदर्शनी देखने के लिए आए।

आईएआरआई के फार्म में किसानों के लिए क्षेत्र दौरे की व्यवस्था भी की गई थी। किसानों/महिला किसानों के बीच में जानकारियों के आदान प्रदान के लिए मेले के सिलसिले में तीन तकनीकी सत्र और एक महिला सशक्तिकरण कार्यशाला भी आयोजित हुई।

केन्द्रीय/राज्य सरकारी, गैर सरकारी और निजी क्षेत्र से तकरीबन 160 स्टाल मेले में लगे थे जिससे आम जनता सहित लगभग पैंसठ हज़ार लोग आर्कषित हुए। 12 मार्च 2015 शाम को मेला समाप्त हुआ।

डॉ.जी.आर.सिंह निदेशक नियुक्त हुए

डॉ.जी.आर.सिंह, उप निदेशक, बाज़ार विकास सह सूचना केन्द्र, नारियल विकास बोर्ड, नई दिल्ली को पदोन्नत करके वहाँ निदेशक के पद पर नियुक्त किया गया है। आपको गुजरात, राजस्थान, मध्यप्रदेश, झारखंड, छत्तीसगढ़ और बिहार सहित उत्तरी क्षेत्र का प्रभार है। 12 मार्च 2015 को उन्होंने कार्यभार ग्रहण किया।

आहार 2015 - इंटर्नेशनल फुड एंड होस्पिटेलिटी मेला

नारियल विकास बोर्ड ने खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार के सहयोग से कृषि एवं प्रसंस्करित खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण(एपीईडीए), एसोसिएशन ऑफ रिसोर्स कंपनीस फॉर होस्पिटेलिटी इंडस्ट्री ऑफ इंडिया (एआरसीएचआईआई), होटल एंड रेस्टॉरेन्ट एक्विप्मेंट मैनुफैक्चरर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया (एचओटीआरईएमएआई), ऑल इंडिया फुड प्रोससेर्स एसोसिएशन (एआईएफपीए), फुड एंड होस्पिटेलिटी सपोर्ट एसोसिएशन ऑफ इंडिया (एफएचएसएआई) और फोरम ऑफ इंडियन फुड इंपोर्टेर्स (एफआईएफआई) जैसे शीर्षस्थ व्यापार निकायों के सक्रिय समर्थन के साथ आईटीपीओ द्वारा आयोजित 30वाँ आहार-इंटर्नेशनल फुड एंड होस्पिटेलिटी मेले में भाग लिया। दक्षिण एशिया की सबसे बड़ी प्रदर्शनी आहार 2015 का उद्घाटन 10 मार्च 2015 को नई दिल्ली के प्रगति मैदान में माननीय केन्द्रीय खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्री श्रीमती हरसिमरत कौर बादल ने किया।

बोर्ड के स्टाल का दृश्य

मेले में नारियल विकास बोर्ड ने एक प्रदर्शनी स्टाल लगाया। बोर्ड के स्टाल में देश के विभिन्न उद्यमों द्वारा नारियल से बनाए गए आहार, पेय, रेशा, लकड़ी और स्वास्थ्य उत्पाद प्रदर्शित किए गए। आगंतुकों

को डाब पानी, इसकी गरी, परिपक्व नारियल, नारियल तेल, नारियल दूध, नीरा एवं इससे उत्पादित खाद्य पदार्थों के पौष्टिक मूल्यों और स्वास्थ्य लाभों के बारे में बताया। अन्य खाद्य और मालिश तेलों के मुकाबले में वेर्जिन नारियल तेल के उत्कृष्ट गुणों के बारे में भी लोगों को बताया गया। बोर्ड के प्रदर्शनी स्टाल में डिब्बाबंद डाब पानी, नारियल पानी आधारित सिरका, वेर्जिन नारियल तेल एवं वेर्जिन नारियल तेल आधारित उत्पाद जैसे माउथ फ्रेशनर, हेयर क्रीम, शिशु मालिश तेल, त्वचा संरक्षण तेल, केश तेल, कैप्स्यूल आदि, नारियल तेल, नारियल दूध, शोषित नारियल पाउडर, नारियल दूध पाउडर, नारियल पानी से बने सिरके से तैयार किए गए आचार, शोषित नारियल आधारित मिठाइयाँ, नारियल चिप्स आदि का व्यापार करने वाले भारतीय विनिर्माताओं और डीलरों को अपने उत्पाद प्रदर्शित करने के लिए आमंत्रित किया गया। व्यवसाय में इच्छुक आगंतुकों से उन्हें अच्छी प्रतिक्रिया प्राप्त हुई। बैकरी उद्योग के स्टाल में जो शेफ मौजूद थे, वे बोर्ड का स्टाल देखने आए और शोषित नारियल, नारियल दूध/दूध पाउडर, सिरका आदि के उपयोग और इनकी गुणवत्ता के बारे में चर्चा की। बोर्ड के अधिकारियों ने व्यवसाय में इच्छुक आगंतुकों को नारियल उत्पादों की जो अंतर्राष्ट्रीय मांग है उसके बारे में और इनकी निर्यात संभावनाओं के बारे में बताया।

आम जनता और व्यापारी गण नारियल पेड़ के विविध भागों से बनाए जाने वाले तरह-तरह के उत्पाद देखकर हैरान थे। कई लोग नारियल चिप्स, वेर्जिन नारियल तेल और अन्य मूल्यवर्धित उपभोक्ता उपयोगी उत्पाद कहाँ उपलब्ध होंगे, यह जानने के लिए उत्सुक थे। आगंतुकों को बोर्ड के प्रकाशनों के साथ साथ शोषित नारियल, सिरका, दूध और दूध पाउडर आदि से बनाए जाने वाले विभिन्न पकवानों और मिष्टान्नों के नुस्खे भी बाँटे गए।

आहार 2015 मेले में 22 देशों से 807 भागीदारों ने भाग लिया। 300 से अधिक शेफों के लिए लाईव प्रतियोगिताएं चलाई गईं और "चुनौतियाँ-खाद्य प्रसंस्करण उद्योग, जैव आहार का परिदृश्य एवं बाधाएं और पोलंड सरकार द्वारा कृषि से जुड़े विषय" आदि पर संगोष्ठियाँ आयोजित की गईं जो कि इसके मुख्य आकर्षण थे।

देश और विदेश से खाद्य और होस्पिटेलिटी क्षेत्र के व्यावसायिक पेशेवरों, व्यापारियों सहित लगभग 50,000 आगंतुकों ने मेले का दौरा किया।

बोर्ड की पत्रिकाओं की विज्ञापन दर

नारियल विकास बोर्ड के प्रकाशन हैं इंड़ियन कोकोनट जर्नल (अंग्रेज़ी) इंडियन नालिकेरा जर्नल (मलयालम), भारतीय नारियल पत्रिका (हिंदी), भारतीय तेंगु पत्रिका (कन्नड़), इंडिया तेन्नै इदष़ (तमिल), भारतीय कोब्बारी पत्रिका (तेलुगु) तथा भारतीय नारल पत्रिका (मराठी)। इन पत्रिकाओं में वैज्ञानिक नारियल कृषि तथा नारियल उद्योग से संबंधित लेख प्रकाशित करते आ रहे हैं। इन पत्रिकाओं के अधिकांश ग्राहक किसान, अनुसंधानकर्ता, उद्योगपति, व्यापारी, पुस्तकालय आदि हैं।

विज्ञापन के आकार	इंडियन कोकनट जर्नल (अंग्रेज़ी पत्रिका)	इंडियन नालिकेरा जर्नल (मलयालम पत्रिका)	इंडिया तेन्नै इदष़ (तमिल त्रैमासिक)	भारतीय तेंगु पत्रिका (कन्नड़ त्रैमासिक)	भारतीय नारियल पत्रिका (हिंदी त्रैमासिक)	भारतीय कोब्बारी पत्रिका (तेलुगु अर्धवार्षिक)	भारतीय नारल पत्रिका (मराठी अर्धवार्षिक)
पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	Nil	Nil	5000	5000	Nil	5000	5000
पूरा पृष्ठ (रंगीन)	20000	20000	10000	10000	5000	10000	10000
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	Nil	Nil	3000	3000	Nil	3000	3000
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	Nil	Nil	1500	1500	Nil	1500	1500
बाहरी पृष्ठ का भीतरी भाग (रंगीन)	25000	25000	10000	10000	8000	10000	10000
बाहरी पृष्ठ (रंगीन)	30000	30000	15000	15000	10000	15000	15000

* प्रत्येक पत्रिका में एक बार विज्ञापन देने की दर।

पत्रिका के किन्हीं दो अंकों में एक ही समय विज्ञापन देने पर 10 प्रतिशत की तथा तीन या अधिक अंकों में एक ही समय विज्ञापन देने पर 12 प्रतिशत की छूट दी जाएगी। मान्य विज्ञापन एजेंसियों को 15 प्रतिशत की छूट दी जाएगी।

भारतीय अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेला 2014

बोर्ड के नई दिल्ली स्थित बाज़ार विकास-सह-सूचना केंद्र ने 14 से 27 नवंबर 2014 तक नई दिल्ली के प्रगति मैदान में इंडिया ट्रेड प्रमोशन आर्गनाइज़ेशन द्वारा आयोजित 34 वाँ भारतीय अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेले में भाग लिया। मेले का उद्घाटन भारत के माननीय राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी ने किया। उन्होंने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि मेला देश-विदेश के व्यापारियों को आपस में मिलने के लिए आम मंच प्रदान करता है। उन्होंने आगे कहा कि भारतीय अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेला विनिर्माण तथा निवेश के लिए उपयुक्त स्थान के रूप में भारत के प्रति बढ़ती दिलचस्पी का निदर्शन है। भारत सरकार के वाणिज्य एवं उद्योग राज्य मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारामन तथा सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम राज्य मंत्री श्री कलराज मिश्रा तथा दिल्ली के उप राज्यपाल श्री नजीब जंग भी समारोह में उपस्थित थे।

भारत सरकार के माननीय कृषि मंत्री श्री राधा मोहन सिंह नाविबो स्टाल में

बोर्ड के स्टाल में दर्शकगण

नारियल विकास बोर्ड ने कृषि पवलियन में लगाए अपने थीम स्टाल में डाब पानी, परिपक्व नारियल तथा नारियल तेल के स्वास्थ्य वर्धक गुणों के संबंध में लोगों की जागरूकता तथा बाज़ार में माँग बढ़ाने केलिए मूल्य वर्धित नारियल उत्पादों की विस्तृत श्रेणी का प्रदर्शन किया। नारियल उत्पादों की बिक्री के लिए बोर्ड का एक कियोस्क भी लगाया गया।

माननीय केंद्रीय कृषि मंत्री श्री राधामोहन सिंह ने बोर्ड के स्टाल का दौरा किया और नीरा, डाब पानी, नारियल दूध पाउडर आदि नारियल उत्पादों के बारे में पूछताछ की। श्री आशिष बहुगुणा भाप्रसे, सचिव, कृषि एवं सहकारिता विभाग, श्री अनूप कुमार ठाकुर, सचिव, मात्स्यिकी, डेरी तथा पशुपालन विभाग तथा श्री राघवचंन्द्रा, अपर सचिव एवं वित्तीय सलाहकार, कृषि मंत्रालय ने भी बोर्ड के स्टाल का दौरा किया।

बोर्ड के स्टाल में सर्वश्री सुभिक्षा, केराटेक(प्र)लि, कोष्क्किोट हान्डिक्राफ्ट्स सोसाईटी, अनु कोको प्रोडक्ट्स, नक्षत्रा एंटरप्राइज़ज, दिनेश फुड्स, रबको, दिल्ली के बिक्री सह निदर्शन काउंटर थे।

परिदर्शकों को डाब, नारियल, नारियल तेल, वेर्जिन नारियल तेल तथा अन्य मूल्य वर्धित नारियल उत्पादों के स्वास्थ्य वर्धक गुणों के बारे में बताया गया और शोषित नारियल पाउडर, पैकटबंद डाब पानी, नारियल दूध आदि मूल्य वर्धित उत्पादों का सुविधाजनक उपयोग, खाद्येतर नारियल उत्पादों और घरेलू तथा औद्योगिक प्रयोजनों के लिए नारियल उत्पादों का उपयोग आदि के संबंध में समझाया गया। खेती में रुचि रखनेवालों को नारियल खेती के संबंध में भी बताया गया।

वेर्जिन नारियल तेल, शोषित नारियल पाउडर, नारियल तेल, नारियल खोपड़ी/कयर आधारित औद्योगिक, उपयोगी वस्तुओं और कलाकृतियों का प्रदर्शन किया गया और केरल, तमिलनाडु, अंडमान निकोबार द्वीपसमूह तथा लक्षद्वीप के बिक्री काउंटरों में ये खरीदी के लिए उपलब्ध कराए गए। सरकारी और गैर सरकारी और निजी संगठनों के साथ कुल मिलाकर 6000 प्रदर्शकों ने मेले में भाग लिया।

आविष्कार 2014

नारियल विकास बोर्ड ने 14 से 15 दिसंबर 2014 तक हिमाचल प्रदेश के काँग्रा के उत्सव पालस में संपन्न आविष्कार प्रदर्शनी में भाग लिया। औद्योगिक अनुसंधान परिषद के महा निदेशक डॉ.पी.एस अहूजा ने प्रदर्शनी का उद्घाटन किया।

बोर्ड के स्टाल में नारियल के विविध मूल्य वर्धित उत्पादों के अलावा बोर्ड के प्रकाशन एवं पत्रिकाएँ भी प्रदर्शित की गईं। नारियल दूध पाउडर, नारियल आधारित शृंगार सामग्री, पैकटबंद डाब पानी आदि प्रदर्शित किए गए।

मुख्यातिथि डॉ. पी.एस अहूजा ने डॉ. एस.के शर्मा,आयुश, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के साथ बोर्ड के स्टाल का दौरा किया तथा उन्हें नारियल उत्पादों और बोर्ड की योजनाओं, उपलब्धियों और नीरा के उत्पादन और विपणन की स्थिति के बारे में संक्षिप्त में बताया गया।

बोर्ड के स्टाल में डॉ पी.एस. अहूजा

मेले में कई सरकारी संगठनों ने भाग लिया।

पिटेक्स-2014

नारियल विकास बोर्ड ने पंजाब के अमृतसर के रंजीत अवन्यू में 04 से 08 दिसंबर 2014 तक संपन्न पंजाब अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेले (पिटेक्स 2014) में भाग लिया। पंजाब सरकार, वस्त्र मंत्रालय, खाद्य प्रसंस्करण मंत्रालय तथा सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग मंत्रालय, नबार्ड, एनएसआईसी तथा अन्य संगठनों के समर्थन से प्रदर्शनी आयोजित की गई। भारत भर के विभिन्न केंद्रीय एवं राज्य सरकार के संगठनों सहित 350 से अधिक प्रदर्शकों ने पिटेक्स में भाग लिया। प्रदर्शनी का उद्घाटन पंजाब सरकार के माननीय पशुपालन एवं मात्स्यिकी, डेरी विकास, अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति तथा पिछड़े वर्ग के कल्याण मंत्री श्री एस. अजित गुल्जार सिंह राणिके ने किया।

पिटेक्स में बोर्ड की सहभागिता से नारियल के विभिन्न मूल्य वर्धित उत्पादों के स्वास्थ्य वर्धक गुणों के संबंध में लोगों में जागरूकता बढ़ी। स्टाल में नारियल की खूबियों और स्वास्थ्य वर्धक गुणों के संबंध में पोस्टर भी लगाए गए थे। बोर्ड के पदधारियों ने परिदर्शकों को नारियल और नारियल उत्पादों की खपत और प्रयोग के हितकारी गुणों के संबंध में विवरण दिया। बोर्ड के स्टाल में विभिन्न नारियल उत्पादों जैसेकि नारियल तेल, नारियल पानी सिरका, कोकोजल, नारियल से बने मिष्टान्न, नारियल चिप्स और नारियल आधारित सौंदर्यवर्धक उत्पादों के बिक्री काउंटर भी थे। पंजाब सरकार के माननीय उद्योग एवं वाणिज्य, तकनीकी शिक्षा तथा औद्योगिक प्रशिक्षण एवं संसदीय कार्य मंत्री श्री मदन मोहन मित्तल ने 8 दिसंबर 2014 को पिटेक्स 2014 के समापन समारोह की अध्यक्षता की।

बोर्ड के स्टाल में दर्शकगण

बाज़ार समीक्षा
दिसंबर 2014

मुख्यांश

- दिसंबर 2014 के दौरान देश के सभी प्रमुख बाज़ारों में पेषण खोपड़ा और नारियल तेल का भाव पिछले महीने के औसतन भाव से सात से तेरह प्रतिशत कम रहा।

- दिसंबर 2014 के दौरान नारियल तेल के अंतर्राष्ट्रीय भाव में मिश्रित रुख रहा।

देश के प्रमुख बाज़ारों में दिसंबर 2014 के दौरान नारियल, खोपड़ा तथा नारियल तेल के भाव में मिश्रित रुख रहा।

नारियल तेल

रिपोर्टाधीन महीने के दौरान कोच्ची बाज़ार में नारियल तेल का भाव प्रति क्विंटल 13100 रुपए पर खुला जो 9 दिसंबर 2014 को बढ़कर 13200 रुपए हुआ और पखवाड़े के अंत तक स्थिर रहा। तत्पश्चात बढ़ाव का रुख दर्शाकर 13800 रुपए पर बंद हुआ। रिपोर्टाधीन महीने के दौरान आलप्पुष़ा बाज़ार में नारियल तेल का भाव प्रति क्विंटल 14400 रुपए पर खुला और घटकर 5 तारीख तक 14000 रुपए हुआ और फिर घटाव का रुख दर्शाकर 23 को 12950 रुपए होकर उसी भाव पर बंद हुआ। कोष़िक्कोट बाज़ार में नारियल तेल का भाव जो प्रति क्विंटल 13200 रुपए पर खुला था बढ़ाव का रुख दर्शाकर 14400 रुपए हुआ और उसी भाव पर बंद हुआ। कोच्ची बाज़ार में मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 13337 रुपए और आलप्पुष़ा बाज़ार में प्रति क्विंटल 13363 रुपए था जो पिछले महीने के औसतन भाव से 8 से 9 प्रतिशत कम और पिछले वर्ष इसी महीने के औसतन भाव से 22 प्रतिशत अधिक था। कोष़िक्कोट बाज़ार का मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 13769 रुपए था जो पिछले महीने से 12 प्रतिशत कम और पिछले वर्ष इसी महीने के औसतन भाव से 18 प्रतिशत अधिक था। तमिलनाडु के कंगयम बाज़ार में मासिक औसतन भाव 12327 रुपए था जो पिछले महीने से 5 प्रतिशत कम और पिछले वर्ष इसी महीने के औसतन भाव से 19 प्रतिशत अधिक था।

पेषण खोपड़ा

कोच्ची बाज़ार में एफएक्यू खोपड़े का भाव प्रति क्विंटल 8760 रुपए पर खुला और उसके बाद मिश्रित रुख दर्शाकर 29 को 9200 रुपए होकर उसी भाव पर बंद हुआ। जबकि आलप्पुष़ा बाज़ार में राशि खोपड़े का मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 10050 रुपए पर खुला और उसी भाव पर स्थिर रहा। 9 तारीख को भाव घटकर 8850 रुपए हुआ और 22 तक स्थिर रहा। फिर भाव सुधरकर 9200 रुपए हुआ और स्थिर रहकर उसी भाव पर बंद हुआ। कोष़िक्कोट बाज़ार में भाव प्रति क्विंटल 8450 रुपए पर खुलकर पहले पखवाड़े में मिश्रित रुख दर्शाकर 16 को 9150 रुपए हुआ, तदनंतर सुधार का रुख दर्शाते हुए प्रति क्विंटल 9200 रुपए पर बंद हुआ। मासिक औसतन भाव कोची बाज़ार में प्रति क्विंटल 8929 रुपए, आलप्पुष़ा बाज़ार में 9265 रुपए तथा कोष़िक्कोट बाज़ार में प्रति क्विंटल 9266 रुपए रहा जो पिछले महीने से 9 प्रतिशत कम तथा पिछले वर्ष इसी महीने से 17 से 20 प्रतिशत अधिक था। तमिलनाडु के कंगयम बाज़ार में खोपड़े का मासिक औसतन भाव 8715 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा 5 प्रतिशत कम और पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 18 प्रतिशत अधिक था।

आन्ध्र प्रदेश के अंबाजीपेटा बाज़ार में पेषण खोपड़े का मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 7578 रुपए था। अंबाजीपेटा का मासिक औसतन भाव पिछले महीने की अपेक्षा 13 प्रतिशत कम तथा पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 21 प्रतिशत अधिक था।

खाद्य खोपड़ा

कोष़िक्कोट बाज़ार में राजापुर खोपड़े का मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 19615 रुपए था जो पिछले महीने के भाव से 5 प्रतिशत तथा पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 59 प्रतिशत अधिक था।

कोष़िक्कोट बाज़ार में गोल खोपड़े का मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 17691 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा 6 प्रतिशत और पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 58 प्रतिशत अधिक था।

कर्नाटक के तिप्तुर एपीएमसी बाज़ार में गोल खोपड़े का मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 14298 रुपए था जबकि अरसिकेरे बाज़ार में यह 13967 रुपए रहा जो पिछले वर्ष इसी महीने में 49 से 51 प्रतिशत अधिक था।

सूखा नारियल

कोष़िक्कोट बाज़ार में सूखे नारियल का मासिक औसतन भाव प्रति हज़ार फल 10974 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा नाममात्र अधिक तथा पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 45 प्रतिशत अधिक था।

नारियल

नेडुमंगाड़ बाज़ार में आंशिक रूप से छिलका निकाले गए नारियल का मासिक औसतन भाव प्रति हज़ार फल 14269 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा 12 प्रतिशत कम और पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 6 प्रतिशत अधिक था।

अरसिकेरे एपीएमसी बाज़ार में आंशिक रूप से छिलका निकाले गए नारियल का मासिक औसतन भाव प्रति हज़ार फल 10644 रुपए रिकार्ड किया गया जो पिछले महीने की अपेक्षा 6 प्रतिशत कम और पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 19 प्रतिशत अधिक था।

बंगलुरु एपीएमसी बाज़ार में आंशिक रूप से छिलका निकाले गए नारियल का मासिक औसतन भाव प्रति हज़ार फल 14674 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा 7 प्रतिशत कम और पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 47 प्रतिशत अधिक था।

मैंगलूर एपीएमसी बाज़ार में आंशिक रूप से छिलका निकाले गए ग्रेड 1 गुणवत्ता के नारियल का मासिक औसतन भाव प्रति हज़ार फल 16041 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा 12 प्रतिशत कम और पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 31 प्रतिशत अधिक था।

डाब

मद्दूर एपीएमसी बाज़ार में डाब का मासिक औसतन भाव प्रति हज़ार फल 10444 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा नाममात्र कम और पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 40 प्रतिशत अधिक था। कोच्ची बाज़ार में डाब का खुदरा भाव प्रति फल 30 से 35 रुपए के बीच रहा।

अंतर्राष्ट्रीय भाव

रोटरडैम में नारियल तेल का मासिक औसतन भाव प्रति मेट्रिक टन 1179 यूएस $ था, जो पिछले महीने की तुलना में 3 प्रतिशत अधिक और पिछले साल के इसी महीने की अपेक्षा 7 प्रतिशत कम था।

फिलिप्पींस में दिसंबर 2014 में नारियल तेल का देशी भाव प्रति मेट्रिक टन 1110 यूएस $ और इंडोनेशिया में 1169 यूएस $ था। दिसंबर 2014 के दौरान पाम तेल, पाम गरी तेल और सोयाबीन तेल का अंतर्राष्ट्रीय भाव प्रति मेट्रिक टन क्रमश: 690 यूएस $, 967 यूएस $ और 670 यूएस $ था।

जनवरी 2015

मुख्यांश

- जनवरी 2015 के दौरान देश के सभी प्रमुख बाज़ारों में पेषण खोपड़ा और नारियल तेल के भाव में स्थिरता का रुख रहा और पिछले महीने के औसतन भाव से अधिक रहा।
- जनवरी 2015 के दौरान नारियल तेल के अंतर्राष्ट्रीय भाव में भी स्थिरता का रुख रहा।

देश के प्रमुख बाज़ारों में जनवरी 2015 के दौरान नारियल, खोपड़ा तथा नारियल तेल के भाव में बढ़ाव का रुख रहा।

नारियल तेल

रिपोर्टाधीन महीने के दौरान कोच्ची बाज़ार में नारियल तेल का भाव प्रति क्विंटल 13800 रुपए पर खुला और 5 जनवरी को बढ़कर 14000 रुपए हुआ और बढ़ौत्तरी का रुख दर्शाकर प्रति क्विंटल 600 रुपए के कुल लाभ पर 14400 रुपए पर बंद हुआ। आलप्पुष़ा बाज़ार में नारियल तेल का भाव प्रति क्विंटल 12950 रुपए पर खुला और 19 तक स्थिर रहा। 20 को भाव बढ़कर 14900 रुपए तथा अगले दिन ही घटकर 13850 रुपए हुआ और उसके बाद नियमित बढ़ाव दर्शाकर प्रति क्विंटल कुल 950 रुपए के लाभ के साथ 13900 रुपए पर बंद हुआ। कोष़िक्कोट बाज़ार में नारियल तेल का भाव जो प्रति क्विंटल 14500 रुपए पर खुला था, बढ़ाव का रुख दर्शाकर 6 तारीख को 15000 रुपए हुआ और स्थिरता का रुख दर्शाकर 500 रुपए के कुल लाभ सहित उसी भाव पर बंद हुआ।

कोच्ची बाज़ार में मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 14238 रुपए और कोष़िक्कोट बाज़ार में 14942 रुपए था जो पिछले महीने के औसतन से 7 से 9 प्रतिशत और पिछले वर्ष इसी महीने से 24 से 30 प्रतिशत अधिक था। आलप्पुषा बाज़ार का मासिक औसतन भाव 13337 रुपए प्रति क्विंटल था जो पिछले महीने से नाममात्र कम और पिछले वर्ष इसी महीने के औसतन भाव से 22 प्रतिशत अधिक था। तमिलनाडु के कंगयम बाज़ार में मासिक औसतन भाव 13167 रुपए था जो पिछले महीने से 7 प्रतिशत और पिछले वर्ष इसी महीने से 25 प्रतिशत अधिक था।

खाद्य खोपड़ा

कोष़िक्कोट बाज़ार में गोल खोपड़े का मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 15696 रुपए था जो पिछले महीने के भाव से 11 प्रतिशत कम तथा पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 110 प्रतिशत अधिक था।

कर्नाटक के तिप्तुर एपीएमसी बाज़ार में गोल खोपड़े का मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 14556 रुपए था जो पिछले वर्ष इसी महीने के भाव से 101 प्रतिशत अधिक था और अरसिकेरे बाज़ार में यह 12682 रुपए था जो पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 76 प्रतिशत अधिक था। इस महीने के दौरान तिप्तुर एपीएमसी बाज़ार में गोल खोपड़े का आवक 32613 क्विंटल था जो पिछले महीने से 18 प्रतिशत और पिछले साल इसी महीने से 37 प्रतिशत कम था।

सूखा नारियल

कोष़िक्कोट बाज़ार में सूखे नारियल का मासिक औसतन भाव प्रति हज़ार फल 11425 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा नाममात्र अधिक तथा पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 90 प्रतिशत अधिक था।

नारियल

नेडुमंगाड़ बाज़ार में आंशिक रूप से छिलका निकाले गए नारियल का मासिक औसतन भाव प्रति हज़ार फल 15462 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा 8 प्रतिशत अधिक तथा पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 3 प्रतिशत अधिक था।

अरसिकेरे एपीएमसी बाज़ार में आंशिक रूप से छिलका निकाले गए नारियल का मासिक औसतन भाव प्रति हज़ार फल 9896 रुपए रिकार्ड किया गया था जो पिछले महीने की अपेक्षा 8 प्रतिशत कम और पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 25 प्रतिशत अधिक था।

बंगलुरु एपीएमसी बाज़ार में आंशिक रूप से छिलका निकाले गए नारियल का मासिक औसतन भाव प्रति हज़ार फल 15942 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा 9 प्रतिशत और पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 124 प्रतिशत अधिक था।

मैंगलूर एपीएमसी बाज़ार में आंशिक रूप से छिलका निकाले गए ग्रेड 1 गुणवत्ता के नारियल का मासिक औसतन भाव प्रति हज़ार फल 18625 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा 16 प्रतिशत और पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 69 प्रतिशत अधिक था।

डाब

मद्दूर एपीएमसी बाज़ार में डाब का मासिक औसतन भाव प्रति हज़ार फल 10077 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा 3 प्रतिशत कम और पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 61 प्रतिशत अधिक था।

कोच्ची बाज़ार में डाब का खुदरा भाव प्रति फल 30 से 35 रुपए के बीच रहा जबकि बैंगलूर में भाव प्रति फल 25 रुपए था।

अंतर्राष्ट्रीय भाव

फिलिप्पींस में (सी.आई.एफ. रोटरडैम)नारियल तेल का मासिक औसतन भाव प्रति मेट्रिक टन 1213 यूएस $ था, जो पिछले महीने की अपेक्षा नाममात्र अधिक और पिछले साल के इसी महीने की अपेक्षा थोड़ा कम था।

फिलिप्पींस में जनवरी 2015 में नारियल तेल का देशी भाव प्रति मेट्रिक टन 1090 यूएस $ और इंडोनेशिया में 1132 यूएस $ था। दिसंबर 2014 के दौरान पाम तेल, पाम गरी तेल और सोयाबीन तेल का अंतर्राष्ट्रीय भाव प्रति मेट्रिक टन क्रमश: 694 यूएस $,1030 यूएस $ और 715 यूएस $ था।

फरवरी 2015

मुख्यांश

- फरवरी 2015 के दौरान देश के सभी प्रमुख बाज़ारों में पेषण खोपड़ा और नारियल तेल के भाव में स्थिरता का रुख रहा।
- पिछले महीने की तुलना में फरवरी 2015 के दौरान नारियल तेल के अंतर्राष्ट्रीय भाव में थोड़ा बढाव का रुख रहा।

देश के प्रमुख बाज़ारों में फरवरी 2015 के दौरान नारियल, खोपड़ा तथा नारियल तेल के भाव में स्थिरता का रुख रहा।

नारियल तेल

रिपोर्टाधीन महीने के दौरान कोच्ची बाज़ार में नारियल तेल का भाव प्रति क्विंटल 14400 रुपए पर खुला और 10 फरवरी तक स्थिर रहा। उसके बाद घटाव का रुख दर्शाकर 13800 रुपए हुआ और प्रति क्विंटल 600 रुपए के कुल घाटे पर उसी भाव पर बंद हुआ। जबकि आलप्पुष़ा बाज़ार में नारियल तेल का भाव प्रति क्विंटल 13900 रुपए पर खुलकर महीने के अंत तक स्थिर रहा। कोष़िक्कोट बाज़ार में नारियल तेल का भाव जो प्रति क्विंटल 15000 रुपए पर खुला था 19 फरवरी तक स्थिर रहा और फिर घटाव का रुख दर्शाकर प्रति क्विंटल 700 रुपए के कुल घाटे पर 14300 रुपए पर बंद हुआ।

कोच्ची बाज़ार में मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 14188 रुपए था और कोष़िक्कोट बाज़ार में 14829 रुपए, जो पिछले महीने के औसतन से नाममात्र कम और पिछले वर्ष इसी महीने के भाव से क्रमशः 22 और 17 प्रतिशत अधिक था। आलप्पुषा बाज़ार का मासिक औसतन भाव 13900 रुपए प्रति क्विंटल था जो पिछले महीने से 4 प्रतिशत और पिछले वर्ष इसी महीने के औसन भाव से 19 प्रतिशत अधिक था। तमिलनाडु के कंगयम बाज़ार में मासिक औसतन भाव 13074 रुपए प्रति क्विंटल था जो पिछले महीने से नाममात्र कम और पिछले वर्ष इसी महीने से 16 प्रतिशत अधिक था।

पेषण खोपड़ा

कोच्ची बाज़ार में एफएक्यू खोपड़े का भाव 9900 रुपए पर खुला और 10 तारीख तक स्थिर रहा। उसके बाद घटाव का रुख दर्शाकर प्रति क्विंटल 600 रुपए के कुल घाटे पर 9300 रुपए पर बंद हुआ। जबकि आलप्पुषा बाज़ार में राशि खोपड़े का मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 9700 रुपए पर खुला और पूरा महीना स्थिर रहकर उसी भाव पर बंद हुआ। कोष़िक्कोट बाज़ार में ऑफिस पास खोपड़े का भाव प्रति क्विंटल 10000 रुपए पर खुलकर 9 वीं तारीख तक स्थिर रहा और घटाव का रुख दर्शाकर प्रति क्विंटल कुल 550 रुपए के कुल घाटे पर 9450 रुपए पर बंद हुआ। मासिक औसतन भाव कोची बाज़ार में प्रति क्विंटल 9688 रुपए और आलप्पुषा बाज़ार में प्रति क्विंटल 9700 रुपए रहा जो पिछले महीने से नाममात्र अधिक तथा पिछले वर्ष इसी महीने से क्रमशः 17 एवं 19 प्रतिशत अधिक था। कोष़िक्कोट बाज़ार में मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 9810 रुपए था जो पिछले महीने से नाममात्र कम और पिछले वर्ष इसी महीने से 16 प्रतिशत अधिक था। तमिलनाडु के कंगयम बाज़ार में पेषण खोपड़े का मासिक औसतन भाव 9242 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा नाममात्र कम और पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 16 प्रतिशत अधिक था। आन्ध्र प्रदेश के अंबाजीपेटा बाज़ार में पेषण खोपड़े का मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 9917 रुपए था। अंबाजीपेटा का मासिक औसतन भाव पिछले महीने की अपेक्षा 10 प्रतिशत तथा पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 48 प्रतिशत अधिक था।

खाद्य खोपड़ा

कोष़िक्कोट बाज़ार में गोल खोपड़े का मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 15290 रुपए था जो पिछले महीने के भाव से 12 प्रतिशत कम तथा पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 80 प्रतिशत अधिक था।

गोल खोपड़ा

कोष़िक्कोट बाज़ार में गोल खोपड़े का मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 13613 रुपए था जो पिछले महीने से 14 प्रतिशत कम और पिछले वर्ष इसी महीने से 72 प्रतिशत अधिक था।

कर्नाटक के तिप्तूर एपीएमसी बाज़ार में गोल खोपड़े का मासिक औसतन भाव प्रति क्विंटल 13561 रुपए था जो पिछले महीने से 7 प्रतिशत कम तथा पिछले वर्ष इसी महीने से 84 प्रतिशत अधिक था। कर्नाटक के अरसिकेरे एपीएमसी बाज़ार में गोल खोपड़े का मासिक औसतन भाव 12336 रुपए प्रति क्विंटल था जो पिछले महीने से नाममात्र कम तथा पिछले वर्ष इसी महीने से 61 प्रतिशत अधिक था।

सूखा नारियल

कोष़िक्कोट बाज़ार में सूखे नारियल का मासिक औसतन भाव प्रति हज़ार फल 11475 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा नाममात्र अधिक तथा पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 74 प्रतिशत अधिक था।

नारियल

नेडुमंगाड़ बाज़ार में आंशिक रूप से छिलका निकाले गए नारियल का मासिक औसतन भाव प्रति हज़ार फल 16000 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा 4 प्रतिशत और पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा नाममात्र अधिक था।

अरसिकेरे एपीएमसी बाज़ार में आंशिक रूप से छिलका निकाले गए नारियल का मासिक औसतन भाव प्रति हज़ार फल 13646 रुपए रिकार्ड किया गया था जो पिछले महीने की अपेक्षा 37 प्रतिशत और पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 16 प्रतिशत अधिक था।

बंगलुरु एपीएमसी बाज़ार में आंशिक रूप से छिलका निकाले गए नारियल का मासिक औसतन भाव प्रति हज़ार फल 15854 रुपए था जो महीने की अपेक्षा नाममात्र कम और पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 72 प्रतिशत अधिक था।

मैंगलूर एपीएमसी बाज़ार में आंशिक रूप से छिलका निकाले गए ग्रेड 1 गुणवत्ता के नारियल का मासिक औसतन भाव प्रति हज़ार फल 18000 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा 3 प्रतिशत कम और पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 58 प्रतिशत अधिक था।

डाब

मद्दूर एपीएमसी बाज़ार में डाब का मासिक औसतन भाव प्रति हज़ार फल 9750 रुपए था जो पिछले महीने की अपेक्षा 4 प्रतिशत कम और पिछले वर्ष इसी महीने की अपेक्षा 59 प्रतिशत अधिक था।

फरवरी में मेट्रोपोलिटन शहरों में रिपोर्ट किया गया डाब का भाव निम्न प्रकार है:

शहर	प्रति फल दर
नई दिल्ली	25 रु. से 30 रु.
कोलकात्ता	20 रु. से 30 रु.
मुंबई	35 रु. से 40 रु.
चेन्नई	30 रु. से 35 रु.
पुणे	35 रु. से 40 रु.
हैदराबाद	25 रु. से 30 रु.
अहमदाबाद	25 रु. से 30 रु.
बंगलूरु	25 रु. से 30 रु.
कोची	30 रु. से 35 रु.

अंतर्राष्ट्रीय

फिलिप्पींस (सीआईएफ रोटरडैम) में नारियल तेल का अंतर्राष्ट्रीय मासिक औसतन भाव प्रति मेट्रिक टन 1220 यूएस $ था जो पिछले महीने से नाममात्र अधिक और पिछले वर्ष इसी महीने से नाममात्र कम था।

फिलिप्पींस में फरवरी 2015 महीने में नारियल तेल का घरेलू भाव प्रति मेट्रिक टन 1066 यूएस $ तथा इंडोनेश्या में भाव प्रति मेट्रिक टन 1122 यूएस $ था। फरवरी 2015 में पाम तेल, पाम गरी तेल तथा सोया बीन तेल का अंतर्राष्ट्रीय भाव प्रति मेट्रिक टन क्रमशः 670 यूएस $, 1060 यूएस $ तथा 689 यूएस $ था।

नारियल प्रकाशन

		आजीवन शुल्क	*वार्षिक शुल्क*
पत्रिकाएं			
इंडियन नालिकेरा जर्नल	(मलयालम मासिक)	1000 रु.	40 रु.
इंडियन कोकनट जर्नल	(अंग्रेज़ी मासिक)	1600 रु.	60 रु.
" " " (पुस्तकालय एवं संस्था)	" "	5000 रु.	200 रु.
भारतीय नारियल पत्रिका	(हिन्दी त्रैमासिक)	1000 रु.	40 रु.
भारतीय तेंगु पत्रिके	(कन्नड त्रैमासिक)	1000 रु.	40 रु.
इंदिया तेन्नै इदष़	(तमिल त्रैमासिक)	1000 रु.	40 रु.
अन्य प्रकाशन		*मूल्य*	**डाक-व्यय*
एरियोफिड़ माइट-इश्यूस एंड स्ट्रेटजीस	(अंग्रेज़ी)	160 रु.	36 रु.
प्रोस्पेक्ट्स ऑफ कोकोनट बेइस्ड क्रोप्पिंग सिस्टम इन वेस्ट बंगाल	(अंग्रेज़ी)	20 रु.	36 रु.
प्रोब्लेम्स एंड प्रोस्पेक्ट्स ऑफ कोकोनट इन नोर्थ-ईस्टर्न रीजियन ऑफ इंडिया	(अंग्रेज़ी)	200 रु.	36 रु.
कोकोनट प्रोडक्ट्स	(अंग्रेज़ी)	100 रु.	36 रु.
इंडियन स्पाइसेस-प्रोडक्शन एंड यूटिलाइसेशन	(अंग्रेज़ी)	200 रु.	68 रु.
इंटेन्सिफाइड कोकोनट प्रोडक्शन विथ फ्लोरिकल्चर	(अंग्रेज़ी)	150 रु.	52 रु.
टेंडर कोकोनट	(अंग्रेज़ी)	50 रु.	36 रु.
रिस्क मैनेजमेंट एंड कपासिटी बिल्डिंग फोर कोकोनट-खोपरा एन्टरप्राइसस इन इंडिया	(अंग्रेज़ी)	50 रु.	36 रु.
ग्लोबल कोकोनट इंडस्ट्री - आउटलुक फोर दि फ्यूचर	(अंग्रेज़ी)	200 रु.	52 रु.
रेकमेंडेड पैकेजिंग फोर कोकोनट फुड प्रोडक्ट्स	(अंग्रेज़ी)	1000 रु.	36 रु.
रेकमेंडेड पैकेजिंग फोर कोकोनट हैन्डीक्राफ्ट्स	(अंग्रेज़ी)	500 रु.	36 रु.
प्रोसेसिंग एंड वाल्यु एडीशन इन कोकोनट	(अंग्रेज़ी)	200 रु.	36 रु.
नारियल विकास के विविध आयाम (पुस्तकालयों एवं संस्थाओं के लिए 100 रु. + डाक-व्यय)	(हिन्दी)	50 रु.	36 रु.
बागवानी शब्दावली	(हिन्दी)	50 रु.	36 रु.
शब्द भारती - बागवानी शब्दावली	(हिन्दी)	125 रु.	52 रु.

प्रकाशनों का मूल्य डाक-व्यय के साथ मनी-आर्डर या डीडी (एरणाकुलम में देय) द्वारा निम्नलिखित पते पर भेजें।

** रजिस्टर्ड डाक*

अध्यक्ष, नारियल विकास बोर्ड, केरा भवन, कोची - 682 011

बाज़ार भाव

दिसंबर 2014

तारीख	नारियल तेल				पेषण खोपड़ा					खाद्य खोपड़ा	गोल खोपड़ा			सूखा नारियल	नारियल	आंशिक रूप से छिलका निकाला नारियल			
	(रु. / क्वि.)													(रु./1000 फल)					
	कोची	आलप्पुषा	कोषिक्कोट	कंगयम	कोची (एफएक्यू)	आलप्पुषा (राशि खोपड़ा)	कोषिक्कोट	कंगयम	अंबाजिपेटा	कोषिक्कोट	कोषिक्कोट	तिप्पूर	बैंगलूर	अरसिकेरे	कोषिक्कोट	नेडुमंगाड	अरसिकेरे	बैंगलूर	मैंगलूर (ग्रेड-1)
7.12.14	13083	14267	13283	11856	8804	10050	8592	8100	7033	19450	17500	13400	10000	13546	10600	15333	10000	14700	16100
14.12.14	13183	13317	13533	12167	8824	9050	9100	8450	7167	19342	17375	14211	9583	13650	10933	14000	10000	15167	16033
21.12.14	13350	13100	13708	12400	8923	8850	9333	8733	7450	20017	18083	14934	9500	13609	11167	14000	11400	15000	16000
28.12.14	13500	12975	14233	12778	9022	9142	9717	9300	8200	19708	17900	14619	10750	14659	11158	14000	12000	14167	16000
31.12.14	13800	12950	14400	12544	9210	9200	9825	9267	8500	19500	17500	14335	11000	14773	11050	14000	9000	14000	16100
औसत	13383	13322	13832	12349	8957	9258	9313	8770	7670	19603	17672	14300	10167	14047	10982	14267	10480	14607	16047

जनवरी 2015

तारीख	नारियल तेल				पेषण खोपड़ा					खाद्य खोपड़ा	गोल खोपड़ा			सूखा नारियल	नारियल	आंशिक रूप से छिलका निकाला नारियल			
	(रु. / क्वि.)													(रु./1000 फल)					
	कोची	आलप्पुषा	कोषिक्कोट	कंगयम	कोची (एफएक्यू)	आलप्पुषा (राशि खोपड़ा)	कोषिक्कोट	कंगयम	अंबाजिपेटा	कोषिक्कोट	कोषिक्कोट	तिप्पूर	बैंगलूर	अरसिकेरे	कोषिक्कोट	नेडुमंगाड	अरसिकेरे	बैंगलूर	मैंगलूर (ग्रेड-1)
4.01.15	13800	12950	14567	12789	9210	9200	9867	9333	8500	18833	17000	14754	12333	12548	11350	14000	10515	15667	18500
11.01.15	14183	12950	14967	13022	9458	9200	10075	9550	8617	17167	15417	14084	12500	12510	11383	15250	10225	15167	19008
18.01.15	14292	12950	15000	13167	9528	9200	10038	9583	9200	17033	15417	14250	12333	12184	11367	15500	11000	16000	19033
25.01.15	14333	13875	15000	13289	9683	9700	9963	9600	9100	17267	15767	14750	13417	13580	11500	15917	7733	16667	18417
31.01.15	14390	13850	15000	13420	9880	9670	9940	9460	9580	17000	15500	15140	12500	12587	11500	16000	10400	16100	18000
औसत	14200	13315	14907	13137	9552	9394	9976	9505	8999	17460	15820	14596	12617	12682	11420	15333	9975	15920	18592

फरवरी 2015

तारीख	नारियल तेल				पेषण खोपड़ा					खाद्य खोपड़ा	गोल खोपड़ा			सूखा नारियल	नारियल	आंशिक रूप से छिलका निकाला नारियल			
	(रु. / क्वि.)													(रु./1000 फल)					
	कोची	आलप्पुषा	कोषिक्कोट	कंगयम	कोची (एफएक्यू)	आलप्पुषा (राशि खोपड़ा)	कोषिक्कोट	कंगयम	अंबाजिपेटा	कोषिक्कोट	कोषिक्कोट	तिप्पूर	बैंगलूर	अरसिकेरे	कोषिक्कोट	नेडुमंगाड	अरसिकेरे	बैंगलूर	मैंगलूर (ग्रेड-1)
8.02.15	14400	13900	15000	13528	9900	9700	10000	9400	10500	16683	15033	14943	13083	13246	11533	16000	14000	16500	18000
15.02.15	14333	13900	15000	13211	9833	9700	9925	9333	10000	15583	13917	13767	14500	12322	11483	16000	12833	15250	18000
22.02.15	14200	13900	14933	12972	9700	9700	9850	9217	9167	15175	13333	13251	15000	11693	11500	16000	13250	15167	18000
28.02.15	13817	13900	14383	12578	9317	9700	9467	9017	10000	13717	12167	12283	14775	12083	11383	16000	14500	16500	18000
औसत	14188	13900	14829	13074	9688	9700	9810	9242	9917	15290	13613	13561	14340	12336	11475	16000	13646	15854	18000

स्रोत

कोची : कोचिन तेल व्यापारी संघ व वाणिज्य मंडल, कोची-2
कोषिक्कोट : 'मातृभूमि'
आलप्पुषा : 'मलयाला मनोरमा'
अरसिकेरे : ए पी एम सी, अरसिकेरे
कोषिक्कोट बाज़ार में 'ऑफीस पास' खोपड़े का और आलप्पुषा बाज़ार में 'राशि' खोपड़े का बताया गया भाव
सौ.न. : सौदा नहीं

Neera
स्वागत है
ईश्वर के अपने देश में
चख ले
ईश्वर का
अपना
स्वास्थ्य पेय
नारियल विकास बोर्ड
(कृषि मंत्रालय, भारत सरकार)
Coconut Development Board
[MINISTRY OF AGRICULTURE, GOVERNMENT OF INDIA]
Kera Bhavan, SRVHS Road, Kochi - 682 011. India
www.coconutboard.gov.in

नारियल विकास बोर्ड के कार्यालय

मुख्यालय

श्री टी.के. जोस भाप्रसे
अध्यक्ष : 0484 2375216
श्री सुगत घोष
मुख्य नारियल विकास अधिकारी : 2375999
डॉ. ए. के. नन्दी
सचिव : 2377737
कार्यालय पीएबीएक्स : 2376265, 2376553, 2377266, 2377267

नारियल विकास बोर्ड
(कृषि मंत्रालय, भारत सरकार)
पो.बो.सं. 1021, केरा भवन
कोची - 682 011, केरल, भारत

ग्राम्स : KERABOARD
फैक्स : 91 484 2377902
ई-मेइल : kochi.cdb@gov.in
वेबसाइट : www.coconutboard.gov.in

क्षेत्रीय कार्यालय

कर्नाटक
डॉ.टी.आई.मैथ्युकुट्टी
निदेशक, क्षेत्रीय कार्यालय सह प्रौद्योगिकी केन्द्र
नारियल विकास बोर्ड, हूलिमावु, बन्नेरघट्टा रोड
बंगलुरु - 560076. दू.भा. : 080-26593750, 26593743
फैक्स : 080-26594768
ई-मेइल : coconut_dev@dataone.in
cdbroblr@gmail.com

असम
श्री राजीव पी.जॉर्ज
निदेशक, क्षेत्रीय कार्यालय
नारियल विकास बोर्ड
उत्तर पूर्वी राज्य कार्यालय/प्रशिक्षण/प्रौद्योगिकी केन्द्र,
हाउसफेड काम्प्लेक्स, (छठा तल), बेलटोला रोड,
लास्ट गेट, दिसपुर, गुवाहटी - 781 006
दू.भा. : (0361) 2220632, फैक्स : 0361-2229794
ई-मेइल : cdbassam@gmail.com

तमिलनाडु
श्री लुम्हार ओबेद
निदेशक, क्षेत्रीय कार्यालय,
नारियल विकास बोर्ड
पहला तल, प्लॉट नं. 1579, ए-1 प्लॉट, जे. ब्लॉक,
9वीं गली, 15 वाँ मेइन रोड, अन्नानगर,
चेन्नई - 600 040
दू.भा. : (044) 26164048 फैक्स : (044) 26164047
ई-मेइल : cdbroc@gmail.com

राज्य केन्द्र

अन्डमान व निकोबार द्वीप समूह
उप निदेशक
हाउस एम बी सं. 54, गुरुद्वारा लेइन,
पोर्ट ब्लेयर-744 101, दक्षिण अन्डमान
अन्डमान व निकोबार द्वीप समूह
दू.भा. : (03192)-233918
ई-मेइल : cdban@rediffmail.com

तेलंगाना
उप निदेशक, राज्य केन्द्र
नारियल विकास बोर्ड
प्लॉट सं. 49, डॉ. सुब्बा राव कॉलॉनी
पिकेट, सिकंदराबाद - 500 026
टेलीफैक्स : (040) 27807303
ई-मेइल : cdbhyd@gmail.com

बिहार
सहायक निदेशक, नारियल विकास बोर्ड
राज्य केन्द्र, 160-न्यू पाटलीपुत्र कॉलोनी,
पटना - 800013, बिहार
टेलिफोन: 0612 2272742
ई मेल: cdbpatna@gmail.com

ओड़िशा
श्री ई अरावषी
उप निदेशक, राज्य केन्द्र, नारियल विकास बोर्ड
पित्तापल्ली, कुमरबस्ता डाक
खुरदा जिला - 752 055
दू.भा. : 06755-211505
ई-मेइल : cdborissa@gmail.com

महाराष्ट्र
श्री राजीव भूषण प्रसाद
उप निदेशक, राज्य केन्द्र, नारियल विकास बोर्ड
रोड नं - 16, ज़ेड़ लेइन, वाग्ले एस्टेट,
ठाणे, महाराष्ट्र - 400 604
दू.भा. : (022) 25834566
ई-मेइल : cdbthane@gmail.com

पश्चिम बंगाल
श्री खोकन देबनाथ
उप निदेशक, राज्य केन्द्र,
नारियल विकास बोर्ड
बी.जे. - 108 - सेक्टर - 11
साल्ट लेक, कोलकात्ता - 700 091
दू.भा. : (033) 23599674
फैक्स : 91 33-23599674
ई-मेइल : cdbkolkata@gmail.com

बाज़ार विकास सह सूचना केन्द्र, नई दिल्ली

डॉ. जी.आर. सिंह
निदेशक, नारियल विकास बोर्ड
बाज़ार विकास सह सूचना केन्द्र, 120, हरगोबिन्द एनक्लेव,
नई दिल्ली - 110 092, दू.भा.: 011-22377805,
ई-मेइल : cdbmdic@sify.com ;
cdbmdic@gmail.com

क्षेत्र कार्यालय, तिरुवनंतपुरम

क्षेत्र कार्यालय, नारियल विकास बोर्ड,
एग्रिकल्चरल अर्बन हॉलसेल मार्केट
(वॅर्ल्ड मार्केट) आनयरा पी.ओ.
तिरुवनंतपुरम - 695 029
दूरभाष, फैक्स : 0471-2741006
ई-मेइल : cdbtvm@yahoo.co.in

सी आई टी, आलुवा

श्री श्रीकुमार पोतुवाल, प्रक्रमण इंजीनियर
नारियल विकास बोर्ड, प्रौद्योगिकी विकास केन्द्र, कीनपुरम,
दक्षिण वाष़क्कुलम, आलुवा पिन-683105,
दूरभाष:0484 2679680,
ई-मेइल : citaluva@gmail.com, cdbtdc@gmail.com

प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म

आंध्र प्रदेश
सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म
नारियल विकास बोर्ड, वेगिवाडा (गाँव) मकान संख्या 688,
तडिकलापुडी (द्वारा), पश्चिम गोदावरी (जिला),
आंध्र प्रदेश - 534 452
दू.भा. : (08812) 212359, ई-मेइल : dspfmvgda@gmail.com

असम
फार्म प्रबंधक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म
नारियल विकास बोर्ड, अभयपुरी, बोंगैगांव,
असम - 783 384, टेलि. फैक्स : (03664) 210025
ई-मेइल : cdbdspabhayapuri@gmail.com

बिहार
सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म
नारियल विकास बोर्ड, सिंहेश्वर (डाक),
मधेपुरा जिला, बिहार - 852 128. दू.भा. : (06476) 283015.
ई-मेइल : dspfms@gmail.com

कर्नाटक
फार्म प्रबंधक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म
नारियल विकास बोर्ड, पुरा गाँव, लोकसारा (डाक),
माँड्या जिला, कर्नाटक-571 403 दू.भा.: (08232) 234059
ई-मेइल : dspfarmmandya@gmail.com

केरल
सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म
नारियल विकास बोर्ड, नेर्यमंगलम, पिन - 686 693
दू.भा. : (0485) 2554240
ई-मेइल : cdbnrlm@gmail.com

छत्तीसगढ़
सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म
नारियल विकास बोर्ड, कोंडागाँव - 494 226, बस्तर जिला
दू.भा. : (07786) 242443, फैक्स : (07786) 242443
ई-मेइल : cdbkgn1987@gmail.com

ओड़िशा
सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म
नारियल विकास बोर्ड, पित्तापल्ली,
कुमरबस्ता डाक, खुरदा जिला - 752055,
दू.भा. : (06755) 212505, (06755) 320287
ई-मेइल : cdborissa@gmail.com

महाराष्ट्र
सहायक निदेशक
नारियल विकास बोर्ड, प्रबीउ फार्म, पालघर,
149, अम्बेदकर नगर, डापोली, सतपति एसओ,
पालघर-401405, महाराष्ट्र, दू.भा.:02525 216364
ई-मेइल : dspfarmpalghar@gmail.com

तमिलनाडु
फार्म प्रबंधक
प्रबीउ फार्म, नारियल विकास बोर्ड
धली, तिरुमूर्ति नगर डाक, उडुमलपेट,तमिलनाडु-642112
दू.भा.:(0425) 2290289,
ई-मेल: dspfarmdhali@gmail.com

Neera

नीरा फ्रूट जैम

नारियल पेड़ के अनखुले पुष्पगुच्छ से उतारती नीरा कुदरती स्वास्थ्य पेय है। यह शक्कर, खनिज, धातु, विटामिन आदि का भरपूर भंडार है। नीरा का ग्लाइसिमिक इंडेक्स बहुत कम है, ईख से उत्पन्न शक्कर से लगभग आधा (जी आई-35)। नीरा और नीरा के उत्पाद मधुमेह रोगियों के लिए उपयोगी उत्पन्न हैं।

नीरा का मूल्य वर्धन करके सिरप, शहद, गुड़ आदि विभिन्न उत्पाद बनाए जा सकते हैं और इन सभी का उपयोग शक्कर के बदले हमारे पारंपरिक और गैर पारंपरिक पकवानों में किया जा सकता है। नीरा फ्रूट जैम का नुसखा आज़माएँ

सामग्रियाँ

नीरा शहद	- 1 कि.ग्रा.
सिट्रिक एसिड	- 0.02 प्रतिशत
पेक्टिन	- 0.5 प्रतिशत
मिक्सड फ्रूट पल्प	- 500 ग्रा.
अदरक रस	- 0.1 प्रतिशत
फुड कलर	- 15 मिली

बनाने की विधि

नीरा शहद में सिट्रिक एसिड, पेक्टिन आदि मिलाकर 80 सेंटीग्रेड पर गरम करें। इसमें मिक्सड फ्रूट पल्प डालकर जैम की तरह गाढ़ा बनने तक चलाते रहें। अदरक रस, फुड कलर आदि मिलाकर अच्छी तरह फिर से चलाकर आंच बंद कर दें। गरम रहते ही काँच के बोतलों में डालकर ठंडा होने दें।

नारियल विकास बोर्ड
(कृषि मंत्रालय, भारत सरकार)
Coconut Development Board
[MINISTRY OF AGRICULTURE, GOVERNMENT OF INDIA]
Kera bhavan, SRVHS Road, Kochi - 682 011, India
www.coconutboard.gov.in